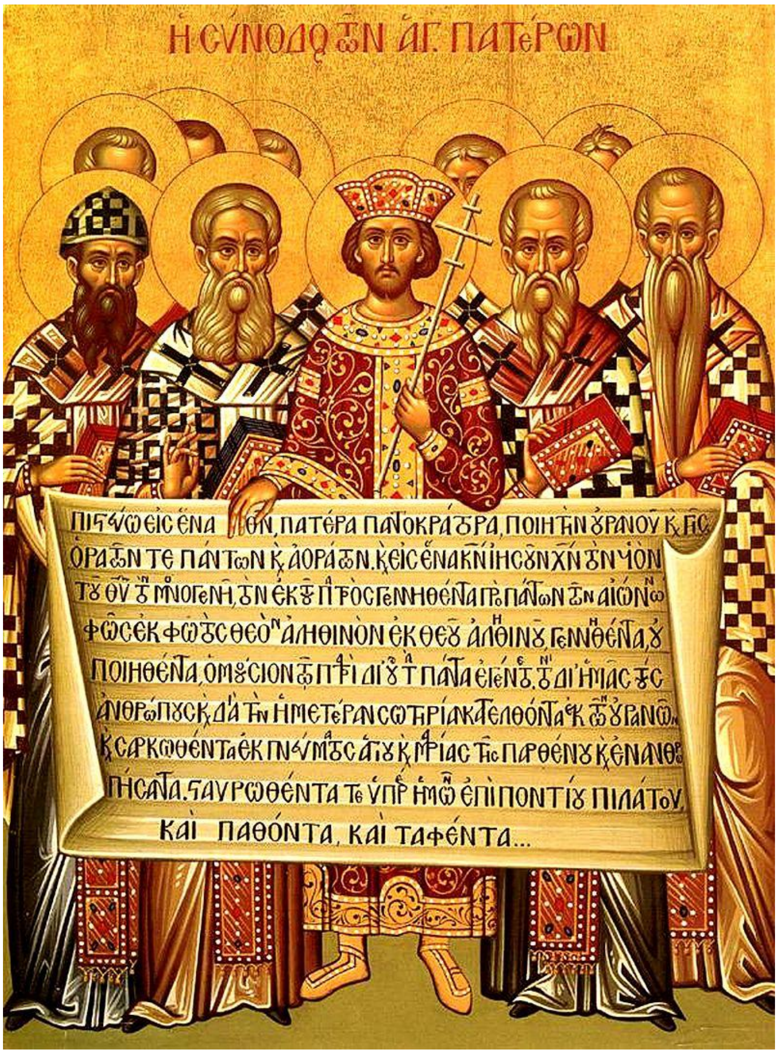

मॉड्यूल 3

मसीही सिद्धांत का विकास

विषय वस्तु

मॉड्यूल 3 परिचय	3
मॉड्यूल 3 बिब्लियोग्राफी	4
मॉड्यूल 3 असेसमेंट	5
सत्र 1 तैयारी	**7**
सत्र 1 हम त्रिएकता में परमेश्वर की आराधना करते हैं	10
सत्र 2 सत्र 2 के लिए तैयारी का काम	**12**
सत्र 2 मसीह आ गया है	15
सत्र 3 सत्र 3 के लिए तैयारी का काम	19
सत्र 3 मसीह मर गया है	23
सत्र 4 सत्र 4 के लिए तैयारी का काम	31
सत्र 4 मसीह जी उठा है	33
सत्र 5 सत्र 5 के लिए तैयारी का काम	37
सत्र 5 मसीह फिर आएंगे	40
सत्र 6 सत्र 6 की तैयारी का काम	43
सत्र 6 हम पवित्र आत्मा में विश्वास करते हैं	46
सत्र 7 सत्र 7 की तैयारी का काम	49
सत्र 7 यूहन्ना की गवाही	54
सत्र 8 सत्र 8 की तैयारी का काम	57
सत्र 8 शुरुआती चर्च की वृद्धि	62
सत्र 9 सत्र 9 की तैयारी का काम	64
सत्र 9 पौलुस, एक जीवित सुसमाचार	66
सत्र 10 सत्र 10 की तैयारी का काम	70
सत्र 10 विश्वास, चर्च और दुनिया	71
परिशिष्ट 1 ट्रिनिटी की इमेज	76
परिशिष्ट 2 रूबलेव आइकन और मेडिटेशन	78
परिशिष्ट 3 ड्रेन से "न्यू टेस्टामेंट का इंट्रोडक्शन"	81
परिशिष्ट 4 स्टीफन ट्रैविस "पॉल के लेटर्स" पर	85
परिशिष्ट 5 वाल्टर होलेनवेगर "कोरिंथ में विवाद" पर।	88
परिशिष्ट 6 तीन पंथ	91
परिशिष्ट 7 जोआचिम जेरेमियास और आर.टी. फ्रांस "अब्बा" पर	95
शब्दावली	98

मॉड्यूल तीनः मसीही सिद्धांत का विकास

परिचय

अब हम नये नियम पर आते हैं लेकिन हम पुराने नियम को पीछे नहीं छोड़ते। सबसे पहले, पुराना नियम की किताबें यीशु और उनके अनुयायियों की पहली तीन पीढ़ियों के लिए धर्मग्रंथ थीं। नये नियम पर आखिरकार सन् 397 में कैनन में कैथेज की धर्मसभा में सहमति बनी। दूसरा, पुराना और नया नियम अलग–अलग कहानियाँ नहीं हैं बल्कि परमेश्वर और उनके लोगों की लगातार खुलती कहानी हैं।

मॉड्यूल 3 के उद्देश्यः

- नये नियम के इतिहास की जानकारी प्राप्त करना
- नये नियम के खास धार्मिक विषयों से परिचय कराना
- खास मसीही सिद्धांतों की गहरी समझ हासिल करना।
- नये नियम और आज के बीच सम्बंध बनाना, सीख को शिष्यपन, सेवकाई और आराधना में लागू करना

हमारे अपेक्षित परिणाम

मॉड्यूल के आखिर में प्रतिभागीयों से यह दिखाने की उम्मीद की जाएगीः

- राज्य के बारे में नये नियम के सिद्धांतक विषय की समझ
- नये नियम को पढ़ने के अलग–अलग तरीकों की समझ – जिसमें कल्पनात्मक ढंग शामिल हैं
- नये नियम के अध्ययन से जुड़ी शब्दावली की समझ
- त्रिएकता से जुड़े मसीही धर्म के बुनियादी सिद्धांत की समझ
- यह समझना कि यह सब आज की दुनिया में परमेश्वर के बुलाहट को हमारे द्वारा सुने जाने को कैसे प्रभावित करता है।

मॉड्यूल के आखिर में प्रतिभागी यह कर पाएंगेः

- नये नियम के स्रोत्रों को आज के संर्दभ और शिष्यता, सेवकाई और आराधना में अपने विकास के लिए लागू करना
- यह समझना कि नया नियम मसीही सिद्धांत के विकास से कैसे जुड़ा है

हमें उम्मीद है कि अब तक आप समूह में कुछ अगुवाई साझा कर पाएंगे, जैसे कि शुरूआती या समापन प्रार्थना, समूह के लिए कुछ खोज करना, कोर्स रूपरेखा अनुसार बातचीत में अगुवाई करना। आपको यह समीक्षा करना मददगार लग सकता है कि आप एक समूह के तौर पर एक साथ कैसे काम कर रहे हैं। इसमें वह सब कुछ शामिल करें जो आप चाहते हैं कि आपके अध्यापक, आयोजकों को फीडबैक दें।

मॉड्यूल तीनः पुस्तक सूची

कार्य के लिए पुस्तकें:

एडम पी, *लिविंग द ट्रिनिटी,* दूसरा एडिशन (कैम्ब्रिजः ग्रोव बुक्स, 2000)

बैरो एस, बार्टले जे (एडिटर्स) *कंज्यूमिंग पैशनः व्हाई द किलिंग ऑफ जीसस रियली मैटर्स* (लंदन, डीएलटीः 2005)

ब्लिथ एम, *सेलिब्रेटिंग द ट्रिनिटीः फेथ, वर्शिप एंड मिशन* (कैम्ब्रिजः ग्रोव बुक्स, 2003)

बॉकम्युएल एम (एडिटर) *इंट्रोड्यूसिंग द न्यू टेस्टामेंटः द रियल रीजन फॉर द ईयर 2000.* (कैम्ब्रिजः ग्रोव, 1999)

ड्रेन जे *इंट्रोड्यूसिंग द न्यू टेस्टामेंट* (ऑक्सफोर्डः लायन, 1986 / 1999)

फी जी, स्टुअर्ट डी *हाउ टू रीड द बाइबल फॉर ऑल इट्स वर्थ* दूसरा एडिशन (लंदनःएसयू,1994)

मैकग्राथ ए, *क्रिश्चियन थियोलॉजीः एन इंट्रोडक्शन* चौथा एडिशन (ऑक्सफोर्ड) ब्लैकवेल, 2007

रोहर आर *द डिवाइन डांस* (लंदन एसपीसीके, 2016)

सैंडर्स ईपी पॉलः *ए वेरी शॉर्ट इंट्रोडक्शन* (ऑक्सफोर्ड ओयूपी)

राइट एनटी *द चैलेंज ऑफ जीसस* (लंदनः एसपीसीके, 2000)

परमेश्वर की बुलाहट के बारे में आपकी सोच को बेहतर बनाने वाली पुस्तकें:

मैग्डलेन एम *वोकेशनः एक्सप्लोरिंग कॉल एंड आइडेंटिटी* (ग्रोव कैम्ब्रिज 2008)

टॉरी एम *डाइवर्स गिफ्ट्स* (लंदन कैंटरबरी प्रेस 2006) (सभी),

अन्य उपयोगी पुस्तकें :

शार्पेंटियर ई *हाउ टू रीड द न्यू टेस्टामेंट* (लंदनः एससीएम, 1981)

बार्टन जे, मुडिमन जे (एडिटर्स), *द ऑक्सफोर्ड बाइबल कमेंट्री* (ऑक्सफोर्डः ओयूपी, 2001)

मोरिसी ए *बियॉन्ड द गुड सैमेरिटन* (कॉन्टिनम, लंदन, 2007)

मॉड्यूल तीनः कार्य

ये मॉड्यूल 3 के लिए वैकल्पिक कार्य कार्य हैं, जिनमें से आपको सिर्फ एक को चुनना है।

भूलें नहीं! इन सभी कार्यों के लिए आपको विषय के बारे में पढ़ना होगा और कई किताबों से संदर्भ लेना होगा (सिर्फ, उदाहरण के लिए, जॉन ड्रेन से नहीं)। अध्यापक मदद कर सकते हैं कि कौन सी किताबें सबसे उचित रहेंगी। याद रखें कि आप मॉड्यूल के लर्निंग आउटकम को पूरा करने के लिए लिखना चाहते हैं।

1. पैरिश पत्रिका से लेखः द फोर गॉस्पल

स्थानिय चर्च पत्रिका के लिए चारों सुसमाचारों पर एक लेख लिखें – हमें उम्मीद है कि यह पत्रिका में प्रकाशित हो सकता है, शायद कम से कम कुछ हद तक आपके चर्च सदस्यों को कोर्स का विज्ञापन करने के लिए!

i) अपने लेख में, प्रत्येक सुसमाचार के लिए व्याख्या के साथ चित्र वाली छवि बनायें।
(प्रत्येक चित्र को 80 शब्दों के बराबर गिनें)

ii) चारों सुसमाचारों में आई मुश्किलों और फायदों को रेखांकित करें

कृपया चारों सुसमाचारों से होने के **फायदों** और सुसमाचार के बीच के अंतर को आप कैसे समझना चाहते हैं, इस पर खास ज़ोर दें।

कार्य के लिए कुल शब्दों की गिनती 2,000(या 10% ±) होना चाहिए, जिसमें लगभग 600 (i) और बाकी (ii) हों।

2. आज के लिए एक दृष्टांत

जॉन ड्रेन ने अपनी किताब *'इंट्रोड्यूसिंग द न्यू टेस्टामेंट'* के अध्याय 7 में दावा किया है कि खास तौर पर दृष्टांत हर समय के लिए शिक्षा देते हैं।

> *"यीशु के दृष्टांत, धर्म पर प्रवचनों से अधिक कला के काम जैसे हैं और सभी कलाओं की तरह उनके किरदारों और स्थितियों में भी एक यूनिवर्सल क्वालिटी है जिसे कोई भी समझ सकता है, क्योंकि वे इंसान होने के बुनियादी अर्थ से जुड़े हैं।"*

आज के संदर्भ के लिए यीशु के एक दृष्टांत को फिर से लिखें (या किसी सही फॉर्मेट में पेश करें)– जो एक स्थानिय चर्च या देश या दुनिया का कोई बड़ा संदर्भ हो सकता है। (500 शब्दों तक)(या 10% ±) बताएं कि यह खास दृष्टांत ही क्यों चुना गया, आपको लगता है कि असली संदर्भ में इसका क्या मतलब था और आपने नए संदर्भ के लिए इसका क्या मतलब निकाला। (1,500 शब्दों तक) (या 10% ±)

3. किंगडम (राज्य)

नीचे दिए गए पर 2,000 (या 10% ±) शब्द लिखें:

यीशु ने राज्य को कैसे समझा और आज शिष्यता और सेवा के लिए इसका क्या महत्व है?

4. मसीही सिद्धांत

टॉम राइट की किताब *'फॉलोइंग जीसस'* से यह पढ़ें:

> "आप इस दुनिया को यीशु के सुसमाचार से कैसे संबोधित करेंगे? आप इस पर सिर्फ सच्चा सिद्धांत नहीं थोप सकते। आप या तो लोगों को मसल देंगे या उन्हें भगा देंगे। यह असल में कोई बुरी बात नहीं है, क्योंकि मिशन और प्रचार करने का मतलब कभी भी लोगों के सिर पर सिद्धांत थोपना नहीं था। वे कहीं अधिक सम्पूर्ण तरीके से काम करते हैं: अभ्यास, चिन्ह और कहानी से..... मुझे सेंट फ्रांसिस के अपने चेलों को दिए गए प्रवचन याद आते हैं जब उन्होंने उन्हें यह कह कर भेजा था: 'हर मुमकिन तरीके से सुसमाचार का प्रचार करो', उन्होंने कहा, 'और अगर यह सच में ज़रूरी हो तो तुम शब्दों का भी इस्तेमाल कर सकते हो'। जब मैं, अब तक की सबसे महान बैलेरिना में से एक के बारे में सोचता हूँ, तो मुझे चिन्हों वाले अभ्यास की शब्दों से आगे जाने की ताकत भी याद आती है। उसके एक शानदार प्रदर्शन के बाद, किसी ने उससे पूछने की हिम्मत की कि डांस का क्या मतलब है। उसका जवाब साधारण था, और जब हम पोस्टमॉडर्न दुनिया में मिशन के बारे में सोचते हैं तो यह बहुत कुछ कहता है। 'काश मैं यह कह पाती', उसने कहा, 'मुझे यह डांस करने की ज़रूरत नहीं पड़ती।''

मसीही धर्म के किसी एक हिस्से को चुनें और बताएं और *ध्यान* से सोचें कि आप इस शिक्षा को अपनी शिष्यता या सेवा के जीवन में कैसे दिखा सकते हैं। इस हिस्से में टॉम राइट का नज़रिया आपके लिए कितना मददगार है?

5. ध्यान

दुनिया के किसी दूसरे हिस्से में किसी सम्बंधित डायसस या पार्टनर चर्च से आने वाले मसीहीयों के समूह के लिए "द ब्रिटिश क्राइस्ट" पर एक ध्यान तैयार करें, जिसमें हर एक की कम से कम एक छवि का इस्तेमाल करें:

क) यीशु का जन्म या जीवन और सेवा

ख) यीशु की मृत्यु

ग) यीशु का फिर से जी उठना या स्वर्ग में जाना

ज़रूरी नहीं है कि छवि ब्रिटिश कलाकारों की हों, लेकिन उनमें कुछ ऐसा होना चाहिए जो यह दिखाए कि एक ब्रिटिश व्यक्ति के तौर पर यीशु पर विश्वास करने और उनके पीछे चलने का क्या मतलब है।

छवि और ध्यान दोनों के लिए कुछ शब्द बताएं (500 शब्द तक,. या ±10%)

अपनी छवि चुनें और बताएं कि वे "द ब्रिटिश क्राइस्ट" से कैसे जुड़ती हैं (1,500 शब्द तक,. या ±10%)

मॉड्यूल तीन मसीही धर्म का विकास सिद्धांत

सत्र 1 हम त्रिएकता में एक परमेश्वर की आराधना करते हैं

तैयारी

विश्वास की यात्रा कोर्स में आपका फिर से स्वागत है। उम्मीद है कि आपने ईस्टर ब्रेक का मज़ा लिया होगा। हम इस टर्म की शुरुआत त्रिएकता पर सोच–विचार करके करते हैं। त्रिएकता मसीही धर्म की शिक्षा, सिद्धांत और आराधना का केंद्र है। जब हम 'परमेश्वर' शब्द का इस्तेमाल करते हैं, तो मसीही लोग हमेशा त्रिएकता से तीन जनों का मतलब निकालते हैं।

त्रिएकता के बारे में बताना बहुत मुश्किल है क्योंकि हम परमेश्वर के रहस्य को समझने के लिए सिर्फ इंसानी भाषा और तस्वीरों का इस्तेमाल कर सकते हैं और हमारी बातें हमेशा कम पड़ जाएंगी। शायद समस्या यह भी है कि त्रिएकता कोई 'चीज़' नहीं बल्कि एक रिश्ता है और रिश्तों को समझाना हमेशा मुश्किल होता है।

कुछ पल इस बारे में सोचें कि आप त्रिएकता को कैसे देखते हैं, आपने कौन से उदाहरण सुने हैं? अपने विचार या तस्वीरें बॉक्स में लिख लें।

कल्पना और त्रिएकता

परशिष्ठ 1 में त्रिएकता की छवि देखें।

उनमें आपको क्या मददगार लगता है और उनकी क्या सीमायें हैं?

द सर्कल डांस

पुराने चर्च के फादर्स और मदर्स ने त्रिएक परमेश्वर को एक 'डिवाइन सर्कल डांस' या ग्रीक में पेरिकोरेसिस (कोरियोग्राफी शब्द का मूल) बताया। रिचर्ड रोहर इसे इस तरह बताते हैं

> 'परमेश्वर में जो कुछ भी चल रहा है वह एक बहाव है, एक कट्टर सम्बंध है, तीनों के बीच एक सही सहसम्बंध है, प्यार का एक सर्कल डांस'(द डिवाइन डांस–रोहर और मोरेल, पृष्ठ 7)
> रोहर आगे बताते हैं कि परमेश्वर के अंदर यह रिश्ता सृष्टि से कैसे जुड़ा है। 'हर ज़रूरी आवेग, भविष्य की ओर हर ताकत, हर रचनात्मक वेग, हर प्यार भरा उभार, सुंदरता की ओर हर दौड़, सच्चाई की ओर हर दौड़, साधारण अच्छाई के सामने हर खुशी....इंसानियत और धरती के लिए, पूरी तरह से और पवित्रता के लिए हर छोटी–बड़ी इच्छा, त्रिएक परमेश्वर का हमेशा बहने वाला जीवन है.... यह त्रिएक परमेश्वर आपको हर जगह और हर समय परमेश्वर के साथ आसानी से रहने देता है, आपको प्रेरित करता है।' (द डिवाइन डांस, रोहर और मोरेल, पृष्ठ 37–38)

इस बारे में सोचने के लिए थोड़ा समय निकालें कि इसका आपके लिए क्या मतलब है।

'में' शब्द पर सोच–विचार

यूहन्ना के सुसमाचार से ये कुछ आयतें पढ़ें:

यूहन्ना 6:54–57	यूहन्ना 7:37–39
यूहन्ना 10:30	यूहन्ना 10:37–38
यूहन्ना 14:20	यूहन्ना 15:4
यूहन्ना 16:13–15	यूहन्ना 17:20–26

- ये आयतें आपको पिता, पुत्र और आत्मा के रिश्ते के बारे में क्या बताती हैं?
- ये आयतें त्रिएकता के साथ हमारे रिश्ते के बारे में क्या बताती हैं?

भाषा और अनुभव

अपने विश्वास की यात्रा के बारे में सोचें।

- त्रिएकता के तीन जनों में से आपको किससे जुड़ना सबसे आसान लगा?
- कौन सा ज़्यादा मुश्किल रहा होगा?
- सोचें कि ऐसा क्यों हो सकता है?

यीशु हमेशा अरामी शब्द "अब्बा" (मरकुस 14:36) का इस्तेमाल करके परमेश्वर को पिता कहते हैं। (आप परिशिष्ट 7 में आर्टिकल देख सकते हैं,। परमेश्वर को इस तरह बुलाने का यह तरीका शुरुआती चर्च में भी जारी रहा (रोमियों 8:15, गलातियों 4:6)। यह एक ऐसा शब्द है जो बताता है कि एक प्यार करने वाला बेटा अपने पिता के प्रति कैसा सम्मान दिखाता होगा।

हालांकि, इससे हमारे लिए दो दिक्कतें खड़ी होती हैं। एक तो लिंग और परमेश्वर का सवाल है और दूसरा यह कि 'पिता' शब्द हमारे इंसानी पिता के अनुभव से जुड़ा हो सकता है। रुककर सोचें कि आप परमेश्वर को पिता के तौर पर अपनी समझ में क्या मानते हैं – आपके लिए क्या मददगार नहीं हो सकता है?

लिंग – चर्च ने हमेशा यह माना है कि परमेश्वर को 'पुरुष' या 'महिला' के तौर पर लिंग में बांटा नहीं गया है (कनिंघम, 1998), लेकिन इंग्लिश में हमारे पास बिना लिंग वाले एकवचन पुरुषवाचक सर्वनाम नहीं हैं, इसलिए हमें परमेश्वर को 'वह', या 'वे' कहने का चुनाव करना होगा (बहूवचन सर्वनाम परमेश्वर के 'एक होने' के दूसरे मुद्दे भी लाता है)। इतना कहना काफी है कि हमें अपनी भाषा के इस्तेमाल में सावधान रहने की ज़रूरत है और इस बारे में ध्यान से सोचना चाहिए कि हम परमेश्वर के स्त्री गुणों और बाइबिल में परमेश्वर के लिए दी गई स्त्री गुण या बिना लिंग वाली काल्पनिकता को कैसे दिखाते और अनुभव करते हैं।

आराधना में त्रिएकता

अपनी भक्ति जीवन और अपने चर्च की आराधना के बारे में सोचें – क्या त्रिएकता के हर व्यक्ति पर बराबर ज़ोर दिया गया है? आपने क्या देखा है?

मॉड्यूल तीनः मसीही सिद्धांत का विकास

सत्र 1 हम त्रिएकता में एक परमेश्वर की आराधना करते हैं

उद्देश्यः पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा के रूप में त्रिएकता को समझने के तरीकों पर विचार करना,
चर्चा करना कि त्रिएकता हमारी ज़िंदगी में परमेश्वर में विश्वास को कैसे दिखाती है
मिलकर सेवा करने की अपनी समझ को बढ़ाना

परिचय 10 मिनट

पिछली बार मिलने के बाद से आपने जो ''महिमा की झलक'' को महसूस किया है, उसे एक–दूसरे को बताएं।

शुरुआती प्रार्थना 15 मिनट

परिशिष्ट 2 में दिए गए रूबलेव के आइकन पर आधारित विचार

तैयारी पर विचार करना 20 मिनट

त्रिएक परमेश्वर की छवि में बनाया गया 30 मिनट

शायद हम इस विचार से परिचित हैं कि मनुषयों को परमेश्वर की छवि में बनाया गया है। आइए, अब यह पता लगाएं कि परमेश्वर की त्रिएक छवि में बनाए जाने का क्या मतलब हो सकता है।

अपनी किताब *''दीज़ थ्री आर वन''* में, डेविड एस. कनिंघम देखते हैं कि त्रिएकता में हमारा विश्वास हमारी ज़िंदगी को कैसे आकार दे सकता है। कनिंघम त्रिएकता के आपसी रिश्ते को *एक–दूसरे के अंदर रहने* और *'भागीदारी'* वाला रिश्ता बताते हैं। उनके मन में हिस्सा लेने का मतलब है, जहाँ हम किसी चीज़ में नहीं बल्कि किसी व्यक्ति में हिस्सा लेते हैं, जैसे, किसी दूसरे के दुख में हिस्सा लेना या किसी की ज़िंदगी में ''भागीदार बनना''। भागीदार बनना एक ऐसे गहरे रिश्ते की ओर इशारा करता है जिसके बारे में यह नहीं कहा जा सकता कि रिश्ते में शामिल लोग एक–दूसरे के बिना मौजूद हैं।

त्रिएकता को इस तरह देखने से

'...हमें अपने रिश्तों के स्वभाव के बारे में सोचने में मदद मिल सकती है। आखिर, ऐसे रिश्ते अपने आप में अच्छे नहीं होते; वे मामूली, झूठे, गलत या इससे भी बुरे हो सकते हैं। आज के समय में, खासकर, रिश्ते अक्सर अपनी सुविधा के लिए बनाए जाते हैं। इसके उलट, त्रिएकता का सिद्धांत हमें खुद को ऐसे "लोगों" के तौर पर नहीं समझने के लिए बढ़ावा देता है जो रिश्तों में आना चाहें (या न चाहें), बल्कि एक–दूसरे के अंदर रहने वाले और बसे हुए के तौर पर जाने, और इस हद तक कि – तीनों एक–दूसरे में समाये हुए–पूरी तरह से स्वतंत्र या आज़ाद होने के सभी दावे खत्म कर देते हैं।'

डेविड एस.कनिंघम, *''दीज़ थ्री आर वन''*: द प्रैक्टिस ऑफ ट्रिनिटेरियन थियोलॉजी, (लंदनः ब्लैकवेल्स, 1999)।

तो यह कहा जा सकता है कि अगर त्रिएकता में से किसी एक व्यक्ति को हटा दिया जाए (या शायद उसे गंभीरता से नहीं लिया जाए) तो जो बचेगा वह बाकी दो व्यक्ति भी नहीं होंगे। आप बाकी दो के बिना एक को नहीं पा सकते!

समूहिक कार्य

नीचे दिए गए सवालों पर चर्चा करें

1) 'आपसी मेलजोल और भागीदारी' के इस सोच का क्या मतलब है?

2) डेविड कनिंघम वेस्टर्न कल्चर को 'एंटी–ट्रिनिटेरियन' मानते हैं क्योंकि यह व्यक्तिवाद और इस विचार को बढ़ावा देता है कि हम अपनी ज़िंदगी और अपने माहौल को नियंत्रित कर सकते हैं। हमारे लिए इसमें क्या चुनौतियाँ हैं?

विश्राम

यह मायने रखता है कि हम साथ कैसे रहते हैं 30 मिनट

हम पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा के आपसी रिश्ते की प्रकृति और अलग–अलग मसीहीओं के त्रिएकता के साथ रिश्ते के बारे में विचार कर रहे हैं। लेकिन, पूरी सृष्टि को परमेश्वर के स्वभाव को दिखाने के लिए बुलाया गया है और चर्च को, इस टूटी हुई दुनिया के लिए त्रिएक के रूप में और संदेशवाहक बनने के लिए बुलाया गया है।

समूहिक कार्य

त्रिएकता की ज़िंदगी के बारे में क्या कहना है?

1) आराधना करने वाले समुदायों में हमारे साथ रहने का स्वभाव।

2) चर्च में लीडरशिप।

3) अपनी ज़िंदगी के अलग–अलग हिस्सों में अच्छी तरह से जीने के लिए हमारी प्रतिक्रिया।

समापन प्रार्थना 5 मिनट

मॉड्यूल तीनः मसीही धर्म की शिक्षाओं का विकास

सत्र 2 मसीह आ गया है

तैयारी

अब हम नये नियम की दुनिया को देख रहे हैं जिसमें यीशु का जन्म हुआ था। घटनाओं के स्थान शायद पुराने नियम जैसे ही हों, लेकिन इतिहास और संस्कृति आगे बढ़ चुकी है। यह इलाका पर्शिया, ग्रीस और रोम के बड़े साम्राज्यों के नियंत्रण में आ गया है। अब रोमन प्रांत फिलिस्तीन में, यह इलाका कई अलग–अलग समुदायों का घर है, जो अलग–अलग नस्ल, संस्कृति और धर्म की पृष्ठभूमि से हैं। अधिकतर लोगों को अपना काम करने के लिए कई भाषाओं पर पकड़ की ज़रूरत होती होगी।

नये नियम का परिचय

नये नियम पर एक नज़र डालें

- कौन से हिस्से आपको जाने–पहचाने हैं; कौन से हिस्से कम जाने–पहचाने हैं?

बाइबल प्रोजेक्ट वीडियो देखें – न्यू टेस्टामेंट ओवरव्यू

नये नियम में लोग

यीशु का जन्म गलील के उत्तरी इलाके में एक यहूदी समुदाय में हुआ था, पास में यूनानियों द्वारा बसाए गए शहर और दूसरे गैर–यहूदी शहर और गाँव थे। गलील और यरूशलेम के बीच सामरिया था। सामरी लोग उन लोगों के वंशज थे जिन्हें इजराइल के पतन के बाद असीरियन और मूल यहूदी निवासियों ने जबरदस्ती वहाँ बसाया था। वे यहूदी धर्म के मिले–जुले रूप को दूसरे धार्मिक रीति–रिवाजों के साथ मानते थे। उनके यहूदी पड़ोसी उन्हें धर्म से भटके हुए मानते थे और उन्हें उनके साथ घुलने–मिलने से मना किया गया था।

रोमन साम्राज्य राजनीतिक नियंत्रण में था और कई बार अधिकारी सहनशील थे और यहूदी लोगों को कुछ हद तक आज़ादी देते थे और कभी उन्होंने दूसरे धर्मों के रीति–रिवाजों पर रोक लगा दी और यहूदी और बाद में ईसाई उपासकों पर जुल्म किया। रोमनों ने आखिरकार 70वीं सदी में यरूशलेम के मंदिर को नष्ट कर दिया।

यहूदी समुदाय में कई प्रभावशाली समूह थे। **फरीसी** (जिसका मतलब है अलग हुए लोग) उनको यकीन था कि देश के सामने जो परेशानियाँ हैं, वे लेवी के कानून का पालन न करने की वजह से हैं और इसलिए उन्होंने सावधानी से पालन करके जवाब दिया और धार्मिक शुद्धता सुनिश्चित करने के लिए नियमों का एक मुश्किल सेट बनाया। फरीसी, कानून की इस सख्त व्याख्या को दूसरों पर थोपने की कोशिश करते थे।

कानून के अध्यापक/शास्त्री विद्वानों का एक समूह था जो धर्मग्रंथों को संभालकर रखते थे, उनकी शिक्षाओं को बढ़ाते थे और विश्वास सिखाते थे। **सदूकी** ज़्यादातर सबसे ताकतवर परिवारों से आए लोग थे। वे धार्मिक पवित्रता से ज़्यादा राजनीतिक ताकत बनाए रखने पर ध्यान देते थे। वे **सैनहेड्रिन** – 71

सदस्यों वाली काउंसिल जो यहूदियों के सुप्रीम कोर्ट के तौर पर काम करती थी—में सबसे अहम समूह था।

याजक/लेवी, हारून के वंशज थे और मंदिर में पूजा के लिए जिम्मेदार थे। महायाजक को हर साल नियुक्त किया जाता था। **जीलॉट्स** एक ऐसा ग्रुप था जो यहूदी देश को उसके रोमन शासकों से आज़ाद कराना चाहता था, उन्होंने सिविल नाफरमानी और बाद में सीधे विद्रोह के काम किए।

नये नियम के समय में आम सांस्कृतिक नियम

महत्व और पहचान – किसी व्यक्ति की पहचान उसके परिवार की हैसियत और खानदान, उसके व्यापार, उसके धार्मिक जुड़ाव से आती थी। अगर किसी खास समूह के किसी एक व्यक्ति को शर्मिंदा किया जाता था तो इसका असर बाकी सभी सदस्यों की हैसियत पर पड़ता था। इस तरह की विभिन्नता वाले समाज में, अलग पहचान का एहसास और समाजिक समूहों में मेलजोल बहुत कम था।

लैंगिक भूमिकायें – ज़्यादातर औरतों की ज़िंदगी घर तक ही सीमित थी और वे पानी लाने या खाना खरीदने के लिए बाहर जाती थीं। वे आमतौर पर ये काम समूह में करती थीं – अकेली औरतें खास तौर पर कमज़ोर होती थीं। औरतें आमतौर पर कम उम्र में शादी कर लेती थीं और उन्हें अपने पति की जगीर माना जाता था। बच्चे होना, औरत की इज्ज़त के लिए बहुत जरूरी था, खासकर लड़के। बिना बच्चे या विधवा होना शर्म की बात थी। कुछ औरतों को पैसे की आज़ादी थी लेकिन कुछ अमीर औरतों ने यीशु और बाद में पौलुस की सेवकाई को सहयोग दिया। मर्द किसी भी वजह से अपनी पत्नियों को तलाक दे सकते थे। औरतों को समाजिक क्षेत्र में कार्य करने की इजाज़त नहीं थी और उनकी बात को सही नहीं माना जा सकता था। उस समय बहुत कम औरतें पढ़ी–लिखी थीं। ज़्यादातर मर्द उम्मीद करते थे कि वे अपने खानदानी काम ही करें – कई यहूदी लड़कों ने सिनेगॉग में कुछ हद तक पढ़ाई की होगी।

गुलामी

उस समय गुलामी एक मानी हुई सच्चाई थी। लोग गुलामी में पैदा हो सकते थे या लड़ाई की लूट के तौर पर गुलाम बनाए जा सकते थे। अगर उनके पास गुज़ारे का कोई और ज़रिया नहीं होता था तो कुछ लोग खुद को या अपने बच्चों को गुलामी में बेच देते थे। गुलामी से आज़ादी या तो अपने मालिक से इनाम के तौर पर या खरीदकर मिल सकती थी। कुछ गुलामों को उनके काम के पैसे मिलते थे और उन्हें जिम्मेदारी वाले काम मिलते थे, जिससे उन्हें कुछ हद तक इज्ज़त मिलती थी, लेकिन कई गुलामों को बहुत बुरे हालात झेलने पड़ते थे और उन्हें कम कीमत या अहमियत का नहीं माना जाता था।

नये नियम की ज्योग्राफी

फिलिस्तीन एक छोटा सा देश है, गलील के सागर से येरुशलम की दूरी लगभग 90 मील है। सबसे पुराने चर्चों के नक्शे से पता चलता है कि वे ज़्यादातर वहीं हैं जहाँ यहूदी काम और व्यापार के लिए या जुल्म की वजह से (जिसे यहूदी डायस्पोरा कहा जाता है) गए थे – ज़्यादातर ये बस्तियाँ पश्चिम में रोमन साम्राज्य के अंदर थीं, लेकिन कुछ पूरब में पर्शिया और भारत और कुछ दक्षिण में अफ्रीका चले गए।

उनकी दुनिया और हमारी दुनिया

आपने जो पढ़ा है, उससे यहाँ उनकी दुनिया और हमारी दुनिया के बीच के अंतर और समानताओं पर ध्यान दें।

क्या अलग है:	**क्या समान है:**

यूटयूब पर ए हिस्ट्री आफ क्रिस्चीएनीटी 2009 सीजन 1 एपीसोड 1 **देखें**

मॉड्यूल तीनः मसीही धर्म के सिद्धांतों का विकास

सत्र 2 मसीह आ गया है

उद्देश्यः मसीही धर्म के इस विश्वास की जांच करना कि यीशु इंसान के रूप में परमेश्वर थे
यीशु के परमेश्वर होने के धार्मिक दावे की रोशनी में इस विश्वास की चुनौती पर विचार करना।

शुरुआती आराधना 10 मिनट

वचन में रहना

- यूहन्ना 1:1—18 पढ़ें
- शांत हो कर देखें कि आपका ध्यान कहाँ जाता है, आप क्या देखते हैं, यह आपको क्या सोचने और महसूस करने पर मजबूर करता है?
- अपने विचार अपने पड़ोसियों के साथ सांझा करें
- कौन सी साधारण बातें सामने आई हैं?

मिलकर करें

सर्वशक्तिमान परमेश्वर, आपने हमें अपना बेटा दिया है
ताकि वह हमारा इंसानी स्वभाव अपने ऊपर ले ले।
कृपा करें कि हम, जो दोबारा जन्मे हैं और अनुग्रह से आपके बच्चे बने हैं,
पवित्र आत्मा से रोज़ नए बनें, हमारे प्रभु यीशु मसीह के ज़रिए,
जो ज़िंदा हैं और पवित्र आत्मा की एकता में आपके साथ राज करते हैं,
वर्तमान और सर्वदा के लिए एक परमेश्वर। आमीन

तैयारी पर सोच—विचार 15 मिनट

यीशु कौन हैं? 10 मिनट

हम उसी शुरुआती बिन्दू से शुरू करते हैं जहाँ पहले मसीहीयों ने यह सवाल पूछा था: यीशु कौन है? एक फिलप चार्ट पर इस सवाल के अपने शुरुआती जवाब लिखें।

देखिए कि क्या लिखा गया है— दो अलग—अलग रंग के मार्कर का इस्तेमाल करके उन पर निशान लगाएँ जो ऐतिहासिक यीशु से जुड़े हैं (उन्होंने क्या कहा और क्या किया) और उन पर जो यीशु के स्वभाव को दिखाते हैं (वह कौन हैं)।

यीशु की पहचान के अध्ययन को क्रिस्टोलॉजी के नाम से जाना जाता है और इसी पर हम आगे बात करेंगे।

यीशुः मनुष्य और परमेश्वर 20 मिनट

एक और सवाल यह हैः यीशु परमेश्वर और मनुष्य दोनों कैसे हो सकते हैं?

समूह कार्य

नीचे दिए गए दो सवालों पर चर्चा करेंः

- यीशु के सिर्फ (या ज़्यादातर) परमेश्वर होने में क्या दिक्कत है?
- यीशु के सिर्फ (या ज़्यादातर) मनुष्य होने में क्या दिक्कत है?

जब पूरा समूह एकत्रित होता है, तो छोटे समूहों के विचार साझा करें

विश्राम

कहानी सुनाना 20 मिनट

लूका 24:13–35 पढ़ें

पिछले शुक्रवार की डरावनी घटनाओं ने यीशु के बारे में इन शिष्यों के विचारों को अंदर तक हिला दिया था। तो वे यीशु से क्या उम्मीद कर रहे थे और इम्माउस के मार्ग पर उनकी निराशा पर यीशु ने क्या जवाब दिया?

टॉम राइट ने अपनी किताब ''द चैलेंज ऑफ जीसस'' के इस हिस्से में इस पर कुछ रोशनी डाली है। इस हिस्से को पूरा पढ़ें और इसके बारे में सोचने के लिए कुछ पल निकालें।

> *अजनबी (यीशु), की प्रतिक्रिया यह थी कि वह बाइबल की कहानी को अलग ढंग से सुनाए....हाँ, शास्त्रों को वास्तव में एक ऐसी कथा के रूप में पढ़ा जाना था जो अपने चरम पर पहुँचती है। लेकिन नहीं, यह कहानी कभी इस्राएल के अपने शत्रुओं को हराने और दुनिया के शक्तिशाली स्वामी बनने के बारे में नहीं थी। यह हमेशा उस कहानी के बारे में थी कि सृष्टिकर्ता परमेश्वर, इस्राएल का, वाचा का परमेश्वर, अपनी उद्धार की योजनाओं को इस्राएल के दुःख और उसकी न्यायसंगत विजय के माध्यम से दुनिया में जन्म देगा.....इस्राएल परमेश्वर की प्रतिज्ञाओं का वाहक था, फिर ध्यान शेष बचे हुए लोगों पर गया जो इस्राएल की नियति के वाहक बने, और अंततः ध्यान इस्राएल के सच्चे राजा पर गया जिस पर वह कार्य आ गया जो अंततः शेष लोगों का भी कार्य था। वह (यीशु) , सेवक–जाति के लिए सेवक रहा। उसने इस्राएल और संसार के लिए वह किया जो इस्राएल और संसार अपने लिए नहीं कर सकते थे।*
>
> एन.टी. राइट, *द चैलेंज ऑफ जीसस,* (लंदनःएसपीसीके, 2000)।

चर्चा के लिए

- यीशु पुराने नियम के बारे में शिष्यों की समझ और मसीहा से जुड़ी कुछ उम्मीदों को सही कर रहे थे। उन्होंने इजराइल की स्थिति को कैसे समझा था और उन्होंने यीशु से क्या भूमिका निभाने की उम्मीद की थी?
- यीशु, मसीहा के बारे में क्या मतलब और समझ दे रहे हैं?
- कहानी में कहा गया है कि रोटी तोड़ने पर 'उन्हें तुरंत पता चल गया कि वह कौन थे'। आपको क्या लगता है कि इस समय शिष्यों ने यीशु को क्या समझा होगा?

यीशु के ईश्वरत्व में विश्वास की ओर बढ़ना — 20 मिनट

क्या इसी समय शिष्यों को एहसास हुआ कि यीशु 'परमेश्वर थे', चाहे इसका मतलब कुछ भी हो? टॉम राइट कुछ सोचने पर मजबूर करने वाले विचार देते हैं कि कैसे पहले मसीही, यीशु को मनुष्य से ज़्यादा समझने लगे थेः

> *''बार–बार यह सुझाव सुनने को मिलता है कि पुनरुत्थान किसी तरह यीशु की दिव्यता को सिद्ध करता है....यहूदी पुनरुत्थान की अपेक्षा में ऐसा कुछ नहीं था जिससे कोई यह निष्कर्ष निकाले कि मृत्यु के बाद नए प्रकार के जीवन में फिर जीवित हुए व्यक्ति को किसी अर्थ में दिव्य माना जाए......नहींः पुनरुत्थान ने निराश शिष्यों को इस सत्य के प्रति जागृत किया कि यीशु वास्तव में मसीहा थे, और इससे उन्होंने यह निष्कर्ष निकाला कि उनकी मृत्यु, जो देखने में लज्जाजनक पराजय लगती थी, वास्तव में सभी बुराई की शक्तियों पर अजीब लेकिन गौरवशाली विजय थी, और इन विश्वासों के संयोजन से वे आगे बढ़े और घोषणा की कि चूँकि यीशु ने वह महान उद्धार का कार्य पूरा किया जो केवल याहवेह, निर्गमन के परमेश्वर का व्यक्तिगत कार्य हो सकता था, इसलिए यीशु को किसी प्रकार इस्राएल के एकमात्र परमेश्वर की व्यक्तिगत अभिव्यक्ति, उसके स्वरूप के रूप में पहचाना जाना चाहिए।*

समूह कार्य

नीचे दिए गए सवालों पर चर्चा करेंः

- इस नज़रिए पर आपकी क्या प्रतिक्रिया है कि पहले शिष्य यीशु के परमेश्वर होने पर कैसे यकीन करने लगे?
- अगर हम यह न मानें कि यीशु पूरी तरह से परमेश्वर और पूरी तरह से मनुष्य दोनों थे, तो इससे क्या फर्क पड़ेगा?
- क्राइस्टोलॉजी मुश्किल है और इसमें आसानी से ऐसी बातों में बह जाना जिसे 'हेरेसी' माना जा सकता है। जब हम थियोलॉजी 'पिच' की 'टचलाइन' पर पहुँचते हैं तो क्या होता है? सीटी कौन बजाता है (और 'रेड कार्ड' भी दिखाता है)? हमारे कुछ विचार इस श्रेणी में भी आ सकते हैं – अगर ऐसा है तो हमें क्या करना चाहिए?

सोच–विचार 'यीशु कौन है?' — 15 मिनट

फिलिप्पियों 2:5–11 पढ़ें

कुछ समय चुपचाप परमेश्वर के पुत्र के प्रति अपने उत्तर पर सोचें, जो हमारे बीच रहने आया है।

इस सत्र से एक खास बात एक–दूसरे के साथ साझा करें।

चार लोग बारी–बारी से इब्रानियों 1:1–3 की हर आयत पढ़ सकते हैं।

> पूर्व युग में परमेश्वर ने बापदादों से थोड़ा–थोड़ा करके और भाँति–भाँति से भविष्यद्वक्ताओं के द्वारा बातें कर,
>
> इन अन्तिम दिनों में हम से पुत्र के द्वारा बातें कीं, जिसे उसने सारी वस्तुओं का वारिस ठहराया और उसी के द्वारा उसने सारी सृष्टि की रचना की है।
>
> वह उसकी महिमा का प्रकाश और उसके तत्व की छाप है, और सब वस्तुओं को अपनी सामथ्र्य के वचन से संभालता है।
>
> वह पापों को धोकर ऊँचे स्थानों पर महामहिमन् के दाहिने जा बैठा,
>
> आमीन।

आगे देखें: अगली तैयारी 5 मिनट

मॉड्यूल तीनः मसीही सिद्धांत का विकास

सत्र 3: मसीह की मृत्यु

तैयारी

यीशु की मृत्यु और उसकी व्याख्याएँ

क्रूस पर चढ़ाए जाने और पुनरुत्थान का रहस्य मसीही धर्म का केंद्र है। उस समय क्रूस पर चढ़ाना रोमनों द्वारा आम अपराधियों, विशेषकर दासों, के लिए इस्तेमाल की जाने वाली एक लज्जाजनक और अत्यंत पीड़ादायक मृत्यु–दंड की विधि थी। केवल पुनरुत्थान के प्रकाश में ही शिष्यों को यीशु की मृत्यु को एक दुखद असफलता से अलग किसी और रूप में देखना पड़ा।

नए नियम में हम देखते हैं कि पहले मसीहीओं ने यीशु की मृत्यु को परमेश्वर का वह साधन माना जिसके द्वारा संसार की समस्याओं–बुराई और मृत्यु–का सामना किया गया और उसकी प्रजा को उद्धार प्रदान किया गया। इस अद्भुत घटनाक्रम को समझने के लिए शिष्यों ने अपने यहूदी विश्वास और समकालीन संस्कृति से चित्र, रूपक और प्रतीक लिए। पहली शताब्दी के यहूदी धर्म में मंदिर में बलिदान प्रणाली ही वह साधन थी जो लोगों को परमेश्वर से मेल–मिलाप कराती थी। इस प्रकार, यीशु को बलिदानी मेमना माना गया जिसका जीवन – रक्त मुक्ति, मेल–मिलाप और धर्मी ठहराए जाने का साधन बना।

नया नियम यह दावा करता है कि यीशु की मृत्यु ही परमेश्वर के साथ मेल–मिलाप (प्रायश्चित्त) लाती है, लेकिन यहां स्पष्टता कम है कि मसीह को क्यों मरना पड़ा। इसी रहस्य पर मसीही युगों से मनन करते रहे हैं और इससे ''प्रायश्चित के विभिन्न सिद्धांतों'' का जन्म हुआ है।

ध्यान देने योग्य है कि मसीह की उद्धारकारी मृत्यु के रहस्य की कोई एक 'आधिकारिक' व्याख्या कभी नहीं रही। यही कारण है कि इस विषय पर अलग–अलग ज़ोर और व्याख्याएँ रही हैं और आगे भी रहेंगी।

1. कुछ समय निकालकर सोचें कि क्रूस पर चढ़ाए जाने का आपके लिए क्या अर्थ है। अपनी सोच को दृश्य रूप में व्यक्त करने के लिए दिए गए क्रूस की रूपरेखा का उपयोग करें।
   - आप शब्दों या चित्रों का कोलाज बना सकते हैं या केवल रंगों पर ध्यान केंद्रित कर सकते हैं।
   - क्या कोई ऐसा गुड फ्राइडे का भजन है जो आपके लिए सब कुछ कह देता है?

   जो भी समय, विचार या साधन आपके पास हों, उनका उपयोग करें। लेकिन इन्हें अगली सभा में समूह के साथ साझा करने के लिए साथ लाना होगा।
2. यदि आपके पास क्रूस की कोई ऐसी छवि है जो आपके लिए विशेष अर्थ रखती है, तो उसे भी साथ लाएँ।
3. पृष्ठ 20 और 21 पर दिए गए 'प्रायश्चित के सिद्धांतों' से स्वयं को परिचित करायें।

पुस्तिका के अंत में इस मॉड्यूल में प्रयुक्त कुछ धार्मिक शब्दों की एक सहायक शब्दावली दी गई है।

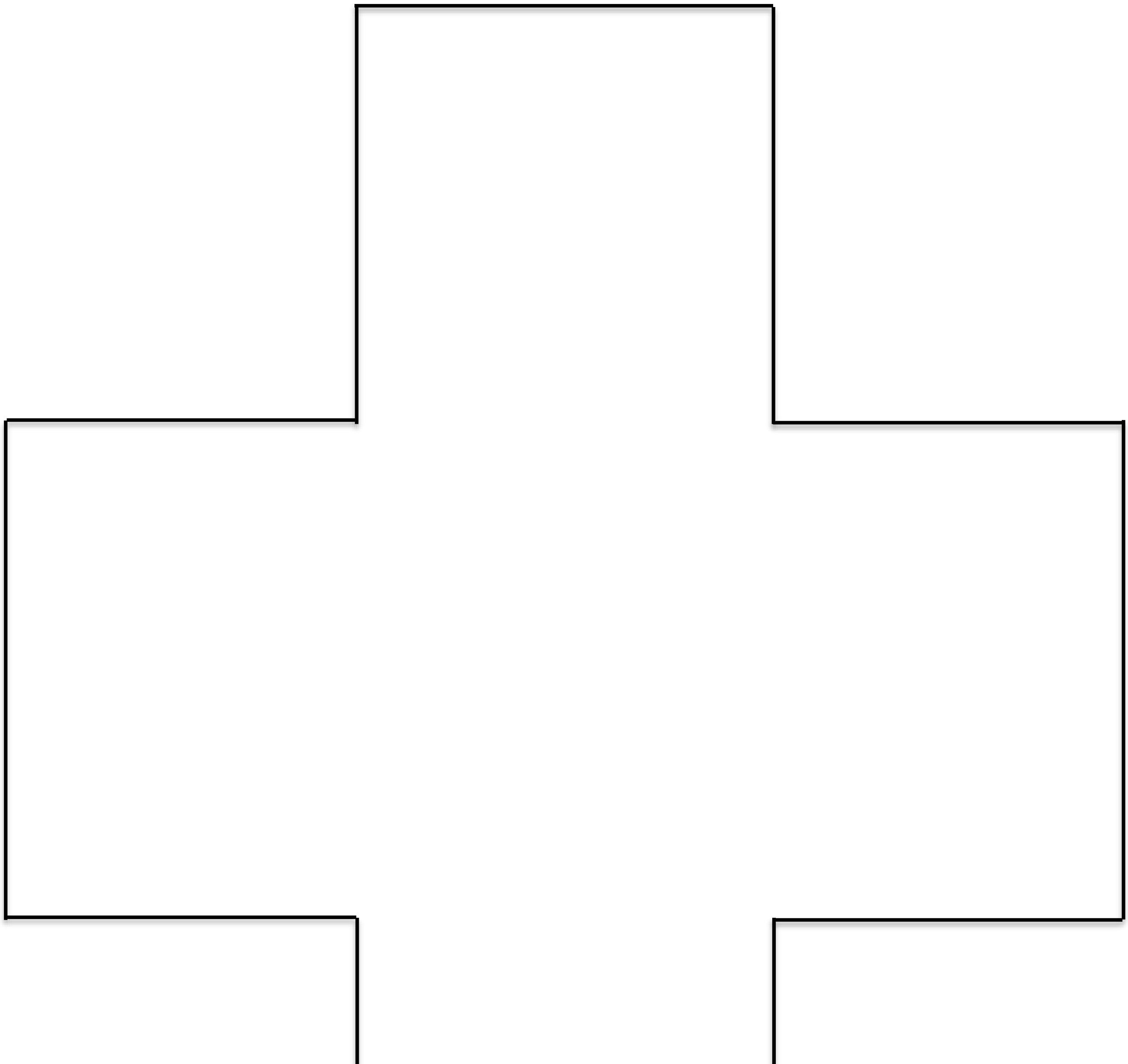

अगले दो पृष्ठ यीशु की मृत्यु और पुनरुत्थान को समझने के लिए प्रस्तुत किए गए विभिन्न सिद्धांतों को दिखाते हैं। ये सिद्धांत एक–दूसरे से विरोधी नहीं हैं, बल्कि अलग–अलग 'समस्याओं' पर ध्यान केंद्रित कर सकते हैं। जब आप इन पर विचार करें तो यह सोचने योग्य है कि 'कौन–सी समस्या हल की जानी है?'

उदाहरण के लिए, क्या यह समस्या व्यक्तिगत पाप है जिसे क्षमा किया जाना चाहिए, या बुराई की उपस्थिति है जिसे पराजित किया जाना चाहिए? क्या मनुष्य पतन का कारण हैं और उन्हें दया की आवश्यकता है, या वे पतन के शिकार हैं और उन्हें उद्धार की आवश्यकता है? क्या क्रूस और पुनरुत्थान केवल मानवता के बारे में है या पूरी सृष्टि के लिए प्रासंगिक है? क्या यीशु की मृत्यु क्षमा के लिए आवश्यक है? आप पुराने नियम में क्षमा के अनुभव पर विचार करना चाह सकते हैं – भजन संहिता 32 देखें।

आप यह भी कल्पना कर सकते हैं कि जब यीशु क्रूस पर और कब्र में थे, तब आत्मिक जगत में क्या हो रहा था, और यह भी सोच सकते हैं कि त्रिएकता के अस्तित्व में क्या घटित हो रहा था।

सिधांत	**परमेश्वर का गुण**	**लक्ष्य**	**उद्देश्य**	**संदर्भ**	**समर्थक**
दोहराव	सर्वशक्तिमानता	पतन को पलटना	शैतान	रोमियों 5:15–21	इरेनियस
फिरौती	बुद्धि	शैतान को हराना	शैतान	मरकुस 10:45	ओरिजेन
नैतिक उदाहरण	प्यार	प्यार का खुलासा	इंसानियत	रोमियों 5	पेलाजियस एबेलार्ड
संतुष्टि	दया	पापी को वापस लाना	इंसानियत	1 यूहन्ना 2:1	एक्विनास
बदलाव	न्याय	क्रोध को शांत करना	परमेश्वर	लूका 19:10	केलविन

प्रेम का क्रूस

पीटर एबेलार्ड (1079–1142) द्वारा प्रस्तुत किया गया और 19वीं शताब्दी के जर्मन धर्मशास्त्री एफ.डी.ई. श्लायरमाखर द्वारा विकसित।

मसीह की मृत्यु बलिदानी प्रेम का सर्वोत्तम उदाहरण है। इसकी परिवर्तनकारी शक्ति उस प्रभाव में निहित है जो यह पापी पर डालती है, जब वह कलवरी की घटनाओं पर मनन करता है, तो प्रेम और पश्चाताप की ओर प्रेरित होता है।

ब्रायन हेब्लेथवेट ने लिखाः "परमेश्वर का क्षमाशील प्रेम मसीह की मृत्यु पर निर्भर नहीं करता, बल्कि उसमें प्रकट और क्रियान्वित होता है।"

मुख्य पाठः यूहन्ना 15:13

बुराई का उपचार

कोलिन गनटन की "एक्चुऐलीटी ऑफ एटोनमैंट" (1988) और वर्नन व्हाइट की "एटोनमैंट एंड इंकारनेशन" (1991) यह तर्क देती हैं कि यद्यपि पारंपरिक प्रायश्चित सिद्धांतों में कुछ समस्याएँ हो सकती हैं जो उन्हें उत्तर–आधुनिक संस्कृति के लिए अस्वीकार्य बनाती हैं, फिर भी हमें एक ठोस उत्तर चाहिए जो मानवता की उस गहरी आवश्यकता को संबोधित करे कि "दुनिया की वास्तविक बुराई.....(का) उपचार हो..." (गनटन)। इस प्रकार, मसीह का जीवन, मृत्यु और पुनरुत्थान वास्तव में कुछ साध्य करता है, यह ब्रह्मांड में एक परिवर्तन लाता है।

मुख्य पाठः 1 यूहन्ना 3:8, तुलना करेंः कुलुस्सियों 2:15;1:15–23

क्रूस का रहस्य, कलीसिया ने यीशु मसीह का मनुष्य होने और कार्य को समझने के प्रयास में प्रायश्चित के अनेक सिद्धांत विकसित किए हैं। ये विभिन्न प्रकार के मॉडल हैं जिन्हें सामान्यतः चार शीर्षकों के अंतर्गत संक्षेपित किया जा सकता है:

- **वस्तुनिष्ठः** मसीह का क्रूस परमेश्वर और मानवता में वास्तविक परिवर्तन लाता है।
- **वैयक्तिकः** क्रूस का उदाहरण मानवता में प्रेम और भक्ति को प्रेरित करता है।
- **संरचनात्मकः** मसीह हमारे लिए ऐसा कार्य पूरा करते हैं जिससे उद्धार संभव होता है।
- **दृष्टांतात्मकः** क्रूस परमेश्वर के स्वभाव के बारे में वह सत्य प्रकट करता है जो सदा से शाश्वत है।

स्पष्ट है कि इनमें कुछ अंतःसंबंध है। और इनमें से कोई भी सिद्धांत नए नियम की संपूर्ण गवाही को पूरी तरह नहीं समेटता।

स्तुष्टि का सिद्धांत

यह दृष्टिकोण सेंट एन्सेल्म (1082–1109), जो कैंटरबरी के आर्चबिशप थे, की रचनाओं में विकसित हुआ। 'संतुष्टि' की छवि सामंती कानून से ली गई थी, जिसमें कहा गया था कि किसी चोट या अपराध का प्रायश्चित भुगतान, क्षतिपूर्ति या दंड के माध्यम से किया जाना चाहिए। पाप परमेश्वर के विरुद्ध अपराध है, जिसके लिए 'संतुष्टि' आवश्यक थी। कोई भी मनुष्य परमेश्वर को 'संतुष्टि' नहीं दे सकता था, इसलिए परमेश्वर ने स्वयं वह ऋण चुका दिया।

सुधार आंदोलन के समय धर्मशास्त्रियों ने इस सिद्धांत को एक विशेष दिशा में विकसित किया, जिसे बाद में "दंडात्मक प्रतिस्थापन" कहा गया। मार्टिन लूथर और जॉन कैल्विन ने तर्क दिया कि यीशु ने मानवता के पापों को अपने ऊपर लिया और हमारे स्थान पर दंड सहा।

मुख्य पाठः मरकुस 14:24 "और उसने उनसे कहा, 'यह मेरी वाचा का लहू है, जो बहुतों के लिए बहाया जाता है।'" यूहन्ना 1:29 "यूहन्ना ने कहा, 'देखो, परमेश्वर का मेमना, जो संसार का पाप उठा ले जाता है।'" – देखेंः रोमियों 3:23–25,1कुरिन्थियों 5:7,15:3

ब्रह्मांडीय युद्ध का सिद्धांत

यह सिद्धांत दूसरी और तीसरी शताब्दी में प्रारंभिक कलीसिया के फादर्स जैसे इरेनियस, ओरिजेन और ग्रेगरी द ग्रेट(धर्मशास्त्री जिनके लेखन को ईसाई सिद्धांत के विकास में महत्वपूर्ण माना जाता है) द्वारा विकसित किया गया। 20वीं शताब्दी में गुस्ताव ऑलेन ने अपनी पुस्तक "क्रिस्टस विक्टर" (1930/1,एसपीसीके 1970) के माध्यम से इस सिद्धांत को नया दृष्टिकोण और लोकप्रियता दी। बाद में रुडोल्फ बुल्टमान और पॉल टिलिख ने इसे अस्तित्ववादी शब्दों में "पुनः मिथकीय" रूप दिया, और हाल ही में पॉल फिड्डेस ने "पास्ट इवैंटस, प्रेसंट साल्वेशन" (1989) में इसे पुनः प्रस्तुत किया..." मसीह की विजय वास्तव में हमारे भीतर विजय उत्पन्न करती है.... मसीह का कार्य मानव इतिहास के उन क्षणों में से एक है जो 'अस्तित्व की नई संभावनाओं को खोलता है।'"

यह दृष्टिकोण क्रूस को परमेश्वर और शैतान के बीच ब्रह्मांडीय युद्ध में विजय का क्षण मानता है (आधुनिक व्याख्याओं में इसे शाब्दिक रूप से नहीं लिया जाता)। पतन के बाद से मानवता शैतान की पकड़ में थी। यीशु की मृत्यु हमारी स्वतंत्रता के लिए चुकाई गई फिरौती थी।

मुख्य पाठः मत्ती 20:28 "मनुष्य का पुत्र आया....बहुतों के लिए अपना जीवन फिरौती के रूप में देने।"–देखेंः 1 पतरस1:17–20

इन चर्चाओं का विस्तृत सारांश आप एलिस्टर मैक्ग्राथ की पुस्तक "क्रिस्चीयन थियोलोजी, एन इंट्रोडक्शन"(चौथा संस्करण), अध्याय 13 "द डाक्टरीन आफ सालवेशन इन क्राइस्ट या इसके इलावा उनकी पुस्तक "हिस्टोरीकल थियोलोजी"(1998) के पृष्ठ 282 पर देख सकते, केस स्टडी 4.2 'द बेसिस 'द नेचर आफ साल्वेशन' में भी इस विषय का विवरण दिया गया है।

मॉड्यूल तीनः मसीही सिद्धांत का विकास

सत्र 3: मसीह मर गया है

उद्देश्यः

- यीशु की मृत्यु की विभिन्न व्याख्याओं का मूल्यांकन करना
- चिंतन करना कि हमारे शिष्यत्व और सेवकाई में क्रूस कैसे बोलता है

प्रारंभिक प्रार्थना 5 मिनट

विषय की शुरुआत 10 मिनट

जो क्रूस आप लाए हैं उन्हें एक केंद्र में रखे मेज पर रखें और कुछ समय उन्हें ध्यान से देखें। समूह में चर्चा करें कि क्या चीज़ आपका ध्यान आकर्षित करता है, चाहे वो चित्र बहुत अलग हों या उनमें कोई सामान्य विषय हो।

कला में क्रूस 20 मिनट

समूह में आगे बढ़ें। क्या आपको कोई ऐसा चित्र याद है जिसमें क्रूस का प्रभावशाली चित्रण किया गया हो? यदि कोई चित्र लाया गया है तो साझा करें।

फ्रांसिस्को जुर्बरान की पेंटिंग 'एग्नस देई या बाउंड लैम्ब' (1630 के दशक में बनाई गई, पृष्ठ 26) को देखें और चर्चा करें। आपको क्या लगता है कि इसमें मसीह की मृत्यु के बारे में कौन–से विचार व्यक्त किए जा रहे हैं? इस चित्र पर आपकी अपनी प्रतिक्रिया क्या है?

प्रायश्चित के पारंपरिक सिद्धांत 30 मिनट

प्रायश्चित के बारे में हमारे समकालीन विश्वासों में से अधिकांश (जैसा कि पिछले पृष्ठ के चित्र में दिखाया गया है) प्रेरित युग से लेकर अब तक पीढ़ियों से चले आ रहे हैं। इन विश्वासों ने मसीही धर्मशास्त्र में केंद्रीय स्थान प्राप्त किया है और इन्हें शास्त्रीय या पारंपरिक सिद्धांत माना जाता है। प्रत्येक में अपनी–अपनी शक्तियाँ और कमज़ोरियाँ हैं।

समूह कार्य

- अगले पृष्ठ पर दिए गए अंश पढ़ें और तय करें कि वे किस प्रायश्चित सिद्धांत का वर्णन अच्छे से करते हैं।
- आपको क्या लगता है कि चित्र में हर प्रायश्चित सिद्धांत की खूबियां और कमियां क्या हैं?

क्रूस पर विचार

"इस दृष्टिकोण में अत्यधिक नाटकीय सुंदरता है, और इसकी शक्ति का एक हिस्सा इस तथ्य में निहित है कि यह मानव अनुभव से मेल खाता प्रतीत होता है। जीवन अक्सर एक युद्ध जैसा लगता है।"
बिशप रिचर्ड हॉलोवे

"देखो उसके सिर, उसके हाथ, उसके पाँव से
दुःख और प्रेम साथ बहते हैंः
क्या कभी ऐसा प्रेम और दुःख मिला,
या काँटों ने इतना समृद्ध मुकुट बनाया।" आइजैक वॉट्स

"इस दृष्टिकोण की सबसे सामान्य आलोचना यह है कि यह केवल 'व्यक्तिपरक' है। इसका प्रभाव केवल मनुष्य की प्रतिक्रिया है...यदि इसने परमेश्वर और मनुष्य के बीच एक अलग संबंध स्थापित नहीं किया, तो (यीशु की मृत्यु), क्यों आवश्यक थी?" फ्रांसेस यंग

"क्रूस का अर्थ यह नहीं है कि पुत्र मेरी जगह खड़ा होकर वह दंड भुगत रहा है जो मुझे भुगतना चाहिए था। ऐसा दृष्टिकोण अनैतिक है....." बिशप ह्यूग मोंटेफियोर

"जब शैतान मुझे निराशा की ओर उकसाता है
और भीतर के दोष का स्मरण कराता है
मैं ऊपर देखता हूँ और उसे वहाँ देखता हूँ
जिसने मेरे सारे पापों का अंत कर दिया
क्योंकि निष्पाप उद्धारकर्ता मरा
मेरी पापी आत्मा स्वतंत्र गिनी जाती है
क्योंकि न्यायी परमेश्वर संतुष्ट है
उस पर दृष्टि डालकर मुझे क्षमा करने में।" चारिटी लीस स्मिथ

"मैं तुम्हें जानता हूँ, एक ऐसे तरीके से जिसे समझाना असंभव है, मैंने देखा – मैं लगभग तुम में से प्रत्येक बन गया, उन तीन घंटों के दौरान जब मैं वर्षों पहले उस पहाड़ी पर मर रहा था...."

एड्रियन प्लास

"द्वैतवादः यह विश्वास कि ब्रह्मांड में अच्छाई और बुराई की समान और विपरीत शक्तियाँ कार्यरत हैं। यह एक पुराना विधर्म है जिसमें शैतान के बारे में बोलते समय गिरना बहुत आसान है।"

एन इंट्रोडक्शन टू द क्राईस्ट में दी गई परिभाषा

"क्रूस की यह समझ कभी–कभी जितनी दी जाती है यह उससे अधिक शक्तिशाली है। मृत्यु में उंडेला गया प्रेम वास्तव में प्रभावशाली है। प्रेम की कीमत बहुत ऊँची थी....." फ्रांसेस यंग

"......इस सिद्धांत ने शक्तिशाली मनोवैज्ञानिक और सुसमाचारिक बल प्राप्त किया है क्योंकि जो इसका प्रत्युत्तर देता है उसे लगता है कि दोषपूर्ण स्थिति को हल करने के लिए कुछ वस्तुनिष्ठ किया गया है"

फ्रांसेस यंग

विश्राम

यीशु की मृत्यु की अति आधुनिक व्याख्याएँ 10 मिनट

20वीं शताब्दी में, विशेषकर द्वितीय विश्व युद्ध के बाद, क्रूस की छवियाँ पीड़ा के विचार और मसीह की मृत्यु पर नए ज़ोर को प्रकट करती हैं। चित्रों और उनके पीछे की कहानियों को देखें।

उनमें आपको कौन–सी धर्मशास्त्रीय समझ दिखाई देती है?

यीशु 'पीड़ा सहनेवाला' के रूप में 20 मिनट

20वीं शताब्दी के उत्तरार्ध में मसीहीयों ने यीशु की मृत्यु को पीड़ा, सामाजिक अन्याय और उत्पीड़न जैसे मुद्दों को संबोधित करने के लिए पुनः व्याख्यायित किया।

मुक्ति धर्मशास्त्रियों ने यीशु की मृत्यु में अपने साथी मनुष्यों के लिए पीड़ा सहने और दुष्ट राजनीतिक व्यवस्थाओं को चुनौती देने का उदाहरण देखा। *डॉम हेल्डर कैमारा*, आर सी आर्कबिशप, ओलिंडा और रेसिफ–ब्राजील, यह बताने के लिए प्रसिद्ध हैं,

> *"जब मैं गरीबों को भोजन देता हूँ, तो वे मुझे संत कहते हैं। जब मैं पूछता हूँ कि गरीबों के पास भोजन क्यों नहीं है, वे मुझे कम्युनिस्ट कहते हैं।"'*

वियतनाम युद्ध के समय उन्होंने दुनिया के युवाओं से 'हिंसा का चक्र' तोड़ने का आग्रह करते हुए एक पर्चा लिखा, जिसके उनके बुजुर्ग आदी हो गए थे।

एक अन्य आर सी बिशप, ऑस्कर रोमेरो जो कि एल साल्वाडोर के रहने वाले थे, उन्होंने मानवाधिकार उल्लंघनों की निंदा की और 1980 में कैथेड्रल में उपदेश समाप्त करते समय राईट विंग समूह द्वारा उनकी हत्या कर दी गई।

जर्मन धर्मशास्त्री *जर्गन मोल्टमान* ने लिखा कि क्रूस और पुनरुत्थान पीड़ित मानवता की घोषणा करते हैं कि परमेश्वर ने भी पीड़ा सही और मृत्यु पर विजय प्राप्त की। दरअसल, उनके हमवतन डाइट्रिच बोनहोफर ने नाजी जेल से लिखा, '"केवल एक पीड़ित परमेश्वर ही बचा सकता है।"

फ्रांसेस यंग ने अपनी पुस्तक 'कैन दीस ड्राई बोनस लिवस?' में क्रूस के बारे में सोच में आए बड़े परिवर्तन को इस प्रकार संक्षेपित किया हैः

'"यदि एक बात उभर कर आई है....तो यह है कि क्रूस का अर्थ किसी न किसी रूप में केवल पाप से नहीं, बल्कि सभी पीड़ा, सभी दर्द, सभी आपदा, सभी अन्याय, सभी क्षय और मृत्यु से जुड़ा होना चाहिए– वास्तव में सृष्टि, मानव स्वभाव और मानव समाज की हर गलत बात से...."'

फ्रांसेस यंग, 'कैन दीस ड्राई बोनस लिवस?' एससीएम, 1982

समूह कार्य

- आपको क्या लगता है कि मसीह की मौत पर ज़ोर क्यों बदल गया है?
- क्रूस की कौन सी व्याख्याएँ आपके संदर्भ में मुद्दों पर सबसे ज़्यादा असरदार तरीके से बात करती हैं?
- क्या हम हर हफ्ते आराधना में कौम से जो बात कहते हैं, उसका आज कोई असली मतलब है?

समापन आराधना 5 मिनट

उद्धरणों के स्रोत

रिचर्ड होलोवे, डांसिंग ऑन द एज, (फाउंट पेपरबैक, 1997)
ह्यूग मोंटेफियोर, कंफर्मेशन नोटबुक, (लंदनः एसपीसीके, 1984)।
एड्रियन प्लास, द विजिट (हार्पर कॉलिन्स, 1999)
इसहाक वाट्स, 1674–1748, भजन ''व्हेन आई सर्वे'' से लिया गया
फ्रांसिस यंग, 'कैन दीस ड्राई बोनस लिवस?' (लंदनः एससीएम, 1982)

आगे देखोः अगली तैयारी 5 मिनट

एग्नस देई – फ्रांसिस्को डे जुर्बरान (1598–1664)
परमेश्वर का मेमना

जुर्बरान द्वारा बनाई गई मेमनों की पेंटिंग्स अत्यधिक प्रशंसित थीं। उन्होंने उज्ज्वल सफेद मेमने को गहरे, कठोर पृष्ठभूमि के सामने रखकर उस जीव की शारीरिक उपस्थिति की अनुभूति को तीव्र कर दिया। यह चित्रण मसीह के बलिदान का प्रतीक है। उनकी छह पेंटिंग्स में से कुछ में उन्होंने हल्का–सा प्रभामंडल भी जोड़ा।

पुराने नियम में निर्दोष मेमने की भेंट को मसीह की मृत्यु का पूर्वाभास माना गया, पापी मानवता के लिए एक बलिदानी विकल्प।

पतरस अपने पत्रों में स्पष्ट तुलना करता हैः
"तुम नाशवान वस्तुओं से मुक्त नहीं किए गए... बल्कि मसीह के बहुमूल्य लहू से, जैसे निर्दोष और निष्कलंक मेमना।" 2 पतरस 1:18–19

और यूहन्ना अपने सुसमाचार में लिखता है कि जब यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले ने यीशु को आते देखा, तो उसने पुकार कर कहा,

"देखो, परमेश्वर का मेमना, जो संसार का पाप उठा ले जाता है।" यूहन्ना 1:29

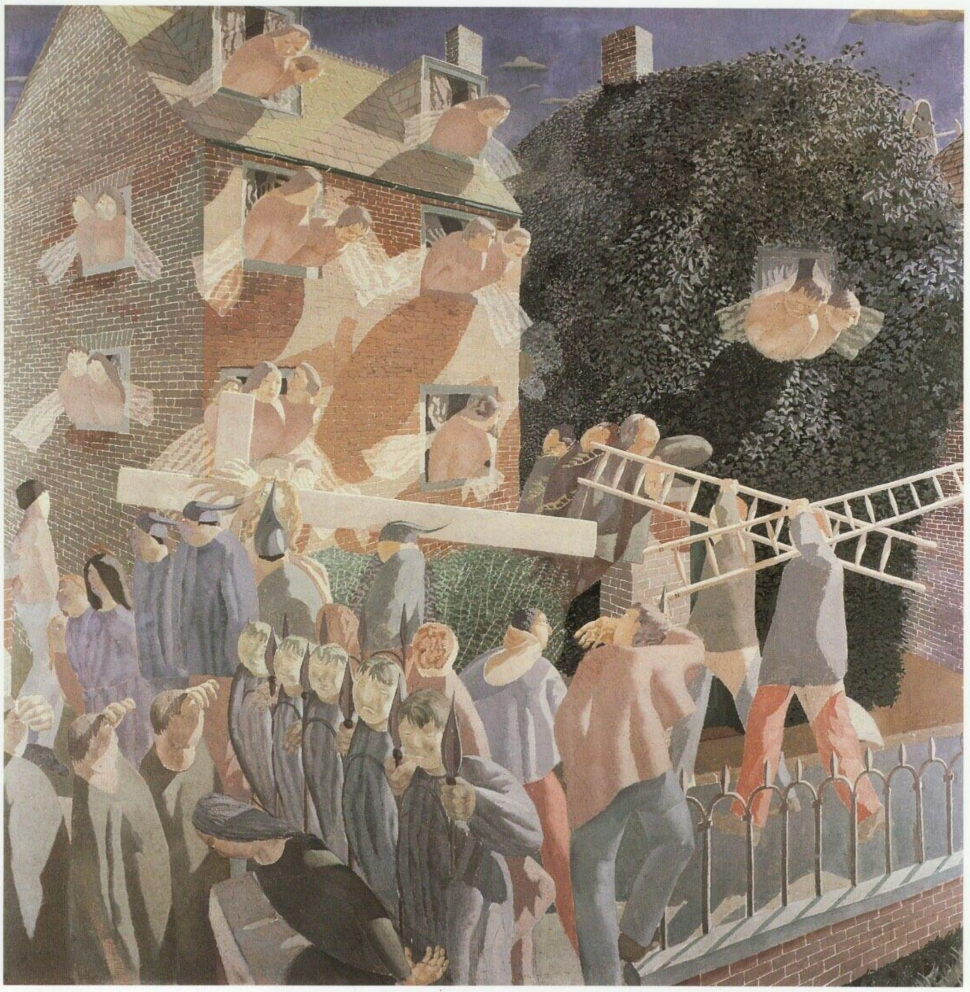

क्राइस्ट कैरींग द क्रॉस– स्टैनली स्पेंसर 1920

यह चित्र क्रूस के मार्ग को कुकहम हाई स्ट्रीट में स्थित करता है। प्रकाश दाईं ओर ऊपर से आता प्रतीत होता है, और नीचे बाईं ओर खड़े पुरुष अपने चेहरों को उससे बचा रहे हैं। लोग खिड़कियों से बाहर देख रहे हैं, और जालीदार परदे बाहर की ओर उड़ रहे हैं मानो स्वर्गदूतों के पंख हों।

चित्र में सीढ़ियों की उपस्थिति उस वास्तविक घटना से जुड़ी है जब स्पेंसर इस रचना पर काम कर रहे थे। उन्होंने मज़दूरों को घरों के सामने सीढ़ियाँ उठाए चलते देखा और उसने इसे "दैनिक जीवन की वास्तविकता" कहा। ये सीढ़ियाँ क्रूस के आकार की दृश्य प्रतिध्वनि बन जाती हैं। रेलिंग के पास गुड़िया जैसी चेहरों वाली महिलाएँ खड़ी हैं, जिनकी नुकीली भालों जैसी आकृति हिंसा का संकेत देती है। स्वयं मसीह क्रूस के नीचे छिपे हैं, जबकि टोपी पहने पुरुष, शायद राजमिस्त्री, उनके साथ चलते हैं। दृश्य में हल्की–सी क्लू क्लक्स क्लान जैसी धमकी का आभास भी है। कुल मिलाकर, यह चित्र लोगों की व्यस्त दिनचर्या को दिखाता है, जिसमें क्रूस की ओर बढ़ती यात्रा लगभग अनदेखी रह जाती है, साधारण, रोज़मर्रा की चीज़ों में खोई हुई।

टेट गैलरी ने इस चित्र को मूल रूप से "क्राइस्ट बीअरिंग हिस क्रॉस" शीर्षक दिया था, जिससे स्पेंसर बहुत नाराज़ हुए। उनके अनुसार यह गलत शीर्षक –

पीड़ा का भाव देता था, जबकि उनका उद्देश्य यह दिखाना था कि पीछे बढ़ई सीढ़ियाँ उठा रहे हैं और आगे मसीह क्रूस उठा रहे हैं, दोनों अपने–अपने काम में लगे हुए......मसीह कोई काम नहीं कर रहे थे, न ही अपना काम, बल्कि काम कर रहे थे।"

'यातनाग्रस्त मसीह' – गुइडो रोचा, ब्राज़ील

ब्राज़ील के मूर्तिकार गुइडो रोचा ने इस मूर्ति में अपने स्वयं की यातना के अनुभव के साथ–साथ दूसरों के अनुभव को भी चित्रित किया है। अपने दर्द की पुकार में रोचा ने उस मसीह को याद किया जिसने हमारे पापों को क्रूस पर उठाया था, ताकि यह गुलगुता की पुकार उसके लिए महान प्रतिज्ञा बन गई। यहाँ एक मनुष्य था जो सबसे भयंकर यातनाओं को सहते हुए भी सत्य के क्षण तक पूर्णतः मानव बना रहा, और ऐसा करके उसने अपने प्रेम के कार्य को पूरा किया, मरते हुए मसीह का पीड़ित चेहरा घृणा का चित्र नहीं है, बल्कि आशा का चिन्ह है।

© सीएमएस / यूएसपीजी / मैथेडिस्ट चर्च, द क्राईस्ट वी शेअरः ए वर्ल्ड रिसोर्स फॉर लोकल मिशन(रिर्सास पैक)

'क्वांग्जू की पिएटा' – ताकेओ तोमियामा

ताकेओ तोमियामा चीन के मंचूरिया प्रांत में पली–बढ़ीं। 1960 के श्रमिक आंदोलनों के दौरान उनका खनन मज़दूरों से संपर्क हुआ और वे तीसरी दुनिया के संघर्षों में गहराई से जुड़ती चली गईं....यह 'पिएटा' (इस चित्र में मरियम अपने घुटनों पर मृत मसीह को थामे हुए हैं), उस समय बनाई गई जब कोरिया के क्वांग्जू नगर पर जनता का कब्जा सेना द्वारा बेरहमी से दबा दिया गया।

© सीएमएस / यूएसपीजी / मैथेडिस्ट चर्च, द क्राईस्ट वी शेअरः ए वर्ल्ड रिसोर्स फॉर लोकल मिशन(रिर्सास पैक)

मॉड्यूल तीनः मसीही सिद्धांत का विकास''

सत्र 4: मसीह जी उठे हैं

तैयारी

टॉम राइट की पुस्तक 'फोलोइंग जीसस' से दिए गए इस अंश को पढ़ें और विचार करें:

> "जब हम 'मसीह का अनुसरण करने' की बात करते हैं, तो हम उस क्रूस पर चढ़ाए गए मसीहा की बात कर रहे होते हैं। उनकी मृत्यु केवल वो 'गंदा हिस्सा' नहीं थी जो हमारे पापों को क्षमा करने में सक्षम बनाता है और फिर भुला दिया जाता है। क्रूस ही परमेश्वर के हृदय और चरित्र की सबसे सच्ची, गहरी और निश्चित खिड़की है; जितना हम क्रूस के बारे में सीखते हैं, उसके ऐतिहासिक और धर्मशास्त्रीय आयामों में, उतना ही हम उस परमेश्वर को जान पाते हैं जिसकी छवि में हम बनाए गए हैं, और इस प्रकार अपने बुलावे को भी समझते हैं कि हम क्रूस उठाने वाले लोग बनें, वे लोग जिनके जीवन और सेवा में जीवित परमेश्वर प्रकट होता है। और जब हम अपने संसार को आकार देने की बात करते हैं तो हम केवल यह नहीं कह सकते.....न ही कहने का साहस कर सकते हैं...कि क्रूस वह चीज़ है जो हमें 'व्यक्तिगत रूप से' बचाती है, और फिर जिसे पीछे छोड़कर हम काम पर लग जाएँ। संसार को आकार देने का कार्य सबसे अच्छी तरह समझा जाता है कि यह उद्धार का कार्य है; क्रूस की उपलब्धि को संसार पर लागू करना और इस कार्य में संदेश के साथ–साथ विधियाँ भी पूरी तरह क्रूस के जैसी होनी चाहिए।"

एन.टी.राइट, 'फोलोइंग जीससः बिब्लीकल रिफलैक्शनस ऑन डिसाइपलशिप' (लंदनःएसपीसीके, 1994)

- आपके विचार में 'क्रूस की उपलब्धि को संसार पर लागू करना' का क्या अर्थ है?
- आपके अपने जीवन और सेवकाई में यह किस प्रकार शामिल होगा?
- 'क्रूस के आकार की विधियाँ' कैसी दिख सकती हैं?

अगले सप्ताह इन चिंतन बिंदुओं में से कुछ साझा करने के लिए तैयार रहें।

पुनरुत्थान पर अगले सत्र की तैयारी के लिए कृपया पढ़ें:

- 1 कुरिन्थियों 15:1–34

आप इसे बाइबल के कई अनुवादों में पढ़ने का प्रयास कर सकते हैं – और यदि संभव हो तो किसी अन्य भाषा में भी पढें (भले ही आप उसमें पूरी तरह निपुण न हों!)।

अब सोचें:

- जब यीशु फिर से जी उठे तो उनके साथ क्या हुआ?
- इसका उनके लिए एक मनुष्य और परमेश्वर के रूप में क्या अर्थ था

"कुछ धर्मशास्त्रियों ने तर्क दिया है कि पुनरुत्थान को केवल एक 'पौराणिक' घटना के रूप में ही समझा जा सकता है, जिसे इतिहास के रूप में सख्ती से सत्यापित नहीं किया जा सकता। तो यदि यीशु की हड्डियाँ फिलिस्तीन में मिल जाएँ, तो मसीही विश्वास का क्या शेष रहेगा?

"कृपया कुछ समाचार पत्र, पत्रिकाएँ अथवा समाचारों से संबंधित चित्र अलग रख लें, जिन्हें आप अगले सत्र में लेकर आएँ। ये सामग्री वर्तमान वैश्विक समस्याओं को स्पष्ट रूप से प्रदर्शित करती हो।

DIGGING DEEPER

"यीशु के पुनरुत्थान के प्रकट होने की घटनाओं को चारों सुसमाचारों में देखें और ध्यान दें कि आप क्या अनुभव करते हैं।

मॉड्यूल तीनः मसीही सिद्धांत का विकास''

सत्र 4: मसीह जी उठे हैं

उद्देश्यः यीशु के पुनरुत्थान में हमारे विश्वास की जाँच करना और यह समझना कि इस विश्वास का हमारे जीवन और सेवकाई पर क्या प्रभाव पड़ता है।

प्रारंभिक प्रार्थना और समीक्षा 10 मिनट

समूह के रूप में, पिछले सत्र से प्राप्त निरंतर अंतर्दृष्टियों और चिंतन को साझा करें।

विषय का आरंभ 10 मिनट

समूह कार्य

- चर्चा करें कि ईस्टर आपके घर, आपके चर्च और आपकी संस्कृति में कैसे मनाया जाता है।
- ये बातें किसी दर्शक को आपके विश्वास के बारे में क्या बताती हैं?

समूह के रूप में अपनी विचारधारा पर प्रतिक्रिया और समीक्षा करें।

शरीर का पुनरुत्थान या आत्मा की अमरता? 25 मिनट

मसीही विश्वास में पुनरुत्थान, पहले यीशु का और अंततः सभी विश्वासियों का, हमें मृत्यु के बाद जीवन की आशा देता है। लेकिन यह केवल आत्मा के शरीर की भौतिक समाप्ति के बाद परमेश्वर के पास जाने से कहीं बड़ा विचार है। मसीही कथा हमें बताती है कि परमेश्वर की चंगाई देने वाली, जीवनदायी और पुनः सृजन करने वाली सामर्थ्य मृत्यु और क्षय की दुनिया में प्रवेश करती है। निम्नलिखित अंश पढ़ेंः

> *"हम उस गुड फ्राइडे को जानते हैं जिसे मसीही धर्म क्रूस का दिन मानता है। लेकिन गैर–मसीही, नास्तिक भी इसे जानते हैं। इसका अर्थ है कि वह अन्याय, अंतहीन पीड़ा, व्यर्थता और अंत के कठोर रहस्य को जानता है, जो न केवल मानव स्थिति के ऐतिहासिक आयाम का हिस्सा है, बल्कि हमारे व्यक्तिगत जीवन की दैनिक संरचना भी है। हम जानते हैं.... पीड़ा, प्रेम की विफलता, एकांत जो हमारा इतिहास और निजी भाग्य है। हम रविवार के बारे में भी जानते हैं। मसीही व्यक्ति के लिए वह दिन पुनरुत्थान का संकेत है, न्याय और प्रेम का, जिसने मृत्यु पर विजय प्राप्त की...उस रविवार की विशेषताएँ आशा का नाम धारण करती हैं...लेकिन हमारा सफर शनिवार का लंबा दिन है।"* [(1)]

जॉर्ज स्टाइनर, *'रीयल प्रैसेन्सस'*, यूनिवर्सिटी ऑफ शिकागो, 1989

समूह चर्चा में निम्नलिखित प्रश्नों के लिए आपके उत्तरः

- आज ब्रिटेन में कई लोग मृत्यु के बाद आत्मा या आत्मिक अस्तित्व में विश्वास करते हैं। आपकी राय में, हमारे मसीही पुनरुत्थान विश्वास में क्या भिन्नता है?
- यीशु के साथ क्या हुआ (अपनी तैयारी का संदर्भ लें) और क्या वही हमारे साथ भी होगा?
- यहाँ 'कुप्रचार' का प्रश्न भी दूर नहीं है – मृत्यु के बाद जीवन के बारे में कई विचार हैं जैसे पुनर्जन्म और 'मध्यवर्ती अवस्थाएँ'...मसीही होने के नाते हम क्या मान सकते हैं और क्या नहीं? हम कैसे जानें कि कौन–सा विश्वास परंपरागत है?
- क्रिश्चियन एड का वर्तमान नारा है "हम मृत्यु से पहले जीवन में विश्वास करते हैं।" यह विचार हमारे पुनरुत्थान विश्वास को किस प्रकार प्रतिबिंबित करता है?

विश्राम

पुनरुत्थान की अवधारणा को समझना 20 मिनट

पहले ईस्टर की घटनाओं को पूरी तरह समझने के लिए हमें यहूदी पृष्ठभूमि देखनी होगी।

नीचे दी गई जानकारी को पढ़ें''

पुनरुत्थान का सबसे प्रारंभिक विवरण पौलुस द्वारा कुरिन्थियों को लिखे पहले पत्र (लगभग 50 ईस्वी) में मिलता है। पौलुस गवाही देता है कि सुसमाचार में यह घोषित किया गया कि मसीह मृतकों में से जी उठे, पतरस, बारह शिष्यों और 500 से अधिक गवाहों को दिखाई दिए।

यह प्रारंभिक कलीसिया की झलक देता हैः एक अद्भुत घटना जिसने पराजित शिष्यों को बदल दिया और उनके मिशन का प्रेरक बल बनी।

पुनरुत्थान शब्द का प्रयोग करके शिष्य यहूदी विश्वास की भाषा का उपयोग कर रहे थे। उनके लिए इसका अर्थ केवल परमेश्वर के साथ आत्मा का जाना नहीं था। पुराना नियम (यहेजकेल 37:1–14) में पुनरुत्थान की जीवंत छवि देखें।

यह खंड संभवतः निर्वासन के समय लिखा गया था, लगभग 587 ईसा पूर्व के बाद, जब शरणार्थियों ने लगभग सारी आशा खो दी थी। यहेजकेल परमेश्वर द्वारा अपनी प्रजा को पुनःस्थापित करने का सजीव चित्र प्रस्तुत करता है। उस समय से 'पुनरुत्थान' शब्द का अर्थ परमेश्वर की प्रजा के किसी प्रकार के पुनः–शरीरीकरण से जुड़ गया। यह तब घटित होगा जब परमेश्वर अंततः अपनी प्रजा को क्षमा करेगा, उनके निर्वासन में हुई 'मृत्यु' को समाप्त करेगा, उनके शत्रुओं को पराजित करेगा और पृथ्वी पर अपने राज्य का नया युग लाएगा। यह संसार की पुरानी भ्रष्ट व्यवस्था का अंत करेगा और सभी धर्मी मृतकों को उठाकर उन्हें नई सृष्टि में सहभागी बनाएगा।

अचानक, शिष्यों ने दावा करना शुरू किया कि यह हुआ है– पूरे इस्राएल राष्ट्र के लिए नहीं, बल्कि एक व्यक्ति–यीशु–के लिए, वर्तमान युग के बीच में।

"समूह के रूप में इस विषय पर बातचीत करें और देखें कि इससे आपके लिए कौन–से विचार और भावनाएँ उत्पन्न होती हैं।

यीशु के पुनरुत्थान का अर्थ 15 मिनट

इसके बावजूद कि यीशु ने अपने साथियों के साथ रहते हुए कुछ बातें कही थीं, शिष्यों को उनके पुनरुत्थान की अपेक्षा नहीं थी। ईस्टर की घटनाओं के प्रकाश में प्रथम मसीहीयों को अपने नज़रीये को बदलना पड़ा। वास्तव में क्या हुआ था? बिशप ह्यूग मोंटेफियोर तर्क देते हैं कि पौलुस के लिए यीशु का पुनरुत्थान इन बातों का अर्थ रखता था:

- यीशु की सेवकाई की पुष्टि परमेश्वर द्वारा की गई (रोमियों 1:4)
- क्रूस सम्पूर्ण सृष्टि के 'निर्वासन' को समाप्त करने और बुराई व मृत्यु को पराजित करने का साधन है (फिलि. 2:9, रोमियों 8:1)
- परमेश्वर का नया युग, उसका राज्य, पुराने क्रम में प्रवेश कर चुका है (रोमियों 6:8)
- जो मसीह के हैं उन्हें जीवित किए जाने का आश्वासन दिया गया है (1 कुरिन्थियों 15:20)

ह्यूग मोंटेफियोर, कन्फरमेश्न नोटबुक द कंटेट ऑफ क्रिस्चीयन बलीफ, सीपीसीके, 1984.

समूह के लिए प्रश्न

- क्या इनमें से कोई सत्य यीशु के ऐतिहासिक शारीरिक पुनरुत्थान पर निर्भर करता है?
- समूह उन धर्मशास्त्रियों के बारे में क्या सोचता है जो पुनरुत्थान को 'मिथक' मानते हैं?

अपनी तैयारी का उल्लेख यहाँ करें।

पुनरुत्थान के लोग 20 मिनट

समूह कार्य

- मसीही होने के नाते हमें बुलाया गया है कि हम क्रूस पर चढ़े और पुनर्जीवित मसीह की सामर्थ्य को अपने जीवन और कार्यों में प्रकट होने दें।
- उन शब्दों, चित्रों और शीर्षकों को देखें जिन्हें आप लेकर आए हैं, जो संसार के 'निर्वासन' को दर्शाते हैं।
- जो विषय सामने आएँ, उनमें से कुछ को पोस्ट–इट नोट्स पर लिखें।

समूह के रूप में अपने विचार पोस्ट–इट पर लिखें और सबके सामने रखें।

सोचें कि हमारे जीवन और सेवकाई में मसीह का पुनरुत्थान किस प्रकार प्रकट होता है।

समापन आराधना 5 मिनट

केंद्र में एक बड़ी मोमबत्ती जलाएँ जो पुनरुत्थान का प्रतीक हो। प्रत्येक सदस्य उस मोमबत्ती से या एक–दूसरे से अपनी मोमबत्ती जलाएँ।

गोलाकार में खड़े होकर कुछ सदस्य शोकसभा की शुरुआत में बोले जाने वाले सांत्वनादायक शास्त्र वचन ज़ोर से पढ़ें:

> *''यीशु ने उससे कहा, "पुनरुत्थान और जीवन मैं ही हूँ, जो कोई मुझ पर विश्वास करता है वह यदि मर भी जाए तौभी जीएगा, और जो कोई जीवित है और मुझ पर विश्वास करता है, वह अनन्तकाल तक न मरेगा।''* (यूहन्ना 11:25–26)
>
> *"क्योंकि परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम रखा कि उसने अपना एकलौता पुत्र दे दिया, ताकि जो कोई उस पर विश्वास करे वह नष्ट न हो, परन्तु अनन्त जीवन पाए।* (यूहन्ना 3:16)
>
> *''क्योंकि यदि हम विश्वास करते हैं कि यीशु मरा और जी भी उठा, तो वैसे ही परमेश्वर उन्हें भी जो यीशु में सो गए हैं, उसी के साथ ले आएगा।''*
>
> *''तब हम जो जीवित और बचे रहेंगे उनके साथ बादलों पर उठा लिये जाएँगे कि हवा में प्रभु से मिलें और इस रीति से हम सदा प्रभु के साथ रहेंगे। इस प्रकार इन बातों से एक दूसरे को शान्ति दिया करो।''* (1 थिस्सलुनीकियों 4:14, 17–18)
>
> *''हम मिट नहीं गए, यह यहोवा की महाकरुणा का फल है, क्योंकि उसकी दया अमर है। प्रति भोर वह नई होती रहती है। तेरी सच्चाई महान् है।''* (विलापगीत 3:22–23)

सब मिलकर एक–दूसरे को अनुग्रह के वचन कह कर समापन करें।

आगे की तैयारी 5 मिनट

## मॉड्यूल तीन:	मसीही सिद्धांत का विकास

## सत्र 5:	मसीह फिर आएंगे

तैयारी

एक प्रमुख मसीही सिद्धांत यह है कि यीशु फिर लौटेंगे ताकि सृष्टि को नया करने और परमेश्वर के राज्य को उसकी संपूर्णता में स्थापित करने के लिए। इस सप्ताह हम पहले तीन सुसमाचारों मत्ती, मरकुस और लूका (जिन्हें सामूहिक रूप से 'सिनॉप्टिक गॉस्पेल्स' कहा जाता है) पर ध्यान केंद्रित करेंगे ताकि राज्य के विषयों पर विचार कर सकें। मत्ती में इसे 'स्वर्ग का राज्य' कहा गया है, मरकुस और लूका के सुसमाचार में 'परमेश्वर का राज्य' कहा गया है। यीशु अपनी सेवकाई की शुरुआत इस घोषणा से करते हैं:
''मन फिराओ, क्योंकि स्वर्ग का राज्य निकट आया है।'' (मत्ती 4:17)

मसीही धर्मशास्त्र में माना जाता है कि परमेश्वर का राज्य यीशु के अवतार के साथ आ चुका है और वर्तमान में सक्रिय है, परंतु यह राज्य अपनी संपूर्णता में तब आएगा जब यीशु महिमा में लौटेंगे– इसे ''अभी है और अभी नहीं'' वाक्यांश में संक्षेपित किया गया है। हम इन बीच के समयों में जीते हैं। सुसमाचारों से कुछ उदाहरण सोचें जो निम्नलिखित विषयों को दर्शाते हैं। आप परिशिष्ट 3 का भी संदर्भ ले सकते हैं।

परमेश्वर का राज्य अभी

परमेश्वर का राज्य आने वाला है

सिनॉप्टिक सुसमाचारों में दृष्टांत

यीशु ने अपनी शिक्षा में **दृष्टांतों** का व्यापक उपयोग किया।

जॉन ड्रेन हमें बताते हैं कि यीशु के दृष्टांत मूल रूप से परमेश्वर के राज्य के बारे में सिखाने के लिए हैं। वे सिखाते हैं:

- **राजा का चरित्र** – अयोग्य के प्रति परमेश्वर का प्रेम (खोई हुई भेड़, दो पुत्रों का पिता)
- **राजा के प्रति हमारी प्रतिक्रिया** – छोटे पुत्र का पश्चाताप, चुंगी लेने वाले की प्रार्थना, वह पुत्र जो दाख की बारी में काम नहीं करना चाहता था, पर बाद में करता है (मत्ती 21:28–31)
- **राजा का समुदाय** – क्षमा करने वाला और दयालु। उस व्यक्ति का दृष्टांत जिसका ऋण क्षमा किया गया, पर वह दूसरे से ऋण वसूलता है (मत्ती 18:21–35) नेक सामरी का आदर्श (लूका 10:25–37)
- **आने वाला राज्य** – अक्सर यीशु को स्वर्गीय, अलौकिक 'मनुष्य के पुत्र' के रूप में लौटते हुए दिखाकर। जैसे– गेहूँ और जंगली पौधों का दृष्टांत (मत्ती 13:24–30), भेड़ों और बकरियों का दृष्टांत (मत्ती 25:31–46), महान भोज का दृष्टांत (लूका 14:15–24)।

ये सरल कहानियाँ, जो सुननेवालों की रोज़मर्रा की दुनिया पर आधारित थीं, अर्थ से भरपूर और अक्सर चुनौतीपूर्ण थीं, सांस्कृतिक मानदंडों को उलट देती थीं। उदाहरण के लिए, यीशु ने एक तिरस्कृत सामरी को अपने पड़ोसी से प्रेम करने की कहानी का नायक बनाया। जॉन ड्रेन कहते हैं, "यीशु के दृष्टांत धर्म पर प्रवचन की तरह नहीं बल्कि कला के कार्यों की तरह हैं, और जैसे सभी कला में उनके पात्र और परिस्थितियाँ सार्वभौमिक गुण लिए हुए हैं जिन्हें कोई भी समझ सकता है, क्योंकि वे इस मूल स्थिति से संबंधित हैं कि मनुष्य होने का क्या अर्थ है।"

इग्नेशियन आध्यात्मिकता में पाठक को दृष्टांत से कल्पनाशील रूप से जुड़ने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है: कहानी में स्वयं को उपस्थित मानना या भीड़ में होकर कहानी सुनना– उस समय के दृश्य, ध्वनियाँ, विचार और भावनाएँ अनुभव करना, यह देखना कि ध्यान कहाँ केंद्रित होता है और यह खोजना कि परमेश्वर इसके माध्यम से क्या प्रकट करना चाहते हैं। यह शास्त्र को इस अपेक्षा के साथ पढ़ने का अभ्यास है कि यह परमेश्वर का जीवित वचन है और परमेश्वर इसके द्वारा हमसे बात करते हैं।

एक दृष्टांत चुनें और उसे ऊपर बताए गए कल्पनाशील और प्रार्थनापूर्ण तरीके से पढ़ें।

आने वाला राज्य

आप यूट्यूब पर निम्नलिखित संगीत सुनना चाह सकते हैं:

– लो ही कमस विद क्लाऊडस डीसैंडिंग

– आई कैन ओनली इमैजिन

परमेश्वर के आने वाले राज्य के बारे में आपके क्या विचार हैं? आप इन्हें नीचे दिए गए बॉक्स में लिख सकते हैं:

पढ़ें

यहेजकेल 37:1–14

या

1 कुरिन्थियों 15:35–57

ये खंड आपको आने वाले राज्य के बारे में क्या सुझाव देते हैं?

मॉड्यूल तीनः मसीही सिद्धांत का विकास

सत्र 5: मसीह फिर आएंगे

उद्देश्यः यीशु की शिक्षा को परमेश्वर के राज्य पर वर्णित करना और उसका अन्वेषण करना आने वाले राज्य के स्वरूप पर विचार करना

प्रारंभिक प्रार्थना 5 मिनट

तैयारी पर चिंतन 15 मिनट

वर्तमान में परमेश्वर का राज्य 30 मिनट

फ्लिपचार्ट पर नीचे दिए गए दो प्रश्नों से कुछ विचार लिखेंः

1. परमेश्वर के राज्य की विशेषताएँ क्या हैं?
2. आज की दुनिया में परमेश्वर के राज्य के चिन्ह क्या हैं?

विचार करें कि "कलीसिया को परमेश्वर के राज्य का पूर्वस्वाद, चौकी और गवाही के रूप में स्थापित किया गया है।" – यीशु ने इसे समझाने के लिए ''प्रकाश, नमक और खमीर'' की उपमा दी।

आप इसके बारे में क्या सोचते हैं?

कलीसिया के कुछ उदाहरण सोचें जहाँ उसने राज्य को अच्छे से मूर्त रूप दिया हो।

फ्लिपचार्ट पर लिखे विचारों को देखते हुए सोचेंः

आपकी कलीसिया परमेश्वर के राज्य की गवाही देने की इस बुलाहट में कैसे बढ़ सकती है?

विश्राम

आने वाला परमेश्वर का राज्य 30 मिनट

कुछ समय निकालकर उस परमेश्वर के राज्य की कल्पना करें जो आने वाला है।

कौन से विचार, भावनाएँ और चित्र मन में आते हैं?

आपको क्या सांत्वना देता है और क्या उलझन या चिंता उत्पन्न करता है?

समूह कार्य
यदि प्रत्येक समूह नीचे दिए गए अंशों में से कुछ को ले और नीचे दिए गए प्रश्नों पर विचार करेः

प्रकाशितवाक्य 7: 9–17
लूका 14: 15–24
यशायाह 35
यशायाह 2:1–5
यहेजकेल 37:1–14
1 कुरिन्थियों 15:35–57

- ये अंश आने वाले परमेश्वर के राज्य के बारे में क्या सुझाव देते हैं?
- इनमें कौन–सी चित्रात्मक भाषा/रूपक का प्रयोग किया गया है और हम उससे आने वाले राज्य की वास्तविकता के बारे में क्या निष्कर्ष निकाल सकते हैं?

जब समूह फिर से एकत्र हों, तो इन विचारों और भावनाओं पर बातचीत करें।

"अब और अभी नहीं" में जीना 20 मिनट

हमारा परमेश्वर के राज्य का समझने को यह बात आकार देती है कि हम अपने विश्वास को कैसे जीते हैं।

इतिहास में मसीही जनों ने कभी 'आ चुका राज्य' पर और कभी 'आने वाला राज्य' पर अधिक बल दिया है।

- 'आ चुका राज्य' पर बल देने का रूप कैसा होगा?
- 'आने वाला राज्य' पर बल देने का रूप कैसा होगा?
- इन दृष्टिकोणों की शक्तियाँ और सीमाएँ क्या हैं?
- 'अब और अभी नहीं' दोनों में जीना आपके लिए क्या अर्थ रखता है?

समापन आराधना 10 मिनट

''प्रभु की प्रार्थना'' पिछले 2000 वर्षों से मसीही प्रार्थना और आराधना का केंद्र रही है। हम प्रतिदिन प्रार्थना करते हैं:

'हे हमारे पिता, तू जो स्वर्ग में है,
तेरा नाम पवित्र माना जाए।
तेरा राज्य आए।
तेरी इच्छा जैसी स्वर्ग में पूरी होती है, वैसे पृथ्वी पर भी हो।

हमारी दिन भर की रोटी आज हमें दे।
और जिस प्रकार हम ने अपने अपराधियों को क्षमा किया है,
वैसे ही तू भी हमारे अपराधों को क्षमा कर।
और हमें परीक्षा में न ला, परन्तु बुराई से बचा
क्योंकि राज्य और पराक्रम और महिमा सदा तेरे ही हैं।'
आमीन।

इन वचनों पर कुछ समय सोचें और समझें कि आप वास्तव में किसके लिए प्रार्थना कर रहे हैं। फिर सब मिलकर प्रभु की प्रार्थना करें।

आगे की तैयारी 5 मिनट

अगले सत्र में हम ''पवित्र आत्मा'' पर विचार करेंगे।

तैयारी के लिए, आधा समूह पुराने नियम में पवित्र आत्मा का अध्ययन करेगा और आधा नया नियम में – तय करें कि कौन सा समूह किस भाग का अध्ययन करेगा।

मॉड्यूल तीन : मसीही सिद्धांत का विकास

सत्र 6 : हम पवित्र आत्मा में विश्वास करते हैं

तैयारी

कुछ समय निकालकर सोचें कि जीवन में आपको किस बात की चिंता होती है और आप क्यों चिंतित होते हैं।

यदि आपको सहायक लगे तो इन विचारों को लिख लें।

टॉम राइट की पुस्तक 'फॉलोइंग जीसस' से यह अंश पढ़ें:

क्या आप जानते हैं कि बाइबल में सबसे अधिक बार दिया गया आदेश कौन–सा है?

डरो मत। डरो मत। भयभीत न हो। डरो मत....

यह आश्चर्यजनक आज्ञा उस संसार में आती है जहाँ हम डर में खाते, सोते और साँस लेते हैं। हम गर्भ की गर्माहट से निकलकर ठंडी सृष्टि में आते हैं और अकेले होने, प्रेमहीन होने, त्याग दिए जाने से डरते हैं....और ये तो बड़ी चिंताएँ हैं। इनके अलावा दर्जनों छोटे भय हैं जो एक–दूसरे को बढ़ाते हैं....और इनके पीछे मृत्यु का भय छिपा है....

इसलिए आप देख सकते हैं कि यह आज्ञा 'मत डरो' निभाना सबसे कठिन क्यों है....

और यीशु का पुनरुत्थान यह आश्चर्यजनक आदेश देता है: मत डरो, क्योंकि जिसने संसार बनाया वही परमेश्वर है जिसने यीशु को मृतकों में से जिलाया और अब आपको उसका अनुसरण करने के लिए बुलाता है.... इस परमेश्वर पर विश्वास करने का मतलब यह मानना है कि सब ठीक हो जाएगा और इस विश्वास का अंततः भय के साथ कोई मेल नहीं है। जैसा कि यूहन्ना अपने पत्र में कहता है, 'सिद्ध प्रेम भय को दूर कर देता है' (1 यूहन्ना 4:18)। और पुनरुत्थान सिद्ध प्रेम का प्रकाशन है...परमेश्वर का हमारे प्रति सिद्ध प्रेम। यही कारण है कि यद्यपि हम जीवन के किसी भी चरण में यह सत्य जान सकते हैं कि परमेश्वर ने यीशु को मृतकों में से जिलाया, फिर भी इस

विश्वास को हमारे विचारों, भावनाओं और चिंताओं में पूरी तरह समाने देने में पूरी उम्र लग जाती है।" [3]

एन.टी.राइट, 'फोलोइंग जीससः बिब्लीकल रिफलैक्शनस ऑन डिसाइपलशिप' (लंदनःएसपीसीके, 1994)

चिंतन करेंः

- व्यक्तियों और समुदायों के रूप में हमें क्या चाहिए ताकि हम पुनरुत्थान की आशा को अपने अंतरतम में ग्रहण कर सकें?
- इस प्रक्रिया में आप क्या सोचते हैं कि पवित्र आत्मा की क्या भूमिका है?

बाइबल में पवित्र आत्मा

समूह का आधा हिस्सा पुराने नियम में और आधा हिस्सा नए नियम में पवित्र आत्मा की खोज करे।

दिए गए बाइबल संदर्भों को देखें और इन बातों पर नोट्स बनाएंः

- आत्मा की भूमिका
- आत्मा के लिए प्रयोग किए गए चित्र/रूपक
- परमेश्वर के साथ निहित संबंध

समूह 1ः पुराना नियम

आत्मा के लिए सबसे सामान्य इब्रानी शब्द 'रूआख' है। लेकिन 'रूआख' के कई अर्थ और संबंध हैं। इस कारण इसे केवल एक अंग्रेजी शब्द से अनुवाद करना कठिन है।

इन संदर्भों को देखते समय ध्यान दें कि "रूआख" या आत्मा से कितने विविध विचार जुड़े हैंः

उत्पत्ति 1:2, 2:7, 41:38—39	अय्यूब 26:12—13	निर्गमन 14:21, 35:31
यशायाह 61:1	व्यवस्थाविवरण 34:9	यहेजकेल 37:9—10
न्यायियों 14:6	जकर्याह 7:12	1 शमूएल 10:6

समूह 2: नया नियम

मत्ती 1:18, 10:20 रोमियों 8:9, 26 मरकुस 1:10, 12

1 कुरिन्थियों 12:4–6 लूका 4:18 गलतियों 4:6

यूहन्ना 3:8, 4:24, 14:26, 20:22 इफिसियों 4:4–6 प्रेरितों के काम 2:4, 9:17

2 थिस्सलुनीकियों 2:13

मॉड्यूल तीनः   मसीही सिद्धांत का विकास

सत्र 6:   हम पवित्र आत्मा में विश्वास करते हैं''

उद्देश्य : परमेश्वर को पवित्र आत्मा के रूप में मानने के हमारे विश्वास के पहलुओं की जाँच करना और हमारे जीवन में पवित्र आत्मा के कार्य पर चिंतन करना।

प्रारंभिक प्रार्थना 5 मिनट

तैयारी पर चिंतन 15 मिनट

परमेश्वर का आत्मा 10 मिनट

"पवित्र आत्मा का उल्लेख बहुत भ्रम उत्पन्न करता है।"

फिलिप यांसी, *'रीचिंग फॉर द इनविजिबल गॉड'*, ज़ोंडरवन, 2000

फिलिप यांसी आगे कुछ समस्याओं का उल्लेख करते हैं ताकि यदि आप स्वयं किसी को न सोच पाएँ तो भी समझ सकें। इसी प्रकार, इंग्लैंड के चर्च की 'डॉक्ट्रिन कमीशन' की रिपोर्ट *'वी बिलीव इन द होली स्पिरिट'* कहती है:

"....सभी प्रशिक्षित मसीही विश्वासियों और निश्चित रूप से सभी धर्मशास्त्रीय विचारकों ने सुना है कि पवित्र आत्मा है, परंतु बहुत से मसीही लोगों ने आत्मा पर अपने विचार और प्रार्थना में अधिक ध्यान नहीं दिया है। व्हिट्सन (या पेंटेकोस्ट) एक पर्व के रूप में साधारण रविवार से अधिक उपासकों को आकर्षित नहीं करता...." (2)

'वी बिलीव इन द होली स्पिरिट' चर्च हाऊस पब्लिशिंगए 1993

इसी उपेक्षा की पृष्ठभूमि में बीसवीं शताब्दी के अनेक नाटकीय करिश्माई पुनरुद्धार हुए हैं, जिनके बारे में कुछ लोग कह सकते हैं कि उन्होंने विषय को और धुंधला कर दिया। (अनुमान है कि आज विश्व में लगभग 560 मिलियन पेंटेकोस्टल/करिश्माई मसीही हैं – जो 1908 में शुरू हुए एक ही पुनरुद्धार से प्रेरणा लेते हैं!)

आप क्या सोचते हैं? ऊपर दिए गए अंशों पर समूह में अपनी प्रतिक्रियाएँ साझा करें।

इस विश्वास के क्षेत्र में कौन–सी समस्याएँ या कठिनाइयाँ हैं?

यदि पवित्र आत्मा की उपेक्षा हो रही है, तो आप कौन–से प्रमाण देंगे और कौन–से कारण सुझाएँगे?

क्या यह हवा का पीछा करने जैसा है – पवित्र आत्मा कौन या क्या है?

बाइबल की गवाही 40 मिनट

आइए पवित्र आत्मा की खोज बाइबल में आत्मा से जुड़े विभिन्न शब्दों, चित्रों और कार्यों की जाँच करके शुरू करें ।

समूह कार्य

अपने दो शोध समूहों (पुराना नियम और नया नियम) में बंट जाएँ।

दूसरे समूह के लिए एक संक्षिप्त प्रस्तुति तैयार करें जिसमें निम्न जानकारी साझा करें:

- आत्मा के लिए प्रयोग किए गए शब्द और चित्र
- आत्मा की छवियाँ और कार्य पुरुष, स्त्री या निर्जीव रूप में हैं या नहीं
- परमेश्वर के साथ निहित संबंध
- आत्मा का कार्य या क्रिया

प्रस्तुतियों के अंत में, पुराने और नए नियम में आत्मा की तस्वीरों के बीच किसी भी निरंतरता या असंगति के बिंदुओं को उजागर करें।

- नए नियम के लेखक पुराने नियम की विचारधाराओं और चित्रों को कैसे विकसित करते हैं?
- पवित्र आत्मा के बारे में उनकी समझ या अनुभव में क्या विशिष्ट है?
- कुल मिलाकर, क्या पवित्र आत्मा को "पुरूष", "स्त्री'', या "निर्जीव" के रूप में प्रस्तुत किया गया है?

विश्राम

चर्च की गवाही 15 मिनट

प्रारंभिक चर्च के जीवन में पवित्र आत्मा के कार्य का महत्व नए नियम में स्पष्ट रूप से दिखाई देता है, परंतु आत्मा का सटीक स्वरूप अब भी कठिन है। यीशु ने घोषणा की, "परमेश्वर आत्मा है" (यूहन्ना 4:24), यह विचार प्रारंभिक मसीहीयों के लिए परिचित रहा होगा। उन्होंने अपने पवित्र आत्मा के अनुभव को पुराने नियम में दर्ज परमेश्वर के कार्य से जोड़ा, परंतु साथ ही वे यह भी समझते थे कि कुछ नया हो रहा है।

आगामी शताब्दियों के धर्मशास्त्री आत्मा को "परमेश्वर" कहने में संकोच करते रहे और 380 ईस्वी तक यह भ्रम था कि पवित्र आत्मा को एक कार्य, एक सृष्टिकर्ता, या परमेश्वर के रूप में देखा जाए। चौथी शताब्दी के अंत तक, पवित्र आत्मा की पूर्ण दिव्यता पिता और पुत्र के साथ उसके विशिष्ट संबंध और भूमिका के आधार पर स्पष्ट की गई।

हमारा पवित्र आत्मा में विश्वास उस परमेश्वर की ओर संकेत करता है जो विश्वासियों, चर्च और संसार के जीवन में व्यक्तिगत रूप से कार्य करता है।

मसीही परंपरा ने सामान्यतः पवित्र आत्मा के कार्य को तीन क्षेत्रों में समझा हैः

प्रकाशन – परमेश्वर को मानवता पर प्रकट करना

पवित्रीकरण – मानवता को परमेश्वर के जैसा बनाना

सशक्तिकरण – चर्च को आत्मा के वरदानों से संपन्न करना

आत्मा को पहचानना 15 मिनट

व्यक्तिगत रूप में सोचें कि पवित्र आत्मा आपके जीवन और चर्च में कैसे कार्य करता है। 5 मिनट

आप चाहें तो ऊपर दिए गए तीन क्षेत्रों में से किसी एक पर ध्यान केंद्रित कर सकते हैं।

आप आत्मा के कार्य को अपने जीवन में कैसे वर्णित करेंगे?

आपको क्या लगता है कि कौन–सी बातें आपको परमेश्वर की आत्मा के प्रति अधिक खुला बनाती हैं?

सामूहिक रूप में अपने व्यक्तिगत चिंतन को पूरे समूह के साथ साझा करें। 10 मिनट

समापन आराधना 10 मिनट

ध्यान दें: पवित्र आत्मा पर ध्यान देते समय उपयुक्त संगीत, मोमबत्तियाँ, चित्र या पदों का उपयोग करें।

आगे की तैयारी 5 मिनट

मॉड्यूल तीन: मसीही सिद्धांत का विकास

सत्र 7 : यूहन्ना की गवाही

तैयारी

कुछ सप्ताह पहले हमने मत्ती, मरकुस और लूका के 'समान्तर सुसमाचारों' को देखा था, जिनका मुख्य ज़ोर परमेश्वर के राज्य पर था और जिनमें दृष्टान्तों का प्रयोग किया गया था। अब हम अपना ध्यान यूहन्ना के सुसमाचार की ओर करेंगे। यीशु के जीवन का यह विवरण अन्य सुसमाचारों से अलग अनुभव देता है। इसकी एक विशेषता यीशु के "मैं हूँ" कथन हैं। ये मूसा की परमेश्वर से हुई मुलाकात को याद दिलाते हैं, जहाँ परमेश्वर ने स्वयं को "मैं हूँ" (निर्गमन 3:14) के रूप में प्रकट किया था। यह यीशु की दिव्य पहचान पर बल देता है।

वचन पर मनन

आने वाले सप्ताह में आपको यीशु के किसी एक "मैं हूँ" कथन पर ध्यान केंद्रित करने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है। आप आने वाले सप्ताहों में अलग–अलग कथनों को आज़मा सकते हैं, लेकिन इस सप्ताह, प्रत्येक दिन की शुरुआत में कम से कम दो मिनट तक इस कथन को धीरे–धीरे दोहराएँ:

"पुनरुत्थान और जीवन मैं हूँ।"

शब्दों के बीच विराम लें, उन्हें मन में गहराई से सोचें और इस कथन को आपसे बात करने का अवसर दें। दिन भर में, जो भी आप कर रहे हों, यह कथन आपके मन में बार–बार आता रहे।

चौथी शताब्दी के सन्यासी संत एंथनी इसकी ऊँट और घोड़े के जीवन से तुलना करते हैं। उन्होंने लिखा:

> *"ऊँट को थोड़े भोजन की आवश्यकता होती है, वह उसे भीतर रखता है जब तक कि वह अस्तबल में लौट न आए। फिर वह भोजन को ऊपर लाता है और उस पर बार–बार जुगाली करता है जब तक कि वह भोजन उसकी हड्डियों और मांस में समा न जाए। घोड़ा, हालांकि, लगातार खाता रहता है और जल्दी ही जो खाया है उसे खो देता है। हम घोड़े जैसे न हों, जो लगातार परमेश्वर के वचन को दोहराते हैं पर उसका पालन नहीं करते। बल्कि हम ऊँट जैसे हों, जो परमेश्वर के वचन को दोहराते हैं और उसे भीतर रखते हैं जब तक कि हम उसे जी न लें।"*

इस बॉक्स में लिखें कि यह कथन आपको क्या कहता है।

यूहन्ना के सुसमाचार को देखें और उसमें मौजूद कहानियों को नोट करें। कौन–सी कहानियाँ अन्य सुसमाचारों में भी हैं और कौन–सी केवल यूहन्ना में खास हैं?

ऐसे किसी अंश पर विचार करें जो केवल यूहन्ना के सुसमाचार में आता है – आपको क्यों लगता है कि उसने इसे शामिल किया? नीचे अपने विचार लिखें:

डेविड फोर्ड अपनी कमेंटरी की प्रस्तावना में लिखते हैं:

> *"सभी सुसमाचारों में, यूहन्ना सबसे अधिक व्यक्ति पर ध्यान केंद्रित करता है, चाहे वह यीशु से मुलाकात हो या उसकी शिक्षा। अच्छा चरवाहा प्रत्येक को नाम लेकर बुलाता है। क्योंकि यीशु जीवित है और परमेश्वर की तरह उपस्थित है, यीशु के बारे में पढ़ना भी उससे मिलने की घटना हो सकती है: एक–से–एक। इसका अर्थ है कि आप स्वयं उसकी उपस्थिति में हैं, उससे प्रेम किए जाते हैं जैसे वह सुसमाचार के लेखक थे, और आपको गहरे, व्यापक, ऊँचे और सदा के लिए अर्थ, जीवन और प्रेम की प्रचुरता में आमंत्रित किया जाता है।"*[1]

फोर्ड बताते हैं कि कथा का मुख्य विषय है – "यीशु कौन है।" यूहन्ना द्वारा दर्ज किए गए चिन्ह और "मैं हूँ" कथन सब यीशु की पहचान को "वचन देहधारी हुआ" के रूप में रेखांकित करते हैं। यूहन्ना का सुसमाचार पवित्र आत्मा पर भी सबसे अधिक ध्यान देता है, जिन अंशों को हमने पिछले सप्ताह देखा था।

अगला पाठन

अन्य "मैं हूँ" कथनों को देखें – आज आपके लिए कौन–सा सबसे अधिक अर्थपूर्ण है?

यूहन्ना 6:48	''जीवन की रोटी मैं हूँ।"
यूहन्ना 8:12	"जगत की ज्योति मैं हूँ।"
यूहन्ना 10:7	"भेड़ों के लिए द्वार मैं हूँ।"
यूहन्ना 10:11	"अच्छा चरवाहा मैं हूँ।"
यूहन्ना 14:6	"मार्ग, सत्य और जीवन मैं हूँ।"
यूहन्ना 15:5	"मैं दाखलता हूँ, तुम डालियाँ हो।"

[1] फोर्ड डी एफ (2021) **द गास्पल ऑफ जॉनः ए थ्योलोजिकल कमेंटरी** बेकर अकेडमीक, ग्रैंड रैपिडस

बाइबल में गहराई से उतरना

पहले सत्र में हमने बाइबल पढ़ने के विभिन्न तरीकों पर विचार किया था, अब हम इसे थोड़ा और आगे बढ़ाएँगे। बाइबल को समझने के कुछ तरीके इस प्रकार हैः

''लेखन शैली या साहित्यिक विधा'': इतिहास, कविता, कहानी, पत्र, रहस्योद्घाटन जैसी विधाओं को पहचानना हमें व्याख्या में मदद करता है।

''भाषा अध्ययन''ः बाइबल इब्रानी, अरामी और यूनानी भाषाओं में लिखी गई थी। हम में से अधिकांश लोग 'श्रेष्ठ अनुवाद' तक पहुँचने के लिए दूसरों के प्रयासों पर निर्भर रहेंगे। ये प्राचीन भाषाएँ हैं और इसलिए इन्हें अंग्रेजी में कैसे प्रस्तुत किया जाए, इस पर कुछ हद तक बहस होती है।

'पांडुलिपि (पाठ्य) विश्लेषण '': बाइबल के अंश हाथ से लिखकर विश्वासियों में बाँटे जाते थे। पाठ्य विश्लेषण शुरूआती संस्करणों को स्थापित करने का प्रयास करता है कि जिन्हें मूल पाठ का सबसे प्रामाणिक संस्करण माना जाता हैं।

''संदर्भात्मक विश्लेषण''ः यह दृष्टिकोण उस ऐतिहासिक, सामाजिक और सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य को समझने का प्रयास करता है जिसमें पाठ लिखा गया था। यह उस रचना की व्याख्या को उसके मूल लेखक और सुननेवालों की दृष्टि से संभव बनाता है।

''संपादन आलोचना''ः सुसमाचार लेखक दूसरों की कहानियों और सामग्री के संपादक जैसे अधिक हैं। हमारा सर्वोत्तम अनुमान यह है कि मत्ती और लूका दोनों ने मरकुस को अपने स्रोतों में से एक के रूप में उपयोग किया। उनकी भिन्नताओं से हमें उनके धार्मिक (धार्मिक–वैचारिक) ज़ोर को समझने में मदद मिलती है। एक सिद्धांत यह भी है कि कुछ समकालिक सुसमाचारों के लिए एक स्वतंत्र स्रोत मौजूद है, जिसे विद्वानों द्वारा ''क्यू'' (जर्मन शब्द 'क्यूऐला' जिसका अर्थ है 'स्रोत') कहा जाता है।

यूहन्ना कहानियों का उपयोग मत्ती, मरकुस और लूका से भिन्न रूप से करता है, मुख्यतः शिक्षा के आधार के रूप में। प्रारंभिक कलीसिया में कहानियाँ विशेष परिस्थितियों जैसे उपासना या शिक्षा में सुनाई जाती थीं। इन्हें उस रूप में नहीं लिखा गया था जैसा हमारे पास है, जब तक कि घटनाओं के घटित होने के

30 वर्ष बाद। और तब भी अधिकांश लोग पढ़ नहीं सकते थे और वे वचन को पढ़ने के बजाय सुनने पर निर्भर रहते थे। पिछले 2,000 वर्षों में अधिकांश मसीही शिष्यों के लिए यह स्थिति बनी रही।
अंततः संपादकों ने भी तैयार किए गए ग्रंथ में अपनी कुछ बातों को जोड़ा, जैसे कोई समाचारपत्र संपादक किसी रिपोर्ट में यहाँ–वहाँ ज़ोर बदल सकता है, इस प्रक्रिया को 'संपादन' कहा जाता है।

'कथात्मक आलोचना या विश्लेषण': यह देखने का प्रयास करता है कि कथावाचक क्या व्यक्त करना चाहता है और सुननेवाले क्या समझ सकते थेः और यह आज हमें कैसे संबोधित करता है–विशेषकर क्योंकि हम अपनी पूर्व–समझ को पाठ में लेकर आते हैं।

और भी है! **सामाजिक वैज्ञानिक दृष्टिकोण** पाठों को समझने के लिए समाजशास्त्र और मानवशास्त्र का उपयोग करते हैं। आलंकारिक आलोचना यह देखती है कि लेखक ने सामग्री को किस प्रकार लिखा या व्यवस्थित किया है ताकि पाठक को मनाया जा सके–प्राचीन विश्व में सार्वजनिक रूप से मनाने के लिए प्रयुक्त आलंकारिक विधियों के आधार पर। इसके अलावा **'वैचारिक' दृष्टिकोण** भी हैं जो पाठों को विशेष वैचारिक दृष्टिकोण से लिखा हुआ मानते हैं, जो कुछ पाठकों को हाशिये पर डाल देते हैं–जैसे गरीब और महिलाएँ।

बायां मस्तिष्क बनाम दायां मस्तिष्क

उपरोक्त में से अधिकांश हमारी जानकारी सीखने, विश्लेषण करने और तर्कपूर्ण सोच करने की क्षमता का उपयोग कर रहा है, जिसे अब हम जानते हैं कि हमारे मस्तिष्क के बाईं ओर से संसाधित किया जाता है। हमारे मस्तिष्क का दाहिना भाग सभी इंद्रियों को आकर्षित करता है, कल्पना करने और कल्पना करने की क्षमता रखता है और संगीत और कविता द्वारा संचालित होता है।
युगों से कलीसिया ने बाइबल के प्रति इस 'दाएँ–पक्षीय खुलने' को चित्रों और रंगीन काँच की कला कृतियों (और अब फिल्मों व वीडियो क्लिपों); रहस्य नाटकों में; इंद्रियात्मक उपासना में; बाइबल के पाठों के धीमे पठन और पुनरावृत्ति में; बाइबल के दृश्यों की कल्पना में; संगीत में पहचाना है। इसलिए इस पाठ्यक्रम में हम आपको आपके मस्तिष्क के दाएँ भाग से सीखने का परिचय देने का प्रयास करते हैं।

दूसरों के स्थान पर खड़े होना : हम अपनी कल्पना का उपयोग करके बाइबल की किसी घटना में विभिन्न दृष्टिकोणों से प्रवेश करते हैं। हम स्वयं को कहानी के अलग–अलग पात्रों के रूप में, प्रथम श्रोताओं के रूप में या आज के ऐसे व्यक्ति के रूप में कल्पना कर सकते हैं जिसके पास विश्वास का कोई अनुभव नहीं है।

भावनाओं से जुड़ना: बाइबल के अंश से जुड़ते समय उत्पन्न भावनाओं को पहचानना और उनका नामकरण करना, फिर प्रार्थना में उनका अन्वेषण करना– ये भावनाएँ हमें क्या प्रकट कर रही हैं?

कल्पनात्मक चित्रण: यह हमें प्रायः बाइबल की किसी घटना के संदर्भ में स्वयं पर चिंतन करने में मदद करता है, जैसे क्रूस के नीचे या ऊपरी कक्ष में।

ध्यानात्मक या चिंतनशील मननः ध्यानात्मक का अर्थ है बाइबल के किसी अंश को प्रारंभिक बिंदु के रूप में लेकर अपने विचारों को प्रवाहित होने देना–प्रचारक अक्सर इसी प्रकार तैयारी करते हैं। परंतु चिंतन करना का अर्थ है मन को केंद्रित रखने का प्रयास करना, प्रायः किसी विशेष शब्द या वाक्यांश पर।

विभिन्न दृष्टिकोणों का अर्थ यह है कि यदि हम केवल एक या दो तरीकों का उपयोग करें तो हम बाइबल का दुरुपयोग कर सकते हैं– हम लगभग किसी भी कार्य, विश्वास या दृष्टिकोण को उचित ठहराने के लिए एक पाठ ढूँढ सकते हैं– इसलिए हमें सावधान रहना चाहिए:

- किसी पद को संदर्भ से बाहर लेना– जिसे 'प्रूफ–टेक्स्टिंग' कहा जाता है।
- अपनी संस्कृति की बातें बाइबल में वापस पढ़ना।
- आज के लोगों को दोष देने के लिए बाइबल का उपयोग करना, जैसे यहूदियों या अन्य जातियों को।
- पाठ की अन्य या व्यापक समझ को सुनने से इनकार करना।

मॉड्यूल तीनः   मसीही सिद्धांत का विकास

सत्र 7 :   यूहन्ना की गवाही

उद्देश्यः नए नियम अध्ययन के विभिन्न दृष्टिकोणों का वर्णन और परीक्षण करना

संत यूहन्ना रचित सुसमाचार के कुछ पाठों पर 'दाएँ मस्तिष्क' दृष्टिकोण का प्रयोग करना

प्रारंभिक प्रार्थना	5 मिनट
तैयारी पर चिंतन	15 मिनट
संत यूहन्ना के सुसमाचार का अध्ययन	30 मिनट

''....परन्तु ये इसलिये लिखे गए हैं कि तुम विश्वास करो कि यीशु ही परमेश्वर का पुत्र मसीह है, और विश्वास करके उसके नाम से जीवन पाओ।''   यूहन्ना 20:31

हैंस रूदी वेबर (जो कई वर्षों तक वर्ल्ड कौंसिल ऑफ चर्चस के लिए बाइबल अध्ययन का नेतृत्व करते रहे) कहते हैं कि यूहन्ना का सुसमाचार बौद्धिक विश्लेषण से अधिक प्रार्थना और ध्यान के लिए आमंत्रित करता है। यह यीशु का दर्शन है, न कि केवल उनकी कहानी या व्याख्या।

समूह कार्य

तीन समूहों में बंट जाएँ।

अपने–अपने समूहों में नीचे दिए गए तीन कार्यों के आधार पर लगभग 5 मिनट की प्रस्तुति तैयार करें।

समूह 1: संदेश की घोषणा – यूहन्ना 1:1–18

यूहन्ना के सुसमाचार की यह प्रसिद्ध भूमिका अन्य सुसमाचारों से भिन्न प्रतीत होती है और संभवतः यूनानी दर्शन में डूबे लोगों को आकर्षित करने का प्रयास हो सकता है। लेस्ली न्यूबिगिन ने अपनी पुस्तक 'प्रॉपर कॉन्फिडेंस' में इस वाक्यांष पर निम्नलिखित टिप्पणी की है (पृष्ठ 4–5)

चौथे सुसमाचार का लेखक लोगोस (शब्द) से आरंभ करता है, जो पूर्वी भूमध्य सागर क्षेत्र के पाठकों यूनानी और यहूदी दोनों के लिए जाना–पहचाना शब्द था।

"पूर्वजों के लिए (यूनानियों के लिए), यह उस परम निरपेक्ष सत्ता की ओर संकेत करता था जो सम्पूर्ण ब्रह्मांड की एकता और व्यवस्था के मूल में थी। भारतीय उदाहरण में इसे 'धर्म' कहा जा सकता है। दूसरों के लिए (यहूदियों के लिए), यह जीवित और व्यक्तिगत प्रभु की ओर संकेत करता था, जिसके द्वारा उसने ब्रह्मांड की रचना की और उसे निरंतर बनाए रखा। यहाँ पाठक

से संपर्क स्थापित होता है। यह एक परिचित शब्द है, और हम मोटे तौर पर जानते हैं कि इसका क्या अर्थ है। लेकिन तुरंत ही लेखक ऐसे शब्दों का प्रयोग करता है जो इस सम्पर्क को तोड़ने की धमकी देते हैंः "शब्द देहधारी हुआ।" अब 'लोगोस' को यीशु नामक व्यक्ति से जोड़ा जाता है, जिसकी कहानी लेखक आगे बताने वाला है।

अब पाठक के सामने दो संभावनाएँ हैं। वह पुस्तक बंद कर सकता है । लेखक स्पष्ट रूप से निरर्थक बातें करता प्रतीत होता है। यूनानी या यहूदी किसी भी विचार–जगत में ऐसा कोई तरीका नहीं है जिसमें 'लोगोस' को किसी विशेष मानव से जोड़ा जा सके.... जब तक यूनानी और यहूदी विचार के स्वीकृत ढाँचे बने रहते हैं, यह लेखन किसी भी प्रकार से समझ में नहीं आता।

दूसरी संभावना यह है कि पाठक आगे पढ़े, उन लोगों की बात सुने जो कहानी सुनाते हैं.....

आपका कार्य है कि इस खंड का एक समकालीन संस्करण प्रस्तुत करें, जिससे दिखाया जा सके कि यीशु मसीह हमारे 21वीं सदी के संसार को क्या प्रदान करते हैं।

समूह 2ः दूसरों के स्थान पर खड़े होना – यूहन्ना 4:1–26

यीशु सामरी स्त्री से कुएँ पर मिलते हैं। संदर्भ हमें बताता हैः

- यहूदी सामरियों को विधर्मी और अशुद्ध मानते थे।
- स्त्री और पुरुष अकेले नहीं मिलते, जब तक कि कोई अनुचित कारण न हो।
- दोपहर की धूप में अकेली स्त्री पानी भरने आई, इसका अर्थ था कि वह समाज से बहिष्कृत थी और उसकी कई शादियाँ/संबंध चर्चा का विषय थे।

आपका कार्य है कि कहानी को अपने शब्दों में दोहराएँ, ताकि तीन समूह सीख सकें, जो इससे आहत हो सकते हैंः

- यीशु के नज़दीकी शिष्य
- अन्य सामरी स्त्रियाँ
- मंदिर के याजक

समूह के सदस्यों को इनकी भूमिका निभाने के लिए कहें और कहानी को उनके दृष्टिकोण पुनःब्यान करें।

समूह 3: पवित्र आत्मा की कल्पना करना

निम्नलिखित खंडों में से **एक** चुनें:

यूहन्ना 3:3–8 यूहन्ना 4:14 और 7:37–39

यूहन्ना 16:7–15 (यूहन्ना को अक्सर पवित्र आत्मा के बारे में सबसे सुसंगत शिक्षा प्रदान करने वाले के रूप में देखा जाता है।)

चर्चा करें कि यीशु की शिक्षा को सुनने वालों और हमारे लिए क्या अर्थ रखती है, आत्मा का स्वागत कैसे किया जा सकता है, लोग कहाँ संघर्ष कर सकते हैं।

फिर चार्ट पेपर पर कुछ सरल कार्टून बनाइए, जिनमें इन स्वागतों/संघर्षों को दिखाया जाए। इनमें संवाद बुलबुले और विचार बुलबुले शामिल करें। इन कला–कृतियाँ को उत्कृष्ट होने की आवश्यकता नहीं है, हमारा उद्देश्य है कि वे उस सार को पकड़ें कि आत्मा किस प्रकार आती है।

विश्राम

प्रस्तुतियाँ

20 मिनट

कल्पनाशील चिंतन यूहन्ना 20:19–23 20 मिनट

समूह में से कोई व्यक्ति लोयोला के संत इग्नेशियस[2] के अभ्यास पर आधारित चिंतन के इस रूप का नेतृत्व कर सकता है।

- सबको आरामदायक स्थिति में बैठने के लिए कहें
- पाठ को धीरे–धीरे पढ़ें
- समूह को प्रोत्साहित करें कि वे कुछ गहरी साँसें लें और आराम करें, फिर कल्पना करें कि वे उसी कमरे में हैं, उसके दृश्य और उसकी सुगंध को महसूस करें। सोचें कि पाठ की शुरुआत में वे कौन–सी भावनाएँ अनुभव कर सकते हैं और फिर कहानी के आगे बढ़ने पर वे भावनाएँ कैसे बदल सकती हैं।
- पाठ को फिर से पढ़ें
- 5–8 मिनट मौन रखें
- प्रार्थना के साथ सबको वापस लाएँ

इस अभ्यास के बाद 2 और 3 के छोटे समूहों में साझा करें कि यह अनुभव कैसा लगा।

अंतिम प्रार्थना

2 इग्नेशियस ऑफ लोयोला (1495–1556) 'सोसाइटी ऑफ जीसस' या 'जेसुइट्स' के संस्थापक थे। उन्होंने कल्पना और इंद्रियों के प्रयोग पर बल दिया, ताकि बाइबल का अनुभव किया जा सके और ईसाई को अधिक मसीह–सदृश मानकों की ओर अग्रसर किया जा सके।

मॉड्यूल तीनः मसीही सिद्धांत का विकास

सत्र 8 : प्रारंभिक कलीसिया की वृद्धि

तैयारी

नए नियम का संक्षिप्त अवलोकन

नए नियम में विभिन्न प्रकार की रचनाएँ हैं जिन्हें इस प्रकार संक्षेपित किया जा सकता हैः

- **सबसे प्रारंभिक लेखन** – पत्रियाँ, जो प्रवासी कलीसियाओं को लिखी गई थीं।
- **सुसमाचार** – यीशु के जीवन की कहानियाँ।
- **प्रेरितों के काम** – प्रारंभिक कलीसिया की वृद्धि का विवरण।
- **प्रकाशितवाक्य** – संत यूहन्ना को दिया गया एक रहस्यमय दर्शन।

ये विवरण विशेष लोगों, विशेष स्थानों, विशेष समय और विशेष उद्देश्य के लिए लिखे गए थे। पत्रियों को पढ़ना ऐसा है जैसे हम टेलीफोन वार्तालाप का केवल एक पक्ष सुन रहे हों और हमें दूसरे पक्ष की बातों का अनुमान लगाना पड़े।

फिर भी, इन पुस्तकों ने मसीही धर्मशास्त्र और सिद्धांत को आकार दिया है और आज भी ऐसा कर रही हैं। जब हम नए नियम के साहित्य की व्याख्या करते हैं, तो हम यह सोच सकते हैं कि कौन–सी बातें मूल पाठकों के लिए विशेष थीं और कौन–सी सभी शिष्यों के लिए सामान्य हैं – इस पर हम अलग–अलग निष्कर्ष पर पहुँच सकते हैं!

इस सप्ताह हम अपना ध्यान 'प्रेरितों के काम' पर केंद्रित करेंगे, जो हमें प्रारंभिक कलीसिया के लोगों, संस्कृति और चुनौतियों के बारे में बताती है और मसीही सिद्धांतों के उदय को दर्शाता है।

'प्रेरितों के काम' की पुस्तक में उल्लिखित कुछ कहानियों, व्यक्तियों और स्थानों पर ध्यान दें।

प्रारंभिक मसीही कलीसिया की वृद्धि से जुड़ी कुछ महत्वपूर्ण घटनाओं का अपना सारांश तैयार करें और उन्हें नीचे लिखें।

बाइबल प्रोजेक्ट– प्रेरितों के काम का अवलोकन वीडियो देखें।

प्रेरितों के काम अध्याय 2 पढ़ें।

इस खंड में दर्ज घटनाओं पर कुछ समय चिंतन करें।

वे कौन–से शब्द, वाक्यांश या विचार हैं जो आपके मन में उभरते हैं?

आज यहां कलीसिया के लिए मुख्य संदेश क्या हैं?

जब हम 'प्रारंभिक कलीसिया' शब्द सुनते हैं, तो यह मान लेना आसान है कि 'कलीसिया होने का' केवल एक ही उदाहरण था। लेकिन ऐसा नहीं है। कुरिन्थुस... फिलिप्पी... स्मिर्ना... लौदीकिया... ये सब अलग–अलग स्थान थे, और प्रत्येक का कलीसिया होने का अपना विशिष्ट तरीका था। नए नियम के समय में कलीसिया उतनी ही विविध थी जितनी आज है।

जब हम नए नियम को मसीही सिद्धांत का स्रोत मानते हैं तो हमारे सामने दो मुद्दे हैं। पहला मुद्दा स्वयं नए नियम का स्वरूप है: यह एक ही ग्रंथ के रूप में इस उद्देश्य से नहीं लिखा गया कि वह व्यवस्थित

रूप से धर्मशास्त्र विकसित करे। यह तो लेखों का एक संग्रह है...इनमें से कुछ हैं, जैसे कि लूका का सुसमाचार, पहले के प्रयासों की कमी को पूरा करने के लिए लिखा गया (तुलना करें: लूका 1:1–4, प्रेरितों के काम 1:1–4)। और इनमें से कई अलग–अलग संदर्भों से आए हैं, या अलग–अलग परिस्थितियों में लिखे गए हैं, और वे पुनर्जीवित मसीह के साथ बहुत भिन्न प्रकार के अनुभवों को व्यक्त करते हैं।

दूसरा मुद्दा भाषा और संस्कृति का है। दोनों एक–दूसरे से गहराई से जुड़े हुए हैं: भाषा हमारी संस्कृति को आकार देती है और हमारी संस्कृति हमारी भाषा को। यदि हम किसी बात का अनुवाद दूसरी भाषा में करते हैं, तो सब कुछ बदल सकता है।

इसका एक उदाहरण है 'टैलेंट' शब्द। इसका अर्थ क्या है? हमारे समाज में इसका अर्थ है कोई कौशल, विशेषकर ऐसा कौशल जो बाज़ार में उपयोगी हो। लेकिन 'किंग जेम्स वर्शन' (केजेवी) में इसका अर्थ था चाँदी की बड़ी सिल्लियाँ (देखें: निर्गमन 25:39 और मत्ती 25:15)। और यहीं से अंग्रेजी शब्द आया, केजेवी अनुवाद (या असल में लिप्यंतरण) से। यूनानी शब्द टैलेंटन केवल मुद्रा की बड़ी इकाई था। लेकिन लगातार उपदेशकों ने इस दृष्टांत को हमारे कौशल और वरदानों को प्रभु के लिए उपयोग करने के रूप में समझाया, और इस प्रकार यही टैलेंट का अर्थ बन गया।

नये नियम में एकता और विविधता

प्रोफेसर जेम्स डन अपनी पुस्तक जिसका शीर्षक भी यही है (एससीएम 1977 और पुनर्मुद्रित) में लिखते हैं:

> *"....जब हम....पूछते हैं कि पहली शताब्दी की मसीही आस्था को क्या एक करता है और क्या उसकी विशिष्टता को चिन्हित करता है, तो वह एकता बार–बार केवल मसीह पर आकर ठहर जाती है। जैसे ही हम उससे आगे बढ़ने का प्रयास करते हैं, जैसे ही हम उसे शब्दों या आचरण में विस्तार देने लगते हैं, विविधता उतनी ही प्रमुख हो जाती है जितनी कि एकता। और जितना अधिक हम उसमें जोड़ने का प्रयास करते हैं, उतना ही अधिक असहमति और विवाद में उलझ जाते हैं।"* (पृष्ठ. 371)

प्रारंभिक कलीसिया में प्रारंभिक विश्वासियों के सामने कई बड़े विभाजन थे:

- क्या वे यहूदी थे या अन्यजाति?
- यदि यहूदी थे, तो क्या वे अधिक रूढ़िवादी परंपरा या उदार परंपरा (फरीसी या सदूकी) से आते थे?
- यदि वे अन्यजाति थे, तो क्या वे यूनानी और रोमी दर्शन की पश्चिमी परंपराओं से आते थे या पूर्वी रहस्य धर्मों और समन्वयवाद की परंपराओं से?
- क्या वे गुलाम थे या स्वतंत्र?
- रोमी या यूनानी?
- पुरुष या स्त्री?

इस जटिलता को देखते हुए, हमें नए नियम की विविधता पर आश्चर्य नहीं होना चाहिए। इसलिए जब हम इसे मसीही सिद्धांत बनाने या समझाने के लिए प्रयोग करें, तो बहुत सावधानी से करना चाहिए।

डन नए नियम की मसीही आस्था की कुछ सामान्य विशेषताएँ बताते हैं:

- क्षमा, उद्धार और आत्मा का सामान्य 'प्रस्ताव'
- एकेश्वरवाद
- यीशु के बारे में साझी परंपरा
- यहूदी धर्मग्रंथ, जिनमें मसीही आस्था को इस्राएल की पूर्ति के रूप में देखा गया
- यीशु के नाम में बपतिस्मा
- उसे स्मरण करने के लिए साझा भोजन
- पवित्र आत्मा का व्यक्तिगत अनुभव
- पड़ोसी से प्रेम करना, जो परमेश्वर से प्रेम का प्रमाण है
- निकट भविष्य में पारूसिया (दूसरा आगमन) की उम्मीद

लेकिन वे बार–बार दोहराते हैं कि एकमात्र एकीकृत सूत्र यही था– क्रूसित और पुनर्जीवित मसीह।

संक्षेप में, करिश्माई, कैथोलिक, रूढ़िवादी इंजीलवादी, उदारवादी, और नए रूप, इन सब की झलक नए नियम के पन्नों में मिलती है।

भाषा

नये नियम को यूनानी भाषा के उस रूप में लिखा गया था जिसे "सामान्य यूनानी" कहा जाता है। यह यूनानी भाषा प्लेटो और अरस्तू की भाषा से उतनी ही भिन्न थी जितनी आधुनिक अंग्रेजी शेक्सपियर की अंग्रेजी से भिन्न है। यह सामान्य यूनानी रोमन साम्राज्य की दैनिक बोलचाल की भाषा थी।
इसलिए जब हम बाइबल को अपनी भाषा में अनुवाद करते हैं, तो हम केवल अनुवाद का कार्य नहीं करते, बल्कि व्याख्या का कार्य भी आरंभ करते हैं। इसका अर्थ यह है कि हम पाठ के बारे में धार्मिक और सांस्कृतिक धारणाएँ बनाने लगते हैं और चाहे हम कितनी भी सावधानी बरतें, उन धारणाओं को पाठ में शामिल कर देते हैं।

इसके अतिरिक्त, नए नियम की यूनानी भाषा यीशु और उनके प्रथम शिष्यों की भाषा नहीं थी – यूनानी स्वयं एक अनुवाद है, भाषा और संस्कृति दोनों में! यीशु और उनके शिष्य अरामी बोलते थे। यह असीरीया साम्राज्य की भाषा थी, जिसने लगभग 700–320 ईसा पूर्व तक निकट पूर्व पर प्रभुत्व किया।

अरामी भाषा बाइबल में भी मिलती है, जहाँ एज्रा और दानिय्येल की पुस्तक के कुछ अंश अरामी में हैं, और इसके कुछ शब्द नए नियम में भी जीवित हैं। बेलशज्जर के भोज में दीवार पर लिखी गई लिखावट अरामी में थी। मृत सागर ग्रंथों में, जो युग के आरंभ के आसपास एक यहूदी संप्रदाय के पुस्तकालय के अवशेष हैं, अरामी में कई रचनाएँ हैं। ये नए ग्रंथ यीशु और उनके शिष्यों द्वारा प्रयुक्त फिलिस्तीनी अरामी के सर्वोत्तम प्रमाण प्रदान करते हैं।

चूँकि यहूदी अरामी बोलते थे और इब्रानी का ज्ञान अब व्यापक नहीं था, इसलिए सभागृह में पवित्र इब्रानी शास्त्रों के पाठ के साथ अरामी अनुवाद या व्याख्या देने की प्रथा उत्पन्न हुई, जिसे 'तारगुम' कहा गया। समय के साथ, व्यवस्था और बाइबल के अन्य भागों के लिए अनेक तारगुम रचे गए। ये केवल अनुवाद नहीं थे, बल्कि इनमें पारंपरिक यहूदी शास्त्रीय व्याख्या भी शामिल थी।

यद्यपि यीशु अरामी बोलते थे, सुसमाचार यूनानी में हैं और केवल कभी–कभी वास्तविक अरामी शब्दों का इस्तेमाल करते हैं। इन संदर्भों को देखिए और आप पाएँगे कि हमारे नए नियम में यीशु की अपनी भाषा का यही कुल योग है।

संदर्भ	अरामी शब्द	अंग्रेजी अनुवाद
मरकुस 5:41		
मरकुस 7:34		
मरकुस 14:36		
रोमियों 8:15		
गलतियों 4:6		
1 कुरिन्थियों 16:22		

(अरामी देखने के लिए आपको केजेवी की आवश्यकता होगी)*
और इब्रानी शब्द के लिए मरकुस 7:11

*पौलुस के मूल लेखन में लगभग निश्चित रूप से दो शब्द थे ("केवल एक प्राचीन ग्रंथ में यह एक ही शब्द के रूप में मिलता है, और यह अरामी भाषा में संभव था)। यदि पहले शब्द का तीसरा 'ए' दूसरे शब्द में स्थानांतरित किया जाए ("मरान अथा"), तो अर्थ भविष्यकाल से भूतकाल में बदल जाता है: दोनों ही सही हैं, परंतु बहुत भिन्न हैं। प्रकाशितवाक्य 22:20 के संदर्भ में लगभग निश्चित रूप से भविष्यकाल के लिए है, जिससे यह एक प्रार्थना बनती है, न कि तथ्य का कथन।

मॉड्यूल तीनः मसीही सिद्धांत का विकास
सत्र 8: प्रारंभिक कलीसिया की वृद्धि

उद्देश्यः यह जानना कि प्रेरितों और उनके अनुयायियों के दिनों में यीशु के शुभ समाचार का अनुवाद कैसे हुआ।

यह देखना कि हमने क्या खोया और क्या पाया।

यह विचार करना कि यह आज हमारे और हमारी कलीसिया के जीवन और मिशन को कैसे प्रभावित करता है।

प्रार्थना	5 मिनट
तैयारी पर चिंतन	15 मिनट
प्रेरितों के काम की खोज	30 मिनट

- हम प्रेरितों के काम के लेखक के बारे में क्या जानते हैं और उसका उद्देश्य क्या था?
- प्रेरितों के काम को सरसरी तौर पर देखें और उसमें कुछ कहानियों की सूची बनाएं।
- कौन सी कहानियाँ आपके लिए विशेष रूप से महत्वपूर्ण हैं और क्यों?

स्टीफन ट्रैविस अपनी पुस्तक ''स्टार्टिंग विद ए न्यु टेस्टामेंट'' में बताते हैं कि प्रेरितों के काम को 6 भागों में बाँटा जा सकता हैः

1:1–6:7	यरूशलेम में प्रारंभिक कलीसिया
6:8–9:31	सामरिया और उससे आगे कलीसिया की वृद्धि
9:32–12:24	पलिस्तीन और सीरिया में अन्यजातियों तक पहली पहुँच
12:25–16:5	पौलुस की मिशनरी यात्राएँ– कुप्रुस और एशिया माइनर
16:6–19:20	पौलुस शुभ समाचार यूरोप में ले जाते हैं
19:21–28:31	पौलुस की अंतिम यात्रा रोम तक

जोड़ों में, कुछ प्रारंभिक मिशनरियों के बारे में जानकारी हासिल करेंः

पतरस	2:1–8, 14–17
स्तिफनुस	7:51–56, 6:1–6
फिलिप्पुस	8:4–5, 8:26–32, 38–40
शाऊल	8:3, 9:3–8, 19:22
लुदिया	16:12–15 और 40 (फिलिप्पी में कलीसिया की स्थापना)

प्रत्येक जोड़ा उनके चरित्र पर संक्षिप्त रिपोर्ट प्रस्तुत करे।

सारांश में महत्वपूर्ण बातें:

1. अब तक लगभग सभी मिशनरी यहूदी हैं।
2. सेवकाई और मिशन की वृद्धि हमेशा योजनानुसार नहीं होती।
3. यहूदियों में भिन्नताएँ थीं– यूनानी बोलने वाले, मूल निवासी और सामरी (जिन्हें विधर्मी माना जाता था)।
4. अन्यजातियों को कलीसिया में स्वीकार करने पर विवाद के बादल मंडरा रहे थे, जिसे हम आगे और गहराई से देखते हैं।

विश्राम

कलीसिया की वृद्धि 30 मिनट

समूह कार्य

समूह 1 – प्रेरितों के काम अध्याय 10 पढ़ें
इस कहानी को पहले पतरस के दृष्टिकोण से और फिर कुरनेलियुस के दृष्टिकोण से देखें।
उनके अनुभव, भावनाएँ और समझ क्या हो सकती थीं – मुलाकात से पहले, मुलाकात के दौरान और मुलाकात के बाद?
समूह 2 – प्रेरितों के काम 15:1–12 पढ़ें
इस विवरण को यहूदी मसीही और अन्यजाति मसीही के दृष्टिकोण से देखें।
यहूदी मसीही के लिए आप ध्यान दे सकते हैं:
उत्पत्ति 17:9–14, यहोशू 5:2–9, मत्ती 5:17–20
अन्यजाति मसीही के लिए आप ध्यान दे सकते हैं:
व्यवस्थाविवरण 10:12–18, यिर्मयाह 31:31–34, मत्ती 12:1–7, गलतियों 3:1–5, 5:12

समापन

समूह अपने द्वारा खोजी गई बातों को साझा कर सकते हैं।

आज हमारे लिए प्रासंगिकता 20 मिनट

आज कलीसिया किन–किन भिन्नताओं के मुद्दों का सामना कर रही है?

किस प्रकार ये घटनाएँ या 'निर्णय लेने की प्रक्रियाएँ' प्रेरितों के काम में वर्णित कलीसिया के मिशन और आंदोलनों से मिलती–जुलती या भिन्न हैं?

समापन प्रार्थना 5 मिनट

हे प्रभु यीशु, जिसने प्रार्थना की कि हम सब एक हों, हम आपसे मसीहियों की एकता के लिए प्रार्थना करते हैं, आपकी इच्छा के अनुसार, आपके साधनों के अनुसार।

आपकी आत्मा हमें सामर्थ दे कि हम विभाजन से उत्पन्न पीड़ा को अनुभव करें,

अपने पाप को देखें और हर आशा से परे आशा करें। आमीन।

चेमिन नेउफ समुदाय द्वारा लिखित

आगे की तैयारी: 5 मिनट

मॉड्यूल तीनः मसीही सिद्धांत का विकास

सत्र 9: पौलुस –एक जीवित सुसमाचार

तैयारी

शाऊल से पौलुस तक

शाऊल एक यहूदी परिवार से था जो वर्तमान दक्षिण–पूर्वी तुर्की के तारसुस नगर में रहता था। उसका परिवार तंबू बनाने का व्यवसाय करता था, संभवतः रोमी सेना के लिए। तारसुस यूनानी–भाषी नगर था, परंतु संस्कृति में अधिक पूर्वी था। शाऊल रोमी नागरिक था, जो संभवतः उसके पिता से विरासत में मिला था। उसके पिता ने नागरिकता प्राप्त की होगी या रोमी साम्राज्य की सेवा के लिए उसे प्रदान की गई होगी। शाऊल ने यरूशलेम में रब्बी गमलीएल के अधीन शिक्षा प्राप्त की और जो एक फरीसी था।

प्रेरितों के काम 9:1–22 पढ़ें

इस कहानी पर कुछ समय चिंतन करें।

शाऊल को पौलुस के नाम से जाना जाने लगा, जो लातीनी भाषा में 'छोटा' से लिया गया है। उसने संभवतः अपने नाम को अन्यजातियों के बीच कार्य करने के लिए अधिक रोमी रूप में ढाल लिया होगा, यह एक उपनाम भी हो सकता था या उसने परिस्थिति के अनुसार अलग–अलग नामों का प्रयोग किया होगा।

पौलुस के परिवर्तन के बाद उसने अन्ताकिया और यरूशलेम में चेलों के साथ समय बिताया, फिर उसे रोमी साम्राज्य में फैले यहूदी प्रवासियों के बीच भेजा गया। पौलुस ने व्यापक यात्राएँ कीं और प्रारंभ में प्रत्येक स्थान पर स्थानीय यहूदियों को प्रचारित करने पर ध्यान केंद्रित किया। बाद में उसने वहाँ यहूदी और अन्यजाति दोनों अनुयायियों से बनी कलीसियाएँ स्थापित कीं। पौलुस उन कलीसियाओं को पुनः देखने जाता और अपने पत्रों के माध्यम से उनके साथ संपर्क बनाए रखता। पौलुस की यात्राएँ और पत्र अक्सर उन समस्याओं से संबंधित होते थे जो इन जटिल और नवयुवक कलीसियाओं में उत्पन्न होती थीं। उसके सभी पत्र सुरक्षित नहीं हैं, इसलिए हमारे पास केवल कुछ मुद्दों की झलक है जिनसे ये समुदाय जूझ रहे थे।

पौलुस और उसके पत्र

कृपया परिशिष्ट 4 में 'स्टार्टिंग विद द न्यु टेस्टामेंट' पृष्ठ 230:231 पढ़ें।

पौलुस का कुरिन्थियों को पहला पत्र

बाइबल प्रोजेक्ट – 1 कुरिन्थियों का अवलोकन वीडियो देखें।

पौलुस का आगमन

हम बाइबल को केवल व्यक्तियों के रूप में नहीं, बल्कि अपनी स्थानीय कलीसियाओं के सदस्य के रूप में भी पढ़ते हैं। यदि पौलुस आपकी कलीसिया का दौरा करता, तो वह किन बातों पर लिखता? – किस बात पर आनन्दित होता और किस पर चुनौती देता।

आनन्दित होता.....

चुनौती देता.....

आप परिशिष्ट 5 में 'कोंफिल्कट इन कोरिंथ' पृष्ठ 232:233 पढ़ सके हैं।

मॉड्यूल तीनः मसीही सिद्धांत का विकास

सत्र 9: पौलुस –एक जीवित सुसमाचार

उद्देश्य: कुरिन्थियों के मसीही समुदाय के प्रति संत पौलुस के मिशन का वर्णन करना।
उनकी मूलभूत पास्बानी (आध्यात्मिक देखभाल) और शिक्षण सेवकाई को समझना।
इसे हमारे समकालीन संदर्भ में लागू करना।
समीक्षा करना कि 'बाइबल हमारे लिए क्या है' और सुसमाचार को साझा करना।

प्रारंभिक प्रार्थना 5 मिनट

तैयारी पर चिंतन 10 मिनट

पौलुस और कुरिन्थियों की कलीसिया 40 मिनट

आप जानते होंगे कि बाइबल हमें 'सुसमाचार' और 'येरूशलेम' ये दोनों शीर्षक पढ़ने में सहायता के लिए देती हैं। 1 कुरिन्थियों का यह विभाजन उन्हीं से लिया गया हैः

1:1–9	परिचय और आशीष
1:10–16	कलीसिया में विभाजन
1:17–2:16	क्रूसित मसीह की सच्ची बुद्धि और झूठी बुद्धि
3:1–17	साझा सेवकाई
3:18–4:21	सेवक, मैं–महत्वपूर्ण नहीं
5:1–13,6:12–20	कलीसिया में अनैतिकता
6:1–11	सह–मसीहियों के विरुद्ध मुकदमे
7:1–40	परमेश्वर के बुलावे के अनुसार विवाह, संयम और जीवन
8:1–13	मूर्तियों को चढ़ाए गए भोजन और कमज़ोर भाइयों के प्रति दृष्टिकोण
9:1–27	प्रेरित के रूप में पौलुस के अधिकार और कर्तव्य
10:1–11	इस्राएल के इतिहास से चेतावनी और पाठ
11:2–16	आराधना में स्त्रियों का आचरण (देखें 14:33–35)
11:17–34	प्रभु भोज – भाव और रूप
12:1–31	पवित्र आत्मा के वरदान और शरीर का दृष्टांत
13:1–13	प्रेम का भजन
14:1–40	आत्मा के वरदानों का नियमन
15:1–58	मृतकों का पुनरुत्थान
16:1–24	सह–मसीहियों के लिए दान और अभिवादन

समूह कार्य

अपनी तैयारी से बनी सूची में उन बातों को देखें जिन पर आनन्दित होना है या जिनसे चुनौती मिलती है, और फिर 1 कुरिन्थियों की इस सूची को देखें। उन कुछ बातों को चुनें जो दोनों सूचियों में आती हैं। फिर समूहों में बँटकर प्रत्येक समूह एक विषय पर ध्यान केंद्रित करे।

- यह खोजें कि पौलुस हमें क्या सिखा रहे हैं और अन्य मसीही दृष्टिकोण इस विषय के बारे में क्या कहते हैं।
- अपनी खोजों को पूरे समूह के साथ साझा करने की तैयारी करें।

विश्राम

बाइबल की शिक्षा की पुनः–व्याख्या 35 मिनट

हम सब मानते हैं कि बाइबल के कुछ हिस्सों को हमारे व्यक्तिगत और कलीसिया के जीवन के लिए अधिकारिक रूप से नहीं लिया जाना चाहिए। विशेषकर पुराने नियम में: हम पशुओं की बलि नहीं चढ़ाते, हम एक से अधिक कपड़े की सामग्री से बने वस्त्र पहनते हैं, और यदि हमारे घर में फफूंदी मिल जाए तो हम याजक को नहीं बुलाते। नए नियम में, हम स्त्रियों को कलीसिया में टोपी पहनने के लिए बाध्य नहीं करते, और हम सामान्यतः तलाकशुदा लोगों के पुनर्विवाह को सहजता से स्वीकार करते हैं। पौलुस की कुछ शिक्षाओं को भी आज हम अलग दृष्टि से देखते हैं (ये उदाहरण 'नया नियम' संस्करण से लिए गए हैं, जब तक अन्यथा न कहा गया हो)।

इन उदाहरणों को व्यक्तिगत रूप से पढ़ने के लिए समय निकालें।

7:21 **"क्या तुम दास थे,** जब परमेश्वर ने तुम्हें बुलाया। कोई बात नहीं... जिस दशा में बुलाए गए, उसी में बने रहो।"

दासता का अन्त – जो अभी भी पूर्ण नहीं हुआ – अब एक मूलभूत मसीही कार्य है। दासता के अन्त (और स्त्रियों की स्वतंत्रता) का 'बीज' गलतियों 3:27–28 जैसे पदों में पाया जा सकता है।

7:1 ''**मनुष्य का विवाह न करना अच्छा है''** या येरूशलेम बाइबल में "मनुष्य का स्त्री को न छूना अच्छा है"।

यदि सब विवाह न करें या स्त्री को न छुएँ तो मानव जाति समाप्त हो जाएगी। कुछ लोग मानते हैं कि पौलुस को निकटवर्ती अन्त या मसीह के पुनः आगमन की अपेक्षा थी, इसलिए ऐसी स्थिति में विवाह न करना उचित हो सकता था (देखें 7:29)। परंतु इसके पीछे व्यक्तिगत कारण भी हो सकते हैं।

11:6 और 9 **"स्त्री का सिर मुंडाना या बाल काटना लज्जाजनक है** (पुरुष के लंबे बाल अपमानजनक हैं 11:14), क्योंकि स्त्री पुरुष के लिए बनाई गई।"
यह स्पष्ट रूप से पौलुस के समय में स्त्रियों के बालों के सामाजिक अर्थ से संबंधित है – परंतु आज कई लोग कहेंगे कि यह पुरुष का विषय ही नहीं है!

14:34–35 **"स्त्रियों को सभाओं में चुप रहना चाहिए।** उन्हें बोलने की अनुमति नहीं है, जैसा कि यहूदी व्यवस्था कहती है। उन्हें नेतृत्व नहीं करना चाहिए। यदि वे कुछ जानना चाहें तो अपने पतियों से घर पर पूछें।" इसी तरह देखें, 1 तीमुथियुस 2:10–11, पत्नियों का पतियों के अधीन होना (1 पतरस 3:6, इफिसियों 5:21–33, कुलुस्सियों 3:18)।
मसीही पश्चिम में चीज़ें बदल गई हैं! परंतु क्या इन पदों को अब भी 'प्रभु का वचन' मानने का कोई तरीका है?

6:9 **"जो लोग अनैतिक हैं, मूर्तिपूजक हैं, व्यभिचारी हैं, समलैंगिक विकृत हैं, चोरी करते हैं, लालची हैं, शराबी हैं, निन्दक हैं।"** 'येरूशलेम बाइबल का अनुवाद में 'सदोमाइटस' (अतिथि–अनादर करने वाले बलात्कारी) कहा गया है। 'एनआरएसवी में इसे 'पुरुष वेश्याएँ और सदोम के लोग' कहा गया है।

- आज कलीसिया में पौलुस की रचनाओं की व्याख्या कैसे की जाए?
- इसके खतरे क्या हैं?
- बाइबल संपूर्ण रूप से मसीही विवेक में कैसे योगदान देती है?

हमारे द्वारा बाइबल की व्याख्या करने में मार्गदर्शन करने वाले तत्व क्या हैं?

ऊपर दिए गए उदाहरणों में व्याख्या करते समय इनका क्या योगदान है:

- पाठीय विश्लेषण और अनुवाद
- स्रोत, रूप और संपादन आलोचना (या विश्लेषण)
- संदर्भात्मक विश्लेषण
- सांस्कृतिक मूल्यों और मानदंडों का परिवर्तन (जैसे गर्भनिरोधक की उपलब्धता)
- आर्थिक परिवर्तन (जैसे स्त्रियों का स्वयं आजीविका कमाना)
- पौलुस की सीमाएँ
- हमारी सीमाएँ
- व्यवस्था, सुसमाचार और स्वतंत्रता के बीच धार्मिक संतुलन –क्या आवश्यक है और क्या नहीं?

अब आप बाइबल को कैसे देखते हैं?

10 मिनट

आपके लिए बाइबल कैसी है?

नीचे कुछ सुझाए गए चित्र दिए गए हैं – कौन से आपके लिए सहायक हैं? क्या आप कोई बेहतर सुझाव दे सकते हैं?

– एक नक्शा
– एक औज़ारों का डिब्बा
– एक दर्पण
– एक पाक कला पुस्तक
– एक कम्पास
– एक भित्ति–चित्र
– एक जल–फव्वारा
– एक यातायात नियम–पुस्तक
– एक संगीत रचना
– एक प्रश्नकर्ता

अंतिम प्रार्थना

मॉड्यूल तीनः मसीही सिद्धांत का विकास

सत्र 10: विश्वास, कलीसिया और संसार''

तैयारी

हम विश्वास की यात्रा पाठ्यक्रम के अंतिम सत्र पर पहुँचे हैं और अब तक की सीख को एक साथ जोड़ने का प्रयास करेंगे। लेकिन पहले हम कलीसिया के विषय में विचार करेंगे।

कलीसिया का सिद्धांत (यानी किसी विषय पर हमारा विश्वास) ''एकलेसीओलोजी'' कहलाता है। यह शब्द यूनानी शब्द 'एकलेसीया' से आया है। प्राचीन यूनान में 'एकलेसीया' किसी राज्य के नागरिकों की सभा को कहा जाता था। यह शब्द दो भागों से बना है –'एक' (अर्थात् बाहर से) और 'केलियो' (अर्थात् बुलाना)। संक्षेप में, यह उन लोगों की सभा है जिन्हें बाहर से बुलाया गया और किसी उद्देश्य के लिए बुलाया गया है।

इन निम्नलिखित अंशों को पढ़ें और सोचें कि वे कलीसिया के बारे में क्या कहते हैं।

- प्रेरितों के काम 2:42-47
- इफिसियों 2:11-22
- इफिसियों 4:1-16
- कुलुस्सियों 3:12-17
- 1 पतरस 2:4-10

अपने विचार लिखें

एलिस्टर मैक्ग्राथ के अनुसार, कलीसिया के इतिहास की पहली पाँच शताब्दियों में सहमति-आधारित कलीसिया-शास्त्र में निम्नलिखित तत्व शामिल थेः

1. कलीसिया एक आत्मिक समाज है, जो इस्राएल का स्थान लेकर संसार में परमेश्वर की प्रजा बनती है।
2. सभी मसीही, चाहे उनकी उत्पत्ति या पृष्ठभूमि अलग हो, मसीह में एक हैं।
3. कलीसिया सच्ची मसीही शिक्षा का भंडार है।
4. कलीसिया विश्वासियों को संसार भर से एकत्र करती है ताकि वे विश्वास और पवित्रता में बढ़ें।[3]

आपके अनुसार इसमें क्या कमी है?

आपके लिए कलीसिया के आवश्यक तत्व क्या होंगे?

वर्तमान ''एकलेसीओलोजी'' पवित्र और सांसारिक के बीच किसी विभाजन को स्वीकार नहीं करती। परमेश्वर संसार में उतना ही उपस्थित है जितना कलीसिया में। अन्ताकिया के संत इग्नातियुस ने कहाः '"जहाँ मसीह है, वहाँ कैथोलिक कलीसिया भी है।"'

कलीसिया का संस्कारमय जीवन

संस्कार को "अदृश्य अनुग्रह का दृश्य चिन्ह" समझा जाता हैः

एंग्लिकन कलीसिया दो संस्कारों को मान्यता देती हैः

युख्रीस्त – जिसे मास (पवित्र सभा), प्रभु भोज, पवित्र सहभागिता भी कहा जाता है।

बपतिस्मा

ये संस्कार आपके लिए क्या अर्थ रखते हैं?

[3]मैक्ग्राथ, ए. (2001) **क्रिश्चियन थियोलॉजीः एक परिचय**, ब्लैकवेल पब्लिशिंग, ऑक्सफोर्ड

आपकी कलीसिया में युखीस्त की क्या भूमिका है?

युखीस्त का आपका व्यक्तिगत अनुभव क्या है?

एकत्रित और भेजे गए

यूनानी शब्द *एकलेसीया* पर लौटते हैं– इसमें यह भाव है कि कलीसिया एकत्र होने का स्थान है, पर साथ ही भेजे जाने का भी। एकत्र होना आराधना के लिए, प्रार्थना करने, शिष्यत्व में एक दूसरे को बढ़ाना तथा विश्वास और वरदानों को विकसित करना भी है। वो स्थान जहां से विश्वासीयों को संसार में विश्वास को जीने के लिए भेजा जाता है।

मत्ती 5:13-16 पढ़ें।

यह आपको क्या कहता है?

विश्वासघोष

कलीसिया की पारंपरिक आस्था (सही विश्वास) विश्वासघोषों में सुरक्षित है। परिशिष्ट 6 में दिए गए विश्वासघोषों को देखें। कुछ आपके लिए कम परिचित हो सकते हैं।

क्या विश्वास की यात्रा पाठ्यक्रम के दौरान इन विश्वासघोषों के प्रति आपकी समझ बदली है?

मॉड्यूल तीनः मसीही सिद्धांत का विकास

सत्र 10 : विश्वास, कलीसिया और संसार''

उद्देश्य : यह समझना कि शिष्य होना क्या अर्थ रखता है ।

कलीसिया को एकत्रित करने और भेजने वाली के रूप में देखना ।

प्रारंभिक प्रार्थना

हे यीशु, जब हमारी मान्यताओं को चुनौती दी जाती हैं या हमारी कथाएँ उलट दी जाती हैं,
तो हमें उस असुविधा में ठहरने और गहरी समझ की खोज करने में सहायता कर।
जब हमारी भावनाएँ तीव्र हो जाती हैं, तो हमें श्वास लेने में मदद कर,
और वह श्वास ऐसा स्थान बनाए जिसमें हम सुन सकें – भले ही हम सहमत न हों।
आमीन।

(कोरीमीला समुदाय – एपिफनी चिंतन, जनवरी 2022)

तैयारी पर चिंतन 15 मिनट

शिष्यता के चिन्ह 15 मिनट

मसीहीयों को शिष्य होने के लिए बुलाया गया है – यीशु के अनुयायी, जो निरंतर उसे और अधिक जानने, उसका अनुकरण करने और दूसरों को उसे जानने में सहायता करने का प्रयास करते हैं।

सामूहिक रूप से एक फ्लिपचार्ट पर उन मुख्य तत्वों की सूची बनाएँ जो आज एक मसीही शिष्य के चिन्ह हो सकते हैं। देखें कि क्या आप उन्हें केवल 7 चिन्हों में संक्षेप कर सकते हैं।

शिष्यता की कीमत 10 मिनट

सामूहिक रूप से पढ़ें: मरकुस 8:31–38

''तब वह उन्हें सिखाने लगा कि मनुष्य के पुत्र के लिये अवश्य है कि वह बहुत दुःख उठाए, और पुरनिए और प्रधान याजक, और शास्त्री उसे तुच्छ समझकर मार डालें, और वह तीन दिन के बाद जी उठे। उसने यह बात उनसे साफ–साफ कह दी। इस पर पतरस उसे अलग ले जाकर झिड़कने लगा, परन्तु उस ने फिरकर अपने चेलों की ओर देखा, और पतरस को झिड़क कर कहा, "हे शैतान, मेरे सामने से दूर हो, क्योंकि तू परमेश्वर की बातों पर नहीं, परन्तु मनुष्यों की बातों पर मन लगाता है।"

उसने भीड़ को अपने चेलों समेत पास बुलाकर उनसे कहा, "जो कोई मेरे पीछे आना चाहे, वह अपने आपे से इन्कार करे और अपना क्रूस उठाकर, मेरे पीछे हो ले। क्योंकि जो कोई अपना प्राण बचाना चाहे वह उसे खोएगा, पर जो कोई मेरे और सुसमाचार के लिये अपना प्राण खोएगा, वह उसे बचाएगा। यदि मनुष्य सारे जगत को प्राप्त करे और अपने प्राण की हानि उठाए, तो उसे क्या लाभ होगा? मनुष्य अपने प्राण के बदले क्या देगा? जो कोई इस व्यभिचारी और पापी जाति के बीच मुझ से और मेरी बातों से लजाएगा, मनुष्य का पुत्र भी जब वह पवित्र दूतों के साथ अपने पिता की महिमा सहित आएगा, तब उस से भी लजाएगा।"

इन अंशों पर मनन करने के बाद क्या आप अपनी शिष्यता के चिन्हों में कुछ और जोड़ना चाहेंगे?

विश्राम

प्रियजन, एकत्रित हुए और भेजे गए 20 मिनट

रोमन कैथोलिक लेखक हेनरी नूवेन[4] ने लूका 6:12–20 पर अपने चिंतन से एक आध्यात्मिक गतिशीलता को पहचाना।

यह मौन रहने से आरंभ होता है – हमारी दैनिक भक्ति साधनाएँ जो हमें परमेश्वर के हृदय की ओर खींचती हैं और हमें केवल 'प्रियजन' होने में सक्षम बनाती हैं। यही हमारे अस्तित्व का आधार है।

जैसे–जैसे हम परमेश्वर के 'प्रियजन' होने के अनुभव में बढ़ते हैं, हम समुदाय की ओर आकर्षित होते हैं। नूवेन कहते हैं कि उपासना करने वाला समुदाय वह स्थान है जहाँ 'मौन मौन से मिलता है'। ऐसा समुदाय जहाँ सबको 'प्रियजन' के रूप में अपनी सुरक्षा मिलती है और वे स्वतंत्र होकर प्रेम कर सकते हैं तथा विश्वास के समुदाय में दूसरों की सेवा कर सकते हैं – यह परस्पर शिष्यता का स्थान है।

इस स्थान से, नूवेन कहते हैं, हम संसार में, संसार के साथ और संसार के लिए सेवा के लिए तैयार और मुक्त किए जाते हैं।

- इस विचार पर कुछ समय मनन करें ।
- आपके मन में कौन–से विचार उत्पन्न होते हैं?

---

[4]नूवेन, एच (क्रिस्टियन्सन एम.जे., लेयर्ड आर.जे.) (2011) **आध्यात्मिक निर्देशन** एसपीसी

अच्छा समापन 10 मिनट

अब हम विश्वास की यात्रा पाठ्यक्रम के अंत तक पहुँचे हैं, तो हम कुछ समय लेंगे यह सोचने के लिए कि इसका हमारे लिए क्या अर्थ रहा है।

इसके बारे में सोचने के लिए समय लें:

- आपने कौन–सी मुख्य आशीषें पाई हैं?
- आपने कौन–सी मुख्य चुनौतियों का सामना किया है?

विश्वास की यात्रा पाठ्यक्रम परीक्षा 15 मिनट

प्रत्येक व्यक्ति को 3 छोटे कागज़ दिए जाएँ

बीच में एक मोमबत्ती जलाएँ

आपकी महिमा की झलकियाँ क्या रही हैं?

- एक आशीष लिखें जो आपने प्राप्त की है।
- सबके पूरा करने के बाद, क्रम से अपनी आशीष के बारे में बताएं
- उन्हें मोमबत्ती के पास रखें

साथ में कहें – **हे परमपिता परमेश्वर, धन्यवाद**

आपको किस बात ने परेशान किया है?

वह बात लिखें जिसने आपको सबसे अधिक चुनौती दी है ।

आप अपनी चुनौती साझा करने के लिए आमंत्रित हैं, जब तक कि वह बहुत व्यक्तिगत न हो

उन्हें मोमबत्ती के पास रखें

साथ में कहें – **हे प्रभु यीशु, हमें शांति प्रदान कर**

आपकी आशाएँ क्या हैं?

एक आशा या सपना लिखें जो आपके भीतर उत्पन्न हुआ है।

आप भविष्य के लिए अपनी आशाएँ साझा करने के लिए आमंत्रित हैं ।

उन्हें मोमबत्ती के पास रखें

साथ में कहें – **हे पवित्र आत्मा, अपनी आशीष उंडेल दे**

आमीन

परिशिष्ट 1

पवित्र त्रिएकता – फादर ए. जे. थम्बुराज''

(भारत, 1939–)

हरा रंग सृजनशीलता और उर्वरता का प्रतीक है। लाल रंग क्रियाशीलता का प्रतीक है। नीला रंग समुद्र और आकाश का रंग है, जो रहस्य और अनंतता के प्रतीक हैं। पीला (केसरिया), भारतीय परंपरा में शुभ और आनंद का रंग है।

ऊँचा उठा हुआ हाथ (अभय मुद्रा) भारतीय कला और नृत्य में संरक्षण का प्रतीक है। यह पिता को दर्शाता है। इसका संदेश है 'डरो मत'। मछली परमेश्वर की सतत दृष्टि का प्रतीक है, क्योंकि मछली की पलकें कभी बंद नहीं होती हैं।

नीचे की ओर झुका हुआ हाथ (वरद मुद्रा), मसीह को दर्शाता है। यह मुद्रा भारतीय मूर्तिकला और नृत्य में सामान्य है। कहा जाता है कि परमेश्वर अपने भक्तों को अपने चरणों की छत्रछाया में शरण लेने का संकेत देते हैं। लाल घाव हमें स्मरण कराता है कि पुनरुत्थित प्रभु क्रूस पर चढ़ाए जाने के उद्धारकारी चिन्हों को धारण करते हैं।

लाल हाथ शुद्ध करने वाली अग्नि, अर्थात् पवित्र आत्मा का प्रतीक है। सर्पिल रेखा वायु को दर्शाती है, जो तीनों व्यक्तियों को एकता में जोड़ती है। अग्नि और वायु शक्ति हैं।

फादर जॉन बतिस्ता गुलियानी
अमेरिका

विलियम ब्लेक
मूल रूप से प्रकाशित/निर्मित लगभग 1787—1818

पेरिखोरेसिस (दैवीय नृत्य)

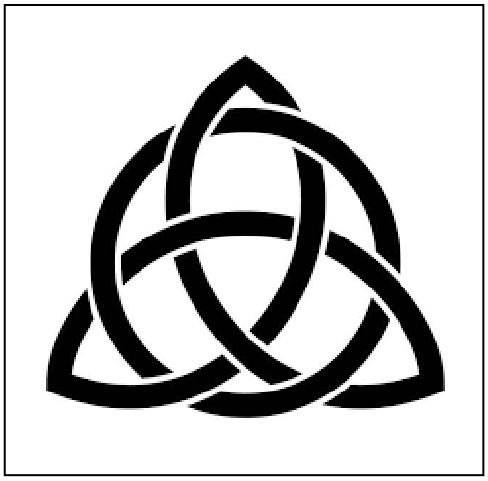

सेल्टिक गाँठ त्रिएकता

परिशिष्ट 2

रूबलेव आइकन

'पवित्र त्रिएकता' आंद्रे रूबलेव द्वारा 15वीं शताब्दी के आरंभ में रूस के सेंट सर्गेई के त्रिएकता मठ के लिए चित्रित किया गया था। यह अब मॉस्को की त्रेत्याकोव गैलरी में स्थित है।

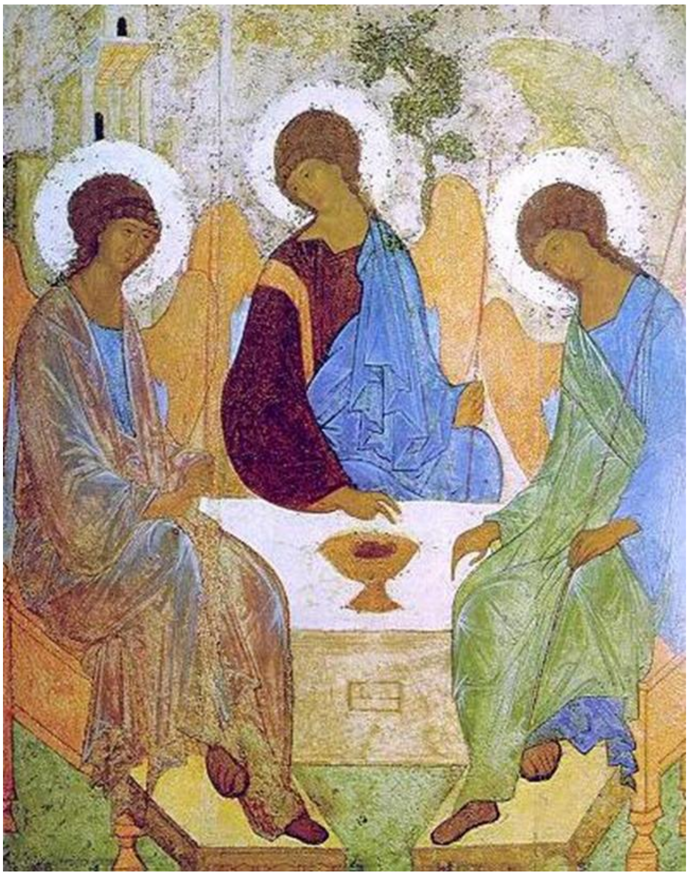

तीनों चेहरे एक जैसे हैं, वे नीले वस्त्र पहने हुए हैं – नीला रंग दिव्यता का प्रतीक है, परंतु प्रत्येक ने ऐसा कुछ धारण किया है जो उनकी अपनी पहचान को दर्शाता है।

पवित्र आत्मा

हरा वस्त्र नया जीवन दर्शाता है, आकाश के सामने कुछ नई खुली पत्तियों के साथ।

आत्मा मेज को स्पर्श करता है– परमेश्वर के दिव्य जीवन को पृथ्वी से जोड़ते हुए।

''प्रभु, आप वास्तव में पवित्र हैं, सारी पवित्रता का स्रोत। अपनी आत्मा भेजिए ताकि सब कुछ पवित्र हो जाए।''

संसार के जीवन के लिए उस स्पर्श और उसके अर्थ पर मनन कीजिए।

उनके पीछे एक पर्वत है, वे स्थान जहाँ लोग अक्सर परमेश्वर से मिले – जहाँ स्वर्ग और पृथ्वी एक–दूसरे को छूते हुए प्रतीत होते हैं।

मूसा ने पर्वतों पर परमेश्वर से मुलाकात की। यीशु पर्वत पर प्रार्थना करते समय रूपांतरित हुए।

अपने स्वयं के 'पर्वत–शिखर' अनुभवों पर मनन कीजिए, वे क्षण जब आपने परमेश्वर के बहुत निकट होने का अनुभव किया, जब आपने आत्मा से परिपूर्ण और रूपांतरित होने का अनुभव किया।

एलिय्याह को परमेश्वर भूकंप, वायु या अग्नि में नहीं मिला, बल्कि पर्वत की शांति में परमेश्वर की आवाज़ उसके अंतरतम में पहुँची।

आपने कब इस गतिशील शांति की उपस्थिति को महसूस किया है, जो आपके भीतर का आत्मा है?

आत्मा झुकता है– हमारी दृष्टि को केंद्रीय स्वरूप की ओर खींचते हुए – जो मसीह को दर्शाता है।

मसीह

यह स्वरूप भूरे वस्त्र में है जो उसकी मानवता की पृथ्वी का प्रतीक है।
सुनहरी पट्टी राजत्व का प्रतीक है।
यहाँ किस प्रकार का राजत्व प्रस्तुत किया जा रहा है, इस पर मनन कीजिए.......

मसीह का स्वरूप मेज पर दो उंगलियाँ टिकाए हुए है – यह उसकी दिव्य और मानवीय प्रकृति को उस पर रखता है। वह दाखमधु से भरे प्याले की ओर संकेत करता है।

यह क्या दर्शाता है?
उस छवि के पीछे एक वृक्ष है। यह मम्रे का वह बलूत का वृक्ष हो सकता है जिसके नीचे तीन स्वर्गदूत विश्राम करते थे। अब्राहम और सारा की मेहमाननवाज़ी ने उन्हें पुत्र के वरदान से पुरस्कृत किया।
यह हमें आतिथ्य के महत्व के बारे में क्या बताता है?

वृक्ष क्रूस का भी प्रतीक हो सकता है, वह वृक्ष जिस पर पुत्र ने प्राण दिए। मृत्यु का वृक्ष जो जीवन का वृक्ष बन गया– आदम और हव्वा की अवज्ञा से खोया हुआ, परंतु यीशु की आज्ञाकारिता से हमें पुनः प्राप्त हुआ।
क्रूस के विरोधाभास पर मनन कीजिएः

- वह स्थान जहाँ मृत्यु और जीवन आमने–सामने होते हैं–
- जहाँ मृत्यु पुनरुत्थान और अनंत जीवन को मार्ग देती है।

यह प्रकाशितवाक्य का जीवन–वृक्ष भी हो सकता है, जो वर्ष के बारह महीनों के लिए बारह प्रकार के फल देता है और जिसकी पत्तियाँ राज्यों के उपचार के लिए हैं।
यहाँ कौन–सा वायदा है – जो पूरा होने की प्रतीक्षा कर रहा है?

मसीह का स्वरूप बाईं ओर के स्वरूप की ओर झुकता है, और हमारी दृष्टि भी वहीं खिंचती है।

पिता

एक ऐसा स्वरूप जो अपने भीतर विश्राम करता है।
नीला वस्त्र लगभग एक झिलमिलाते, अलौकिक आवरण से ढका हुआ है– उस सृष्टिकर्ता के लिए जिसे उसके मानव प्राणी देख नहीं सकते।
दोनों हाथों में दंड पकड़े हुए हैं – स्वर्ग और पृथ्वी का सारा अधिकार पिता का है।
आप इस आइकन के स्वरूप में किस प्रकार का अधिकार देखते हैं?

उस छवि पीछे एक घर है, परमेश्वर का निवास स्थान।
''मेरे पिता के घर में बहुत से रहने के स्थान हैं, मैं तुम्हारे लिए जगह तैयार करने जाता हूँ...''
यीशु के इन वचनों में आपके लिए क्या प्रतिज्ञा है?

''यदि कोई मुझसे प्रेम रखे, तो वह मेरे वचन को मानेगा, और मेरा पिता उस से प्रेम करेगा, और हम उसके पास आएँगे और उसके साथ वास करेंगे।''
यहाँ यीशु क्या प्रतिज्ञा कर रहे हैं?

आप इस आइकन में कहाँ हैं?

पिता की दृष्टि उन स्वरूपों के बीच की जगह की ओर झुकी हुई है– शायद आपकी ओर।
यहाँ क्या निमंत्रण है?
मेज के किनारे रखा प्याला प्रस्तुत किया गया है।
मेज पर बैठने का अनुभव कैसा होगा?

परिशिष्ट 3

जॉन ड्रेन की पुस्तक 'नये नियम का परिचय' के अध्याय 6 से

परमेश्वर का राज्य क्या है?

परमेश्वर का राज्य, मत्ती, मरकुस और लूका के सुसमाचारों में यीशु की शिक्षा का मुख्य विषय है। यह विचार विभिन्न रूपों में व्यक्त हुआ और पीढ़ियों से यहूदी धार्मिक आकांक्षाओं का केंद्र रहा। यीशु के समय में इसे, इस रूप में समझा जाता था कि यह वो समय होगा जब इब्रानी धर्मग्रंथों में इस्राएल की भूमिका से संबंधित प्रतिज्ञाएँ नाटकीय रूप से पूरी होंगीः घृणित रोमी एक बार और हमेशा के लिए उनकी भूमि से निकाल दिए जाएँगे, और लोग राजनीतिक तथा धार्मिक स्वतंत्रता और आत्मनिर्णय का नया काल अनुभव करेंगे।

इसलिए जब यीशु बपतिस्मा और परीक्षा के बाद एक घूमने वाले नबी के रूप में प्रकट हुए और घोषणा की *"समय पूरा हुआ है, और परमेश्वर का राज्य निकट आ गया है"* (मरकुस 1:15) तो स्वाभाविक था कि जो उसके कहा है, उसमें लोग बड़ी रुचि दिखाएँ। वे यही तो प्रतीक्षा कर रहे थेः परमेश्वर का नया राज्य जो अंततः रोम के पुराने राज्य को कुचल देगा। और वे पूरी तरह आश्वस्त थे कि वह यहूदी लोग इस आने वाले राज्य में अपने लंबे समय से प्रतीक्षित मसीहा के नेतृत्व में प्रमुख भूमिका निभाएँगे।

इस्राएल के इतिहास की शुरुआत से ही **परमेश्वर** को **लोगों का राजा** माना गया था (भजन संहिता 96:10; 99:1,146:10)। इब्रानी बाइबल ने घोषित किया कि सारी दुनिया परमेश्वर की है क्योंकि उसने इसे बनाया है—और इस्राएल परमेश्वर का है क्योंकि उसने उनके पूर्वजों को मिस्र की दासता से छुड़ाया और उन्हें नई भूमि दी। एक या दो सदी बाद, जब उन्होंने शाऊल को राजा नियुक्त करना चाहा, तो कुछ लोगों ने इसका विरोध किया क्योंकि उनका मानना था कि परमेश्वर ही राज्य का सच्चा राजा है (1 शमूएल 8:1—18)। बाद में जब दाऊद यरूशलेम में राजा बना, तो दो विचार एक साथ आएः दाऊद और उनके उत्तराधिकारी राज्य के वैध शासक थे क्योंकि परमेश्वर ने उन्हें चुना था (2 शमूएल 7:1—17)। उनका कर्तव्य था परमेश्वर की इच्छा पूरी करना ताकि राज्य उसकी व्यवस्था को प्रतिबिंबित करे। हालाँकि व्यवहार में यह इतना सरल नहीं था। कई राजा केवल शक्ति और स्वार्थ में रुचि रखते थे और प्रारंभिक आदर्श धीरे—धीरे लुप्त हो गए।

फिर भी यह आशा बनी रही कि एक दिन परमेश्वर हस्तक्षेप करेगा और न्याय व धार्मिकता का राज्य स्थापित करेगा। भविष्यद्वक्ता जकर्याह उन में से एक थे जिन्होंने उत्सुकता से उस दिन की प्रतीक्षा की जब '"यहोवा सारी पृथ्वी का राजा होगा"' (जकर्याह 14:9)। यीशु के समय तक यह व्यापक अपेक्षा थी कि मसीहा का आगमन इस राज्य की शुरुआत करेगा।

परमेश्वर का राज्य

परंतु यीशु का 'परमेश्वर का राज्य' कहने का क्या अर्थ था? आज 'राज्य' का अर्थ सबसे स्पष्ट रूप से किसी राज्य या क्षेत्र से होता है, जो यदि किसी राजा द्वारा शासित न भी हो, तो भी किसी न किसी प्रकार की राजनीतिक सत्ता होता है। प्राचीन संसार में भी स्थिति अलग नहीं थी, और इसमें कोई संदेह नहीं कि यीशु के समकालीन लोगों के लिए यह पूरी तरह समझना स्वाभाविक था कि वह एक नए राज्य की स्थापना की घोषणा कर रहे हैं, जो आसपास के देशों से भिन्न होगा और किसी प्रकार से स्वयं परमेश्वर द्वारा शासित होगा।

यह विचार स्पष्ट रूप से उस शिक्षा के विपरीत है जो यीशु ने परमेश्वर के राज्य के बारे में दी थी। आरंभ से ही यह स्पष्ट है कि वह इस वाक्यांश का किसी दूसरे अर्थ में प्रयोग कर रहे थे। यदि यीशु किसी नए राज्य की बात कर रहे होते, तो उन्हें एक नए राजनीतिक राजवंश के प्रतिनिधि के रूप में देखा जाता, वस्तुतः एक 'जीलॉट' के रूप में। परंतु उनके शब्द और उनके कार्य दोनों ही इसे अस्वीकार करते प्रतीत होते हैं। तो वास्तव में यीशु किस बारे में बात कर रहे थे? कुछ मसीही इस निष्कर्ष पर पहुँचे हैं कि, विपरीत संकेतों के बावजूद, यीशु मुख्यतः ऐसी समाज की स्थापना करना चाहते थे जो परमेश्वर द्वारा शासित हो, और जो साधारण मनुष्यों द्वारा शासित समाजों से भिन्न हो।

मध्ययुग के कई धर्मशास्त्रियों ने, उदाहरण के लिए, संत ऑगस्टीन का अनुसरण करते हुए उस राज्य को जिसे यीशु ने कहा था, चर्च में संगठित समाज के रूप में पहचाना। मसीही साम्राज्य के दिनों में यह विचार कि चर्च रोमी साम्राज्य का वैध उत्तराधिकारी है और अपने साम्राज्य का विस्तार करने का राजनीतिक अधिकार रखता है, पश्चिमी दुनिया की अन्य भागों की खोज को प्रेरित करता रहा और उपनिवेशवाद के उदय में भी भूमिका निभाई। आज भी ऐसे मसीही अगुवे मिलना कठिन नहीं है जो 'राज्य' को केवल 'चर्च' का दूसरा नाम मानते हैं, और कई अन्य इसे एक प्रकार के राजनीतिक घोषणापत्र के रूप में देखते हैं। यहाँ हम यह सुझाव देंगे कि यीशु द्वारा प्रयुक्त 'परमेश्वर का राज्य' शब्द को इनमें से किसी भी बात तक सीमित नहीं किया जा सकता, बल्कि यह इन सब से अधिक व्यापक है। इसकी अच्छी परिभाषा है – **'परमेश्वर का कार्य करने का तरीका'।**

यह उन मूल्यों और मानकों से आरंभ होता है जो परमेश्वर के अपने चरित्र को सबसे अधिक प्रतिबिंबित करते हैं। जब यीशु उनके महत्व को स्पष्ट करते हैं, तो वह अनिवार्य रूप से यह भी बताते हैं कि इन्हें जीवन की विभिन्न परिस्थितियों में व्यावहारिक रूप से कैसे लागू किया जा सकता है। इसका अर्थ है कि हम ऐसे उदाहरण पा सकते हैं कि शिष्यत्व राजनीति, अर्थशास्त्र या अन्य ठोस सामाजिक वास्तविकताओं को कैसे प्रभावित कर सकता है। परंतु ये बातें 'परमेश्वर के राज्य' के अर्थ को पूरी तरह समाप्त नहीं करतीं, क्योंकि यह उससे कहीं अधिक व्यापक और गहरा हैः व्यापक इसलिए कि यह **जीवन के हर क्षेत्र– निजी और सार्वजनिक**– में लागू होने वाला एक जीवन–मार्ग है, और गहरा इसलिए कि यह केवल **भौतिक ही नहीं बल्कि आत्मिक वास्तविकताओं** को भी संबोधित करता है, उन लोगों को जिन्होंने इसमें स्वयं को

समर्पित किया है, सच्ची स्वतंत्रता और न्याय की नई समझ देता है, और उनके जीवन में परमेश्वर की उपस्थिति का नया अनुभव कराता है।

एक नए जीवन–मार्ग की बात करते हुए

....हम यह मानने में सही हैं कि यीशु वास्तव में 'परमेश्वर का राज्य' नहीं बल्कि 'परमेश्वर का राजत्व' कह रहे थे। 'राजत्व' का अर्थ है परमेश्वर की शैली, उसका कार्य करने का तरीका, और वह उदाहरण जो वह दूसरों के लिए प्रस्तुत करता है। यह समझने में मदद करता है कि क्यों यीशु मानव जीवन की गुणवत्ता और सार्थक संबंधों के स्वरूप को लेकर सबसे अधिक चिंतित थे। उन्होंने शक्ति और नियंत्रण के दृष्टिकोण को अस्वीकार किया और प्रेम, स्वीकार्यता तथा पारस्परिक सेवा को प्राथमिकता दी। उनके लिए ये गुण उनके शिष्यों के जीवन की पहचान होने चाहिए क्योंकि उन्होंने इन्हें परमेश्वर के व्यक्तित्व का केंद्रीय भाग माना।

यह हमें यीशु द्वारा कही गई कुछ कठिन बातों को समझने में मदद करता है। उदाहरण के लिए, उन्होंने फरीसियों से कहा, *'परमेश्वर का राज्य प्रगट रूप से नहीं आता.....क्योंकि देखो परमेश्वर का राज्य तुम्हारे बीच में है'* (लूका 17:20–21)। एक अन्य अवसर पर उन्होंने अपने शिष्यों से कहा, *'जो कोई परमेश्वर के राज्य को बालक के नाईं ग्रहण न करे, वह उसमें कभी प्रवेश करने न पाएगा'* (मरकुस 10:15)। किसी राजनीतिक क्षेत्र के बारे में यह कहना कि वह व्यक्तियों के जीवन में विद्यमान है, असंगत होता। कोई व्यक्ति किसी राज्य को 'ग्रहण' नहीं कर सकता, न ही वह उसके भीतर हो सकता है। परंतु यीशु कह रहे थे कि जिस क्षण कोई व्यक्ति अपने जीवन में परमेश्वर को सर्वोच्च मान लेता है, उसी क्षण 'परमेश्वर का राज्य' वास्तव में आ जाता है। वह यह भी कह सकते थे कि यह राज्य पहले से ही उनके सुननेवालों के बीच है, क्योंकि वह स्वयं वहाँ उपस्थित थे और परमेश्वर के मूल्यों और मानकों को खोजने और उन्हें व्यवहार में लाने के लिए पूरी तरह समर्पित थे।

इसी प्रकार यीशु ने 'राज्य में प्रवेश' की तुलना 'जीवन में प्रवेश' से की (मरकुस 9:43–47, मत्ती 25:34–46, मरकुस 10:17–23)। घर से भागे हुए पुत्र की प्रसिद्ध कहानी भी इस बात पर बल देती है कि राज्य का सदस्य होना परमेश्वर के पारिवारिक जीवन में सहभागी होना है और परमेश्वर को एक प्रेमी पिता के रूप में अनुभव करना है (लूका 15:11–32)।

साथ ही, राज्य को केवल मनुष्य और परमेश्वर के व्यक्तिगत संबंध के रूप में समझना गलत होगा, क्योंकि सुसमाचारों में कई कथन दिखाते हैं कि यीशु ने परमेश्वर के राज्य को न केवल अपने अनुयायियों के जीवन में परमेश्वर के आंतरिक शासन के रूप में देखा, बल्कि किसी ठोस वास्तविकता के रूप में भी। उदाहरण के लिए, उन्होंने कहा कि *'पूर्व और पश्चिम, उत्तर और दक्षिण से लोग आकर परमेश्वर के राज्य के भोज में भागी होंगे'* (लूका 13:29)। अंतिम भोज में यीशु ने शिष्यों से कहा – *'जब तक परमेश्वर का*

राज्य न आ जाए तब तक मैं दाख रस अब से कभी न पीऊंगा' (लूका 22:18)। मत्ती ने लिखा कि उनके अनुयायी उस राज्य के वारिस होंगे जो जगत की उत्पत्ति से तैयार किया गया है (मत्ती 25:34)।

इस प्रकार यीशु ने परमेश्वर के राज्य की अवधारणा को कम से कम दो तरीकों से समझा; **एक ओर, शिष्यों के जीवन में परमेश्वर के मार्गदर्शन के रूप में, और दूसरी ओर, ऐसी वास्तविकता के रूप में जिसे परमेश्वर किसी प्रकार पूरे संसार के सामने प्रकट करेगा।**

यीशु इस बात के प्रति भी आश्वस्त थे कि परमेश्वर निर्णायक और प्रत्यक्ष रूप से कार्य करेगा, न केवल व्यक्तियों के जीवन में, बल्कि राज्यों और साम्राज्यों के सार्वजनिक मामलों में भी (मरकुस 13)।''

(जॉन ड्रेन)

परिशिष्ट 4

स्टीफन ट्रैविस की पुस्तक 'स्टार्टिंग विद न्यू टेस्टामेंट' के अध्याय 6 से (लायन पब्लिशिंग)

'मेरा प्रेम मसीह यीशु में तुम सब से रहे' : पौलुस के पत्र

"मैं चाहता हूँ कि इन कठिन परिस्थितियों में मैं तुम्हारे साथ होता। फिलहाल यह असंभव है। लेकिन मैंने तुम्हारे बारे में सोचना नहीं छोड़ा है। और मैं अपनी सलाह लिख रहा हूँ इस आशा से कि जब तक मैं फिर से तुम्हारे साथ न हो सकूँ, यह तुम्हारी मदद करेगी..."

कभी न कभी आपने भी ऐसा कोई पत्र लिखा होगा। हम पत्र लिखते हैं ताकि अपने मित्रों से वही कह सकें जो हम उनके साथ होते तो कहते।

प्रथम मसीही भी इसी कारण पत्र लिखते थे। लगभग दो हजार वर्ष बाद भी प्रेरित पौलुस के पत्रों के कुछ भाग उतने ही वास्तविक और प्रासंगिक हैं जितने वे पहली बार लिखे गए थे – तुर्की, यूनान और रोम के मसीहियों के लिए। और ये पत्र तथा अन्य मसीही अगुवों के पत्र, प्रेरितों के काम के बाद नए नियम में पाए जाते हैं।

पौलुस एक अद्‌भुत व्यक्ति था। एक धर्मनिष्ठ यहूदी के रूप में पला–बढ़ा, वह यहूदी व्यवस्था का शिक्षक बना और यीशु के अनुयायियों को सताया, जब तक कि दमिश्क के मार्ग पर जीवित मसीह से उसकी नाटकीय भेंट नहीं हुई। यह कहानी प्रेरितों के काम 9 में बताई गई है और यह घटना लगभग ईस्वी 32 से 35 के बीच हुई होगी – अर्थात यीशु के पुनरुत्थान के लगभग तीन वर्षों के भीतर। इसके बाद वह अपने नए मिले विश्वास का निडर प्रचारक बन गया।

उसके मिशनरी कार्य के बहुत से विवरण दर्ज नहीं हैं। प्रेरितों के काम 13–28 में वर्णित मिशनरी यात्राएँ लगभग ईस्वी 46 से 62 तक की अवधि को ही ब्यान करती हैं। इन वर्षों में उसने कम से कम 15,000 किलोमीटर की यात्रा की। अक्सर वह भूखा–प्यासा रहा। डाकुओं से खतरे का सामना किया। उसे कैद किया गया और कोड़े लगाए गए, क्योंकि लोग उसके संदेश से घृणा करते थे या उसे राज्य के लिए खतरा मानते थे। वह तीन या चार बार जहाज–डूबने का शिकार हुआ।

फिर भी उसने तुर्की और यूनान के प्रमुख नगरों में कलीसियाएँ स्थापित कीं। प्रारंभिक कलीसिया के महान विचारकों में से एक के रूप में उसने नए मसीहियों को यह समझने में मदद की कि यीशु की मृत्यु और पुनरुत्थान का क्या अर्थ है और अपने विश्वास को अपने दैनिक जीवन से कैसे जोड़ें। उसने दिखाया कि किस प्रकार एक फिलिस्तीनी[5] उपदेशक का जीवन और संदेश जाति और संस्कृति की दीवारों को पार कर यूनान और रोम की विश्वनगरीय दुनिया तक पहुँच सकता है।

---

[5]संपादकीय टिप्पणी: वास्तव में यहूदिया को पैलेस्टाइन केवल ईस्वी 70 के बाद कहा जाने लगा था – यीशु एक यहूदियन या यहूदी उपदेशक थे।

पौलुस ने रोमी साम्राज्य भर की कलीसियाओं के मसीहियों को पत्र लिखे।
नए नियम में पौलुस के पत्र संरक्षित हैं – रोमियों, कुरिन्थियों, गलातियों, इफिसियों, फिलिप्पियों, कुलुस्सियों और थिस्सलुनीकियों को लिखे गए पत्र। इसके अतिरिक्त उसने व्यक्तिगत कलीसिया अगुवों को भी पत्र लिखे– तीमुथियुस, तीतुस और फिलेमोन को

पौलुस के पत्र[6] अधिकतर उन कलीसियाओं को लिखे गए थे जिन्हें उसने स्वयं स्थापित किया था – जैसे कुरिन्थ, थिस्सलुनीका और फिलिप्पी। इनमें से दो पत्र– रोम और कुलुस्से को लिखे गए– जो उन कलीसियाओं को शिक्षा और मार्गदर्शन प्रदान करते हैं जिन्हें अन्य लोगों ने शुरू किया था। छोटे पत्र – तीमुथियुस, तीतुस और फिलेमोन व्यक्तिगत कलीसिया के अगुवों को संबोधित हैं।

पौलुस के पत्र पढ़ना

जब आप पौलुस के पत्र पढ़ना शुरू करते हैं तो आपको एहसास होता है कि वे कई महत्वपूर्ण तरीकों से अन्य पत्रों जैसे ही हैं। सबसे स्पष्ट बात यह है कि पौलुस और किसी विशेष कलीसिया के बीच हुए पत्राचार या बातचीत का वे केवल एक पक्ष हैं। आप किसी और की चिट्ठी पढ़ रहे हैं, और उसमें कुछ बातें विस्फोटक भी हैं!

कभी–कभी वह स्पष्ट करता है कि वह उस वास्तविक पत्र का उत्तर दे रहा है जो कलीसिया ने उसे लिखा था (देखें 1 कुरिन्थियों)। लेकिन पौलुस के उत्तर की पंक्तियों को पढ़कर हम केवल अनुमान ही लगा सकते हैं कि उनके पत्र में क्या लिखा था। यह कभी मज़ेदार होता है, तो कभी निराशाजनक भी!

लेकिन यह निश्चित है कि उसने केवल समय बिताने के लिए पत्र नहीं लिखे। अधिकांशतः उसने कलीसियाओं को इसलिए लिखा क्योंकि उन्हें किसी न किसी तरह सुधार की आवश्यकता थी। यह हैरानी की बात नहीं है, क्योंकि वे सब हाल ही में ही मसीही बने थे।

कभी–कभी उसने उस कलीसिया को लिखा जिसने मसीह के सुसमाचार को मूल रूप से गलत समझा था। उदाहरण के लिए, उसने गलातियों को लिखा क्योंकि रोमी प्रांत गलातिया (तुर्की में) की कलीसियाओं के लोग मानते थे कि वे यीशु के अनुयायी केवल तभी हो सकते हैं जब वे पूरी यहूदी व्यवस्था का पालन करें। इसके विपरीत, पौलुस ने ज़ोर देकर कहा कि यीशु ने अपनी मृत्यु और पुनरुत्थान द्वारा हमें स्वतंत्रता दिलाई है। हम उसके लोग केवल तब बनते हैं जब हम उससे नया जीवन उपहार के रूप में प्राप्त करते हैं।

यहूदी लोग परमेश्वर के साथ अपने संबंध को व्यवस्था का पालन करके व्यक्त करते थे। इसमें वे दस आज्ञाएँ भी शामिल थीं, जो परमेश्वर ने मूसा को दी थीं, साथ ही खतना और भोजन की तैयारी से संबंधित अन्य नियम भी। कुछ यहूदी मसीही मानते थे कि अन्यजाति (गैर–यहूदी) मसीही तब तक परमेश्वर के लिए वास्तव में स्वीकार्य नहीं हो सकते जब तक वे इन सभी नियमों का पालन न करें।

[6]संपादकीय टिप्पणीः यह ध्यान रखना महत्वपूर्ण है कि यहाँ स्टीफन ट्रैविस के विचार कि पौलुस ने कौन–से पत्र लिखे, सभी नए नियम के विद्वानों द्वारा साझा नहीं किए जाते। उदाहरण के लिए, बहुत से विद्वान इफिसियों की पत्री को पौलुस की रचना मानने पर विवाद करते हैं। नए नियम के प्रत्येक विद्यार्थी को स्वयं अपना मत बनाना चाहिए।

कभी–कभी पौलुस ने उन मसीहियों को लिखा जो मसीह के सत्य को अपने आसपास की दुनिया के लोकप्रिय विचारों के साथ गड़बड़ाने के खतरे में थे। कुलुस्से की कलीसिया– कुलुस्सियों –को उसने एक पत्र लिखा जिसमें दिखाया गया कि मसीह हमें परमेश्वर के बारे में जानने के लिए आवश्यक सब कुछ प्रकट करता है। अन्य समयों में उसने मसीही आचरण के बारे में विकृत विचारों को सुधारने के लिए लिखा। उदाहरण के लिए, कुरिन्थ की कलीसिया ऐसे लोगों से भरी थी जो 'मसीही स्वतंत्रता' के नाम पर दावा करते थे कि किसी भी प्रकार का आचरण परमेश्वर को स्वीकार्य है। इसलिए पौलुस ने कुरिन्थियों को लिखे अपने दूसरे पत्र में तर्क दिया कि यीशु के साथ हमारा संबंध यह मांग करता है कि हम अपने जीवन में उसके चरित्र को प्रतिबिंबित करें।

जब भी हम नए नियम का कोई पत्र पढ़ते हैं, हमें पंक्तियों के बीच थोड़ा पढ़ना पड़ता है – यह पूछते हुए कि किस परिस्थिति ने लेखक को इन विशेष सत्यों पर ज़ोर देने के लिए प्रेरित किया होगा। यह कठिन लग सकता है, लेकिन थोड़ी कल्पना और मित्रों के बीच चर्चा इसे बहुत फलदायी बना सकती है।

आज नए नियम के पत्र पढ़ना

यद्यपि नए नियम के पत्र लगभग दो हज़ार वर्ष पुराने हैं, फिर भी उनके कुछ भाग आसानी से समझे जा सकते हैं और हमारे जीवन से जोड़े जा सकते हैं। उदाहरण के लिए जब हम 1 कुरिन्थियों 13 में प्रेम के प्रसिद्ध खंड को पढ़ते हैं, तो कठिनाई उसके अर्थ को समझने में नहीं होती। मुख्य समस्या उसकी माँग के अनुसार जीवन जीने में होती है।

परेशान करने वाले अंश

"अधिकतर लोग बाइबल के उन अंशों से परेशान होते हैं जिन्हें वे में समझ नहीं पाते, लेकिन मेरी दृष्टि में, वे अंश मुझे सबसे अधिक परेशान करते हैं जिन्हें मैं समझता हूँ।" मार्क ट्वेन

लेकिन पत्रों के अन्य भागों को हमारे जीवन से इतनी आसानी से नहीं जोड़ा जा सकता। हम अब बहुत भिन्न परिस्थितियों में रहते हैं। उदाहरण के लिए, कुछ पत्र यह मार्गदर्शन देते हैं कि मसीही दास और दास–स्वामी को कैसे व्यवहार करना चाहिए। ऐसी शिक्षा उस समाज में आवश्यक थी जहाँ दासता सामान्य थी और शीघ्र समाप्त होने वाली नहीं थी।

लेकिन इन निर्देशों का उन समाजों में क्या अर्थ है, जिन्होंने अंततः मसीही संदेश से यह सीखा कि दासता मानवता को नीचा दिखाती है?....

एक बार जब हम देख लेते हैं कि नए नियम से कौन–से मूलभूत सिद्धांत सुझाए जा सकते हैं, तब हम अपने परमेश्वर द्वारा दिए गए मन का उपयोग करके यह समझ सकते हैं कि उन सिद्धांतों को किसी विशेष परिस्थिति में कैसे लागू किया जाए। नया नियम किसी नक्शे की तरह नहीं है, जो हर परिस्थिति के लिए विस्तृत निर्देश दे। यह एक कंपास की तरह है, जो हमें सही दिशा दिखाता है।

परिशिष्ट 5

वाल्टर होलेनवेगर द्वारा लिखित 'कॉंफल्किट इन कुरिन्थुस' (पृष्ठ 8–11), जिसे स्थानीय कुरिन्थियन बैंक[7] के एक प्रबंधक (एक दास) के नज़रीय से प्रस्तुत किया गया है।

मैंने एरास्तुस को उस विला के आँगन से निकलते देखा जहाँ मसीहीयों की सभा हो रही थी, और थोड़ी देर बाद वह एक स्क्रॉल बाँह के नीचे दबाए लौट आया। उसने मुझे सभा की शुरुआत में बहुत आत्मीयता से अभिवादन किया था, इसलिए मैं उत्साहित हुआ कि उससे पूछूँ यह सब क्या है। उसने कहा, "देखिए, मसीही कुरिन्थ के अन्य धार्मिक समाजों से अलग हैं। मसीही लोग दासों और स्वतंत्र जनों के लिए अलग–अलग धार्मिक सभाएँ नहीं रखते। इससे उन शिक्षित दासों को असुविधा होती है जो यह नहीं जानते कि वे किस समूह में गिने जाएँगे।" उसने यह बात जान–बूझकर कही क्योंकि वह जानता था कि मैं उन्हीं में से एक हूँ। मैंने पूछा, "लेकिन क्या इस तरह संस्कृतियों और सामाजिक स्तरों का मिश्रण वित्तीय और मानसिक समस्याएँ पैदा नहीं करता?" उसने उत्तर दिया, "निश्चित रूप से करता है, जैसा कि आप इस सभा में देख सकते हैं। और जो आपने सुना है, वो मसीही समुदाय में विवाद का एकमात्र कारण नहीं है। आप जानते ही हैं कि मैं कुरिन्थ नगर के लोक–निर्माण विभाग का अध्यक्ष हूँ और मुझे अनेक भोजों और स्वागत समारोहों में भाग लेना पड़ता है। वहाँ जो मांस परोसा जाता है, वह मंदिरों से आता है और मूर्तियों को अर्पित किया गया होता है। यदि मैं इन भोजों में भाग न लूँ तो मुझे अपना पद छोड़ना पड़ेगा। परंतु मेरा मत है कि मसीही व्यक्ति के लिए इस सब की अनुमति है, यहाँ तक कि व्यावसायिक भोजों और राजनीतिक रात्रिभोजों में भाग लेना भी, जहाँ हम महत्वपूर्ण अनुबंध और राजनीतिक समझौते तैयार करते हैं।"

तभी तर्तियुस ने एरास्तुस को बीच में रोका। "यह केवल मूर्तियों को अर्पित मांस का प्रश्न नहीं है, जिसका खलोए विरोध करती है। वह कहती है कि कोरिन्थ की वेश्याएं भी इन भोजों में आती हैं – व्यावसायिक और राजनीतिक वेश्याएं" मैंने पूछा, "आपका मतलब उन वेश्याओं से है जिनका उपयोग कुछ अनुबंध जीतने के लिए किया जाता है?" बैंक में अपने काम से मुझे पता था कि ऐसी बातें होती हैं।

एरास्तुस ने कहा, "कोई टिप्पणी नहीं।" फिर उसने कहा, "इन वेश्याओं के साथ जाम उठाना अपेक्षित होता है, पर इसके अतिरिक्त कोई और बाध्यता नहीं होती।"

उसके लिए यह विषय स्पष्टतः असहज था। उसने चलते–चलते कहा, "क्लोए की आलोचनाओं को बहुत गंभीरता से न लें। यह कुछ ऊँचे विचारों वाली 'महिला मुक्ति की प्रेरक' है, जिसके पास कोई परिवार नहीं है जो उसे महत्व और अपनापन दे सके। उसके पास केवल उसके अनुयायी हैं, विदेशी गोदी मज़दूर और दास, जो उसका अहं बढ़ाते हैं।"

---

[7]इस पाठ का विस्तृत संस्करण यहाँ पाया जा सकता हैः http://www.warc.ch/miu/rw004/holl.html (एसैस्ड ऑन 28/6/05)

यह बातचीत समाप्त करने का संकेत था। अब एरास्तुस आगे बढ़ा और स्क्रॉल को खोल दिया। उसके दोनों ओर एक–एक मसीही मशाल लिए खड़ा था। गयुस ने उसका परिचय कराया, "जैसे पौलुस ने यहाँ कोरिन्थ में रहते हुए रोमियों को पत्र लिखा था – आप याद करते होंगे कि वह दिन–रात काम करता था – वैसे ही उसने हमें इफिसुस से एक लंबा उत्तर लिखा है। कई रविवारों से हम उसके उत्तर के अंश पढ़ते आ रहे हैं, और आज हम, मेरी दृष्टि में, उसके सबसे महत्वपूर्ण और शिक्षाप्रद भाग पर पहुँचे हैं। एरास्तुस, कृपया पढ़िए।"

परमेश्वर के नागरिकों की सभा

दो मशालधारी एरास्तुस के पास आए और आँगन में पूर्ण शांति छा गई। एरास्तुस ने बोलना आरंभ किया, "क्योंकि मसीह एक शरीर के समान है, जिसमें बहुत से अंग हैं, जो अनेक होते हुए भी मिलकर एक ही शरीर बनाते हैं। वास्तव में हम सब एक ही आत्मा में बपतिस्मा लेकर एक ही शरीर में लाए गए हैं, चाहे हम यहूदी हों"–और यहाँ उसने क्रिस्पुस की ओर देख–"या यूनानी"–वह रुका मानो कहना चाहता हो, 'जैसा कि मैं हूँ'–"चाहे दास हों"– और जब उसने यह शब्द कहा तो खलोए के लोग और गोदी के मज़दूरों ने अपने हाथ ऊपर उठाए और एक ऊँचे स्वर में पुकारा, 'हालेलूयाह, कुरियॉस यीशु!' फिर वह पुकार एक फ्यूग या भजन का रूप लेने लगी। 'हाल्ले–, हाल्ले–, हालेलूयाह! यीशु प्रभु है! हाल्ले–, हाल्ले–,हालेलूयाह! यीशु प्रभु है!' और अंततः सब ने, केवल दास ही नहीं, मिलकर पुकारा, 'यीशु प्रभु है!'
"तुम ठीक कहते हो," एरास्तुस ने आगे कहा, "पर सुनो वह आगे क्या कहता हैः चाहे दास हों या स्वतंत्र"–और अब वहाँ सन्नाटा था, क्योंकि वे मसीही जो जन्म से स्वतंत्र थे या जिन्हें उनके स्वामी ने स्वतंत्रता दी थी, बिलकुल मौन खड़े थे–"हम सब एक ही पवित्र आत्मा में डुबोए गए हैं।"
"आमीन, हालेलूयाह," सभा ने उत्तर दिया।
अब खलोए फिर खड़ी हुई। "और स्त्रियाँ–क्या वो स्त्रियों को भूल गया है?"
एरास्तुस ने अपने पांडुलिपि की ओर देखा।" मुझे कहीं नहीं मिलता कि उसने स्त्रियों का उल्लेख किया है।"
एक अन्य स्त्री, फोइबे उठी, जो सेंक्रेई बंदरगाह की रहने वाली थी। उसने धीरे और शांति से कहा, "स्त्रियों का उल्लेख करना आवश्यक नहीं है। हम यहाँ हैं। हम सेवा में भाग लेते हैं। हम एक ही पवित्र आत्मा में डुबोए गए हैं। कोई इसे नकार नहीं सकता।" मेरे आसपास कुछ पुरुषों ने गहरी साँस ली। पर वे बोले नहीं।
एरास्तुस ने आगे कहा, "शरीर मात्र एक अंग ही नहीं, बल्कि अनेक है। मान लो कि पैर कहे, 'क्योंकि मैं हाथ नहीं हूँ, मैं शरीर का अंग नहीं हूँ,' तो भी वह शरीर का अंग है। मान लो कि कान कहे, 'क्योंकि मैं आँख नहीं हूँ, मैं शरीर का अंग नहीं हूँ,' तो भी वह शरीर का अंग है। यदि शरीर सब आँख होता, तो सुनता कैसे? यदि सब कान होता, तो सूँघता कैसे? पर वास्तव में, परमेश्वर ने प्रत्येक अंग को शरीर में

अपनी इच्छा के अनुसार स्थान दिया है। यदि सब अंग एक ही कार्य करते, तो शरीर कैसे कार्य करता? इसी कारण अनेक अंग हैं, पर एक ही शरीर।"

"आँख हाथ से नहीं कह सकती, 'मुझे तेरी आवश्यकता नहीं,' न ही सिर पैरों से कह सकता है, 'मुझे तेरी आवश्यकता नहीं।' इसके विपरीतः वे अंग जो शरीर में कमज़ोर प्रतीत होते हैं, वे भी ज़रूरी हैं"—और यहाँ मैंने देखा कि एक गोदी मजदूर ने अंगूर चबाना रोक दिया और उसे थूक दिया—"और जिन्हें हम कम सम्माननीय मानते हैं, उन्हें विशेष सम्मान दिया जाता है। हमारे अशोभनीय अंगों को असाधारण आदर दिया जाता है। सम्माननीय अंगों को इसकी आवश्यकता नहीं होती।"

"आमीन," उस दास ने पुकारा जिसने अभी अंगूर थूका था। "यदि यह सत्य है तो एरास्तुस को वो धन जो उसने कुरिन्थ की मुख्य सड़क को पक्का करने के लिए दिया था, हमें दासों को देना चाहिए, क्योंकि सम्माननीय लोगों को इसकी आवश्यकता नहीं, पर हम कमज़ोर लोग इसका अच्छा उपयोग कर सकते हैं।" एरास्तुस रुक गया। उसे पीड़ा हुई कि उसका राजनीतिक जीवन, जिसमें उसने मुझे बताया था कि समझौते आवश्यक थे, चर्च में चर्चा का विषय बन गया।

परिशिष्ट 6

तीन विश्वास–पत्र (क्रीडस)

प्रेरितों का विश्वास–पत्र

मैं विश्वास करता हूँ परमेश्वर पिता पर,
जो सर्वशक्तिमान, आकाश और पृथ्वी के सृष्टिकर्ता हैं।
मैं विश्वास करता हूँ यीशु मसीह पर,
उसके एकलौते पुत्र, हमारे प्रभु पर।
वह पवित्र आत्मा से गर्भ में आया,
कुँवारी मरियम से जन्मा।
पोंतियुस पीलातुस के राज्य मे दुःख उठाया,
क्रूस पर चढ़ाया गया, मर गया और गाड़ा गया।
वह अधोलोक में उतरा।
तीसरे दिन मृतकों में से जी उठा।
स्वर्ग पर उठा लिया गया,
और परमेश्वर पिता सर्वशक्तिमान के दाहिने हाथ बैठा है।
वहाँ से वह जीवित और मृतकों का न्याय करने आएगा।
मैं विश्वास करता हूँ पवित्र आत्मा पर, पवित्र कलीसिया पर,
पवित्र जनों की संगति पर, पापों की क्षमा पर,
शरीर के पुनरुत्थान पर, और अनन्त जीवन पर।
आमीन।

नीकिया का विश्वास–पत्र

हम विश्वास करते हैं एक परमेश्वर पर,
पिता सर्वशक्तिमान पर, जो स्वर्ग और पृथ्वी का,
और सब दृश्य और अदृश्य वस्तुओं का सृष्टिकर्ता है।
और एक प्रभु, यीशु मसीह पर, परमेश्वर का एकलौता पुत्र,
जो पिता से अनंतकाल के लिए उत्पन्न हुआ।
सच्चे परमेश्वर से सच्चा परमेश्वर,
प्रकाश से प्रकाश, जन्मा हुआ, बनाया नहीं गया,

पिता के साथ एक ही सार का।
जिसके द्वारा सब वस्तुएँ बनाई गईं।
हम मनुष्यों और हमारे उद्धार के लिए वह स्वर्ग से उतरा,
और पवित्र आत्मा और कुँवारी मरियम से देह धारण की, और मनुष्य बना।
हमारे लिए पोंतियुस पीलातुस के अधीन क्रूस पर चढ़ाया गया,
उसने दुःख उठाया और गाड़ा गया।
तीसरे दिन वह पवित्र शास्त्रों के अनुसार जी उठा।
स्वर्ग पर चढ़ा और पिता के दाहिने हाथ बैठा।
वह महिमा सहित फिर आएगा, जीवित और मृतकों का न्याय करने।
उसका राज्य कभी समाप्त नहीं होगा।
हम विश्वास करते हैं पवित्र आत्मा पर, जो प्रभु है और जीवन देता है,
जो पिता और पुत्र से निकलता है, जो पिता और पुत्र के साथ मिलकर आराधना और महिमा पाता है,
जिसने भविष्यद्वक्ताओं के द्वारा कहा।
हम विश्वास करते हैं एक पवित्र, सार्वभौमिक और प्रेरितों की कलीसिया पर।
हम पापों की क्षमा के लिए एक ही बपतिस्मा को मानते हैं।
हम मृतकों के पुनरुत्थान और आने वाले युग के जीवन की आशा करते हैं।
आमीन।

अथानासियुस का विश्वास–पत्र (बुक ऑफ कॉमन प्रेअर 1662 से लिया गया है)

जो कोई उद्धार पाना चाहता हैः उसके लिए सबसे पहले यह आवश्यक है कि वह कैथोलिक विश्वास को थामे। और यह विश्वास यदि कोई संपूर्ण और निष्कलंक रूप से न रखेः तो निश्चय ही वह सदा के लिए नाश होगा। कैथोलिक विश्वास यह हैः

हम एक परमेश्वर की आराधना करते हैं त्रिएकता में, और एकता में, त्रिएकता की आराधना करते हैं;
न तो व्यक्तियों को मिलाते हैं, न ही सार को विभाजित करते हैं। क्योंकि पिता एक व्यक्ति है, पुत्र दूसरा, और पवित्र आत्मा तीसरा। परन्तु पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा का परमेश्वरत्व एक ही हैः महिमा समान है, महानता अनन्त है। जैसा पिता है, वैसा ही पुत्र है, और वैसा ही पवित्र आत्मा है।
पिता असृजित है, पुत्र असृजित है, और पवित्र आत्मा असृजित है।
पिता अगम्य है, पुत्र अगम्य है, और पवित्र आत्मा अगम्य है।
पिता अनन्त है, पुत्र अनन्त है, और पवित्र आत्मा अनन्त है।
फिर भी वे तीन अनन्त नहीं, पर एक ही अनन्त हैं।
न ही तीन असृजित, न ही तीन अगम्य, पर एक ही असृजित और एक ही अगम्य।

इसी प्रकार पिता सर्वशक्तिमान है, पुत्र सर्वशक्तिमान है, और पवित्र आत्मा सर्वशक्तिमान है।
फिर भी तीन सर्वशक्तिमान नहीं, पर एक ही सर्वशक्तिमान है।
इसी प्रकार पिता परमेश्वर है, पुत्र परमेश्वर है, और पवित्र आत्मा परमेश्वर है।
फिर भी तीन परमेश्वर नहीं, पर एक ही परमेश्वर है।
इसी प्रकार पिता प्रभु है, पुत्र प्रभु है, और पवित्र आत्मा प्रभु है।
फिर भी तीन प्रभु नहीं, पर एक ही प्रभु है।
क्योंकि जैसे हम मसीही सत्य से बाध्य हैं: प्रत्येक व्यक्ति को अलग–अलग परमेश्वर और प्रभु मानने के लिए, वैसे ही हमें कैथोलिक धर्म द्वारा मनाही है; कि हम तीन परमेश्वर या तीन प्रभु कहें।
पिता किसी से उत्पन्न नहीः ं न बनाया गया, न उत्पन्न।
पुत्र केवल पिता से है: न बनाया गया, न सृजित, पर उत्पन्न।
पवित्र आत्मा पिता और पुत्र से है: न बनाया गया, न सृजित, न उत्पन्न, पर प्रवाहित।
इस प्रकार एक ही पिता है, तीन पिता नहीं, एक ही पुत्र है, तीन पुत्र नहीं,
एक ही पवित्र आत्मा है, तीन पवित्र आत्मा नहीं।
और इस त्रिएकता में कोई पहले या बाद में नहीं है, कोई बड़ा या छोटा नहीं है,
परन्तु तीनों व्यक्ति एक साथ अनन्त और समान हैं।
इस प्रकार सब बातों में, जैसा कहा गया है:
त्रिएकता में एकता और एकता में त्रिएकता की आराधना करनी चाहिए।
जो कोई उद्धार पाना चाहता है: उसे त्रिएकता के विषय में ऐसा ही विश्वास रखना चाहिए।
इसके अतिरिक्त अनन्त उद्धार के लिए यह भी आवश्यक है:
कि वह हमारे प्रभु यीशु मसीह के अवतार को सही रूप से माने।
क्योंकि सही विश्वास यह है कि हम मानें और अंगीकार करें:
कि हमारे प्रभु यीशु मसीह, परमेश्वर का पुत्र, परमेश्वर और मनुष्य है,
परमेश्वर, पिता के सार से, जगतों से पहले उत्पन्न,
और मनुष्य, अपनी माता के सार से, जगत में जन्मा।
पूर्ण परमेश्वर और पूर्ण मनुष्यः युक्तिसंगत आत्मा और मानव शरीर सहित।
परमेश्वरत्व में पिता के समानः और मनुष्यत्व में पिता से छोटा।
यद्यपि वह परमेश्वर और मनुष्य है: फिर भी दो नहीं, पर एक ही मसीह है।
एक, परमेश्वरत्व को देह में बदलने से नहीं: पर मनुष्यत्व को परमेश्वरत्व में लेने से।
एक, सार के मिश्रण से नहीं: पर व्यक्ति की एकता से।
जैसे आत्मा और शरीर एक मनुष्य है: वैसे ही परमेश्वर और मनुष्य एक मसीह है।
जिसने हमारे उद्धार के लिए दुःख उठायाः नरक में उतरा, तीसरे दिन मृतकों में से जी उठा।
स्वर्ग पर चढ़ा, और पिता सर्वशक्तिमान के दाहिने हाथ बैठा।

वहाँ से वह जीवित और मृतकों का न्याय करने आएगा।
उसके आने पर सब मनुष्य अपने शरीर सहित फिर उठेंगेः और अपने कर्मों का हिसाब देंगे।
जिन्होंने भलाई की है वे अनन्त जीवन में जाएंगेः और जिन्होंने बुराई की है वे अनन्त आग में जाएंगे।
यह है कैथोलिक विश्वासः जिसे यदि कोई विश्वासपूर्वक न माने, तो वह उद्धार नहीं पाएगा।
आमीन।

परिशिष्ट 7

‘अब्बा’ पर चिंतन योआखिम यरेमियास और आर.टी. फ्रांस

यह हमें एक मौलिक महत्व के तथ्य का सामना कराता है। यहूदी धर्म में हमें परमेश्वर को ‘अब्बा’ कहकर संबोधित करने का एक भी उदाहरण नहीं मिलता, लेकिन यीशु ने अपनी प्रार्थनाओं में हमेशा परमेश्वर को इसी तरह संबोधित किया। केवल एक अपवाद है....क्रूस पर की गई पुकार (मरकुस 15:34, मत्ती 27:46), और उसका कारण यह है कि वह एक कथन है।

यहूदी प्रार्थना साहित्य की इस चुप्पी का भाषाई कारण है। मूल रूप में ‘अब्बा’ एक बड़बड़ाने वाली ध्वनि है, इसलिए यह रूपांतरित नहीं होती और कोई प्रत्यय (सफिक्स) नहीं लेती। जब बच्चा गेहूँ का स्वाद चखता है (अर्थात जब उसका दूध छुड़ाया जाता है), तब वह ‘अब्बा’ और ‘इम्मा’ कहना सीखता है (ये वे पहले स्वर हैं जो बच्चा बड़बड़ाता है)। मूलतः विस्मयादिबोधक रूप में प्रयुक्त ‘अब्बा’ ने नए नियम काल से पहले ही पलिस्तीनी अरामी भाषा में काफी स्थान बना लिया था। इसने ‘इम्पीरियल अरामी’ और बाइबल–इब्रानी रूप ‘अबी’ को पूरी तरह दबा दिया और उसके स्थान पर प्रयोग होने लगा। इसके अतिरिक्त, इसने ‘अबा’ (ज़ोरदार रूप) को भी प्रतिस्थापित कर दिया और ‘उसका पिता’ तथा ‘हमारा पिता’ के लिए सामान्य अभिव्यक्ति के रूप में स्थापित हो गया।

यीशु के समय तक ‘अब्बा’ का प्रयोग केवल छोटे बच्चों की बोली तक सीमित नहीं रहा। बड़े बेटे–बेटियाँ भी अपने पिता को ‘अब्बा’ कहकर संबोधित करते थे। हनिन हा–नेहबा की कथा (पूर्व–ईसा काल की) इस बात का उदाहरण है कि सम्मानित बुजुर्गों को भी ‘अब्बा’ कहा जा सकता था। एक नए खोजे गए यहूदी–ईसाई स्रोत में कहा गया है कि यह इब्रानी भाषा की विशेषता है कि ‘पुत्र’ एक सच्चे और सीधे दास को भी कहा जा सकता है और ‘पिता’ स्वामी और मालिक को। मिद्राश इसकी पुष्टि करता है: ‘जैसे शिष्य पुत्र कहलाते हैं, वैसे ही गुरु पिता कहलाता है।’ रब्बी गमलीएल द्वितीय (लगभग ई. 90) के घर में तो दास तबी को भी ‘अब्बा तबी’ कहा जाता था।

यदि हम इस पृष्ठभूमि को ध्यान में रखें तो यह स्पष्ट हो जाएगा कि पलिस्तीनी यहूदी धर्म में परमेश्वर को संबोधित करने के लिए ‘अब्बा’ का प्रयोग क्यों नहीं किया गया। ‘अब्बा’ बच्चों का शब्द था, जो रोज़मर्रा की बातचीत और शिष्टाचार में प्रयुक्त होता था। यीशु के समकालीनों की संवेदनशीलता के लिए परमेश्वर को इस परिचित शब्द से संबोधित करना असम्मानजनक, बल्कि अकल्पनीय प्रतीत होता।

यीशु ने साहसपूर्वक परमेश्वर को संबोधित करने के लिए ‘अब्बा’ का प्रयोग किया। यह ‘अब्बा’ यीशु की मूल वाणी है।

परमेश्वर को 'अब्बा' कहकर संबोधित करने का महत्व

यीशु की प्रार्थनाओं में परमेश्वर को ''अब्बा'' कहकर संबोधित करना एक बिल्कुल नया और अद्वितीय प्रयोग था। यह उनके परमेश्वर के साथ संबंध के हृदय को व्यक्त करता है। उन्होंने परमेश्वर से वैसे ही बात की जैसे कोई बच्चा अपने पिता से करता है....आत्मविश्वास और सुरक्षा के साथ, और साथ ही आदर और आज्ञाकारिता के साथ।

इस बिंदु पर दो संभावित गलतफहमियों से सावधान करना आवश्यक है। पहला तथ्य यह कि 'अब्बा' मूल रूप से बच्चों का विस्मयादिबोधक शब्द था, कभी–कभी इस गलत धारणा की ओर ले गया कि यीशु ने परमेश्वर को 'पिता' कहकर संबोधित करते समय छोटे बच्चे की भाषा अपनाई। मैं स्वयं भी पहले ऐसा मानता था। लेकिन यह खोज कि नए नियम से पहले के काल में भी बड़े बेटे–बेटियाँ अपने पिता को 'अब्बा' कहकर संबोधित करते थे, इस सीमित व्याख्या को अस्वीकार करती है।

दूसरा तथ्य यह कि 'अब्बा' का प्रयोग पुत्रत्व की चेतना को व्यक्त करता है, हमें इस भ्रम में नहीं डालना चाहिए कि यीशु ने स्वयं विस्तार से 'परमेश्वर का पुत्र' मसीही धर्मशास्त्र (जैसे पूर्व–अस्तित्व की धारणा) को अपनाया था, जो प्रारंभिक कलीसिया में बहुत जल्दी विकसित हो गया था। 'अब्बा' संबोधन की इस अति–व्याख्या को उस शब्द की रोज़मर्रा की ध्वनि रोकती है।

यीशु ने 'अब्बा' को एक पवित्र शब्द माना। जब उन्होंने चेलों को यह शिक्षा दी.... *''पृथ्वी पर किसी को अपना पिता न कहना, क्योंकि तुम्हारा एक ही पिता है, जो स्वर्ग में है''* (मत्ती 23:9)....तो उनका मतलब यह नहीं था कि वे अपने शारीरिक पिता को 'पिता' कहकर संबोधित न करें। बल्कि वे उस प्रथा के बारे में सोच रहे थे जिसमें सम्मानित व्यक्तियों, विशेषकर बुजुर्गों को 'अब्बा' कहा जाता था। यीशु ने चेलों को ऐसा करने से रोका, क्योंकि यह शब्द का अनुचित प्रयोग होता। वे चाहते थे कि 'पिता' का सम्मानजनक नाम केवल परमेश्वर के लिए सुरक्षित रखा जाए। यह रोक इस बात को दर्शाती है कि यीशु 'अब्बा' संबोधन को कितनी श्रद्धा से देखते थे।

परमेश्वर को 'अब्बा' कहकर संबोधित करना यीशु के मिशन के परम रहस्य को व्यक्त करता है। वे इस बात से सचेत थे कि उन्हें परमेश्वर का प्रकाशन सुनाने का अधिकार मिला है, क्योंकि परमेश्वर ने स्वयं को उनके सामने पिता के रूप में प्रकट किया था (मत्ती 11:27)।

यह अंश जॉआखिम जेरमियास की पुस्तक थियोलोजी आफ द न्यु टेस्टामैंट, खंड 1 (लंदन एससीएम, 1975) से लिया गया है।

इस बात की सामान्य सहमति है कि परमेश्वर को 'पिता' कहकर संबोधित करना यीशु की प्रार्थना का सामान्य अभ्यास था (सुसमाचार परंपरा में केवल एक अपवाद है....मरकुस 15:34)। यह उस समय की सामान्य यहूदी भक्ति का हिस्सा नहीं था, बल्कि यीशु की विशिष्टता थी। यहाँ सुसमाचार में अद्वितीय रूप से अरामी शब्द 'अब्बा' (एक ज़ोरदार संबोधन) और उसका यूनानी समकक्ष दोनों दर्ज हैं।
जॉआखिम जेरमियास का यह मत कि परमेश्वर को 'अब्बा' कहकर संबोधित करना यहूदी साहित्य में अद्वितीय है और परमेश्वर के साथ विशेष निकटता को दर्शाता है, आज भी मान्य है। यद्यपि उपदेशकों द्वारा बार–बार यह दावा किया गया है कि 'अब्बा' अंग्रेजी शब्द 'डैडी' के बराबर है, लेकिन जेम्स बार का तर्क सही है कि 'अब्बा' का अर्थ 'डैडी' नहीं है। इसमें कोई बचकानापन नहीं है, बल्कि यह एक पुत्र का अपने पितृसत्तात्मक परिवार में पिता के प्रति आदरपूर्ण निकटता को व्यक्त करता है। इसी अर्थ में यीशु का परमेश्वर को इस रूप में संबोधित करना अद्वितीय और प्रभावशाली है, और बाद में उनके अनुयायियों ने इसे अपनाया। पौलुस ने 'अब्बा' को विश्वासियों और परमेश्वर के बीच अद्भुत और पहले अस्वीकार्य संबंध के चिन्ह के रूप में प्रस्तुत किया (रोमियों 8:15, गलातियों 4:6)।

यीशु की प्रार्थना अपने पिता से दो धारणाओं पर आधारित थी; एक ओर, 'तेरे लिए सब कुछ संभव है।' दूसरी ओर, परमेश्वर की इच्छा है जिसे प्रार्थना द्वारा बदला नहीं जाना चाहिए, बल्कि स्वीकार किया जाना चाहिए।
इन दोनों विश्वासों का मेल ही प्रार्थना को उसका रहस्यमय बल देता है और किसी 'तुरंत समाधान' वाले दृष्टिकोण को विफल करता है। मरकुस 11:22–25 को याद करने वाला पाठक जानता है कि प्रभावी प्रार्थना की सभी शर्तें पूरी हो चुकी हैं, इसलिए यीशु की मुक्ति संभव है। लेकिन यह हमारे लिए....यहाँ तक कि यीशु के लिए भी....मान लेना उचित नहीं कि परमेश्वर, जो हर निवेदन का उत्तर दे सकता है, वह अवश्य ही ऐसा करने का इच्छुक होगा। इस प्रकार समझी गई प्रार्थना का अर्थ है परमेश्वर का मन बदलना नहीं, बल्कि अपनी इच्छा को परमेश्वर की इच्छा के अनुरूप करना। जहाँ हमारी इच्छा परमेश्वर के उद्देश्य से मेल नहीं खाती, वहाँ हमारी इच्छा को ही हटना होगाः 'मेरी नहीं, परन्तु तेरी इच्छा पूरी हो।'

यह अंश आर.टी.फ्रांस की पुस्तक द न्यु इंटरनेशनल ग्रीक टेस्टामेंट कमैंटरीः द गॉस्पल ऑफ मार्क (कार्लिस्ले पैटरनोस्टर प्रैस, 2002, पृष्ठ 548) से लिया गया है।

शब्दावली

Atonement (प्रायश्चित/मेल–मिलाप)शाब्दिक अर्थ एट–वन–मैंट यानी एक होना। सामान्यतः 'प्रायश्चित के सिद्धांतों' के संदर्भ में प्रयोग होता है, जिसका अर्थ है मसीह की मृत्यु द्वारा मानवता के उद्धार की प्रभावशीलता का अध्ययन।

Christology मसीह के व्यक्तित्व और कार्य का अध्ययन।

Constitutive संविधानात्मक–ये सिद्धांत कभी–कभी 'वस्तुनिष्ठ' सिद्धांतों के समान होते हैं और आधुनिक चर्चाओं में वस्तुनिष्ठ' शब्द के स्थान पर प्रयुक्त होते हैं, क्योंकि ये कुछ अधिक सूक्ष्म और लचीले माने जाते हैं। इनका दावा है कि मसीह हमारे लिए कुछ ऐसा सिद्ध करते हैं जिससे उद्धार संभव हो जाता है।

Expiation प्रायश्चित/दोष–निवारण क्रिस्टोलॉजी के संदर्भ में इसका अर्थ है कि मसीह की मृत्यु परमेश्वर के प्रति अपराध के कारण (हमारे पाप) को दूर करती है। (देखें: प्रायश्चित)।

Existentialist अस्तित्ववादी– विचारधारा का एक विद्यालय, जिसे 1940 के दशक में जीन–पॉल सार्त्र ने प्रसिद्ध किया। इसमें संसार को निरर्थक माना जाता है और प्रत्येक व्यक्ति अकेला खड़ा होता है तथा अपने कर्मों के लिए स्वयं उत्तरदायी होता है। इन्हीं कर्मों से वह अपना चरित्र बनाता है और अपना अस्तित्व परिभाषित करता है। प्रमुख ईसाई अस्तित्ववादी विचारक हैं– पॉल टिलिख और जॉन मैक्वैरी।

Forensic प्रायश्चित के वे सिद्धांत जो अपनी कल्पना और भाषा रोमी न्यायालयों से लेते हैं, इसके विपरीत उदाहरण के लिए बाज़ार की भाषा (देखें: मुक्ति)।

Gnostic (ज्ञानवादी) ज्ञान (ग्नॉस्सि) के लिए यह ग्रीक शब्द से निकला। यह एक उप–ईसाई विधर्म था जिसने यीशु के बारे में कुछ कल्पनाशील शिक्षाओं को फारसी द्वैतवाद और कभी–कभी यहूदी चित्रण (या अधिकतर यहूदी–विरोध) के साथ मिला दिया। उदाहरणः मार्सियन (मृत्यु लगभग 160 ई.) ने सोचा कि याहवे शैतान है और पूरा पुराना नियम दुष्ट है...यहाँ तक कि नए नियम के कुछ हिस्से भी। उसने उन्हें हटा दिया और उसके पास इतना ही नया नियम बचा कि शायद £5 के नोट के पीछे लिखा जा सके।

Incarnation अवतार –शाब्दिक अर्थ है "देहधारण" या "देह में आना"। इसका मतलब है कि परमेश्वर का पुत्र, जो पूर्व–अस्तित्ववान था (अर्थात् पहला क्रिसमस या सृष्टि से भी पहले विद्यमान), अनन्त त्रिएकता का दूसरा व्यक्ति होकर देहधारी हुआ।

Logos लोगोस यूनानी शब्द जिसका अर्थ है "शब्द, विचार, मार्गदर्शक सिद्धांत" इसी से "ओलोजी" प्रत्यय आता है। यूहन्ना के सिधांत का मूल।

Objective वस्तुनिष्ठ सिद्धांत– प्रायश्चित के सिद्धांत जो मानते हैं कि मसीह का क्रूस परमेश्वर और मानवता में वास्तविक परिवर्तन लाता है, जैसे परमेश्वर का क्रोध शांत हो गया और मानवता दोषमुक्त हो गई।

Illustrative दृष्टांतात्मक सिद्धांत– ये सिद्धांत कभी–कभी 'व्यक्तिनिष्ठ' सिद्धांतों के समान होते हैं और आधुनिक चर्चाओं में 'व्यक्तिनिष्ठ' शब्द के स्थान पर प्रयुक्त होते हैं, क्योंकि इन्हें कुछ अधिक सूक्ष्म और लचीला माना जाता है। इनका दावा है कि मसीह/क्रूस परमेश्वर के स्वभाव का कोई शाश्वत सत्य प्रकट करते हैं, और यह प्रकाशन स्वयं उद्धारकारी है।

Post-modern (संरचनावाद भी देखें) –उत्तर–आधुनिकता व्यापक रूप से यूरोपीय प्रबोधन काल (लगभग 18वीं सदी के मध्य) से लेकर 20वीं सदी के उत्तरार्ध तक की मानवीय सोच, जो प्रेक्षणों पर आधारित विज्ञान (जैसे न्यूटन के नियम) पर टिकी थी, "आधुनिक" कहलाती है। इस दृष्टिकोण का सामान्य स्वरूप "वैज्ञानिक रूप से सिद्ध" होता है अर्थात् अब भी कुछ निरपेक्ष सत्य हैं, पर वे धार्मिक या दार्शनिक नहीं बल्कि वैज्ञानिक हैं। उत्तर–आधुनिकता –यह आइंस्टीन–उत्तर विज्ञान और संरचनावादी भाषावैज्ञानिक तथा सामाजिक सिद्धांतों पर आधारित है। यह किसी भी सत्य के अस्तित्व को नकारती है। यही वह संसार है जिसमें हम रहते हैं (हालाँकि हम में से कुछ अब भी प्रबोधन/आधुनिक जगत् के बच्चे बने हुए हैं)

Propitiation प्रसन्नता/क्रोध शमन – मसीह की मृत्यु परमेश्वर पिता के क्रोध को शांत करती है, क्योंकि यह स्वीकार्य बलिदान है।

Redemption मुक्ति/खरीदकर छुड़ाना– दास–बाज़ार की भाषा, दासत्व से मूल्य चुकाकर छुड़ाना।

Representative प्रतिनिधिक सिद्धांत – ऐसे सिद्धांत जो प्रतिस्थापन की बाइबल की भाषा को बिना दंडात्मक प्रतिस्थापन के समझाते हैं। मसीह मानवता/सृष्टि का परमेश्वर के सामने प्रतिनिधित्व करते हैं। प्रायश्चित के सिद्धांत – ऐसे सिद्धांत जो बाइबल की प्रतिस्थापन (substitution) वाली भाषा को बिना दंडात्मक प्रतिस्थापन दृष्टिकोण के समझने का प्रयास करते हैं। ये इस बात पर बल देते हैं कि मसीह ने इस्राएल/मानवता/सृष्टि का परमेश्वर के सामने प्रतिनिधित्व किया। ये समकालीन जीवन से भी उदाहरण लेते हैं। उदाहरण के लिए, जर्मन धर्मशास्त्री वोल्फहार्ट पाननबर्ग सैनिक की अपने राष्ट्र/समुदाय की ओर से प्रतिनिधिक मृत्यु का उल्लेख करते हैं ।

Salvation उद्धार/चंगाई–लातीनी शब्द चंगाई से, अर्थ "चंगाई, सम्पूर्णता" और "बचाना, छुड़ाना"– दोनों ध्रुव इस शब्द में निहित हैं।

Structuralism संरचनावाद–उत्तर–आधुनिकता की आधारशिला। यह इस बात पर ज़ोर देता है कि भाषाई संकेत मनमाने होते हैं और भाषा 'मनमौजी और चंचल' है (देरिदा के अनुसार), जिसके कारण किसी भी पाठ के स्थायी अर्थ असंभव हो जाते हैं। बौद्रिलार्द ने तर्क दिया

कि आधुनिक समाज कृत्रिम संकेत–प्रणालियों में फँसा हुआ है, जो वास्तव में कुछ भी अर्थ नहीं रखते और केवल उन लोगों की मान्यताओं को बनाए रखते हैं जिन्होंने उन्हें बनाया (अक्सर दमनकारी शक्तियाँ)। इसी कारण पाठों को 'विघटित' करना और अपने विचारों को मुक्त करना आवश्यक है

Subjective व्यक्तिनिष्ठ सिद्धांत – प्रायश्चित के ऐसे सिद्धांत जो यह मानते हैं कि मसीह की मृत्यु का केवल प्रेरणादायक प्रभाव है। हमारे बाहर कोई वास्तविक परिवर्तन नहीं होता, पर हमारी आकांक्षाएँ ऊँची हो जाती हैं। क्रूस का उदाहरण मानवता में प्रेम और भक्ति को प्रेरित करता है। आजकल यह भाषा कुछ पुरानी मानी जाती है, लेकिन फिर भी उपयोगी हो सकती है।

Substitutionary प्रतिस्थापन सिद्धांत – प्रायश्चित के वे सिद्धांत जो इस बात पर ज़ोर देते हैं कि मसीह हमारे स्थान पर मरे। सामान्यतः इसे 'दंडात्मक प्रतिस्थापन' के रूप में समझा जाता है, अर्थात् मसीह ने हमारे पापों का दंड अपने ऊपर लिया और इस प्रकार परमेश्वर का न्यायसंगत क्रोध पापी मानवता के विरुद्ध शांत कर दिया। यह प्रायश्चित का एक वस्तुनिष्ठ सिद्धांत है, पर आजकल विशेषकर इसके दंडात्मक रूप को अन्यायपूर्ण प्रतीत होने के कारण आलोचना का सामना करना पड़ता है।

सर्वाधिकार सुरक्षित – इस प्रकाशन का कोई भी भाग बिना लिखित अनुमति के पुनः प्रकाशित, किसी संग्रहण प्रणाली में सुरक्षित, या किसी भी रूप में अथवा किसी भी माध्यम से (इलेक्ट्रॉनिक, यांत्रिक, फोटोकॉपी, रिकॉर्डिंग आदि) प्रेषित नहीं किया जा सकता। अनुमति केवल डर्बी, लसेस्टर और साउथवेल एवं नॉटिंघम के एंग्लिकन डायसस के प्रशिक्षण विभागों से प्राप्त की जा सकती है